ISSN 2278-1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्षः 7, अंकः 12, संख्याः 62, मई 2025, मूल्यः ₹20

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संग्रहालय

समिति के दो परिसर हैं- गांधी स्मृति और गांधी दर्शन।

गांधी स्मृति, 5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित है। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों से जुड़े दुर्लभ चित्र, जानकारियाँ और मल्टीमीडिया संग्रहालय (Museum) है। जिसमें प्रवेश निःशुल्क है।

दूसरा परिसर गांधी दर्शन राजघाट पर स्थित है। यहाँ 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' प्रदर्शनी, डोम थियेटर और राष्ट्रीय स्वच्छता केंद्र संग्रहालय (Museum) है।

दोनों परिसर के संग्रहालय प्रतिदिन प्रातः 10 से शाम 6:30 तक खुलते हैं।
(सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़ कर)

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-7, अंक: 12, संख्या-62
मई 2025

संरक्षक
विजय गोयल
उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

प्रधान सम्पादक
संजीत कुमार

सम्पादक
प्रवीण दत्त शर्मा
पंकज चौबे

परामर्श
वेदाभ्यास कुंडू
संजीत कुमार
सौरव राय

प्रबन्ध सहयोग
शुभांगी गिरधर

मूल्य	: ₹20
वार्षिक सदस्यता	: ₹200
दो साल	: ₹400
तीन साल	: ₹500

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23392796
ई-मेल : antimjangsds@gmail.com
2010gsds@gmail.com
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट,
नई दिल्ली-110002, की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण उनके अपने हैं, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली के नहीं।
समस्त मामले दिल्ली न्यायालय में ही विचाराधीन।
मुद्रक
पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092

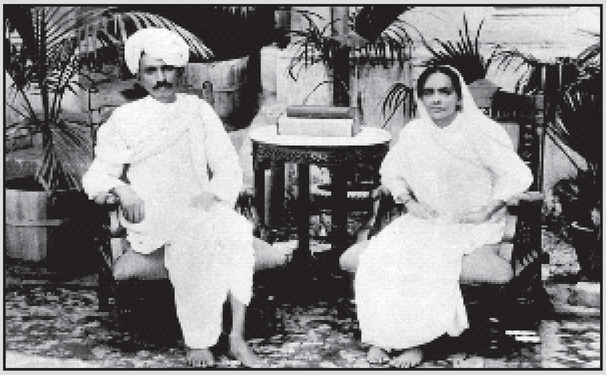

इस अंक में

धरोहर
सत्य और सौन्दर्य *-मोहनदास करमचंद गांधी* 5
भाषण
दुनिया ने देखी भारत की ताकत *-श्री नरेंद्र मोदी* 8
यात्रा वृतांत
बोधि गया *-काका कालेलकर* 11
निबंध
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है *-विद्यानिवास मिश्र* 13
व्याख्यान
पथ प्रदर्शक हैं हमारे उपनिषद *-डॉ कर्ण सिंह* 18
मजदूर दिवस पर विशेष
श्रम की भूमिका पर गांधीजी के विचार *-डॉ. वर्षा दास* 22
सामयिक
गांधीजी और औद्योगिक संबंध *-संजीत कुमार* 25
विमर्श
खोज गांधी की (नो! आई हैवन्ट डाइड येट!) *-मनोज कुमार राय* 28
'मैं स्वेच्छा से अस्पृश्य हूँ': महात्मा गांधी एवं अस्पृश्यता का प्रश्न *-सौरव कुमार राय* 36
किताब
महात्मा गांधी की माता : पुतलीबाई *- प्रवीण दत्त शर्मा* 42
कविता
कविता विकास की कविताएं 44
तारों में मुन्नी का चेहरा 47
बाल कविता
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के *-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* 48
मैं सबसे छोटी होऊँ *-सुमित्रा नंदन पंत* 49
बाल कहानी
पंचतंत्र की कहानी 50
गुल्लू की पहली गो-कार्टिंग *-रोचिका अरुण शर्मा* 52
फोटो में गांधी 54
बचपन
भरोसा *-हरीशचंद्र पांडे* 55
गांधीजी के बंदर तीन *-बाल स्वरूप राही* 57
पुष्प की अभिलाषा *- माखनलाल चतुर्वेदी* 58
गांधी क्विज-12 59
गतिविधियाँ 60

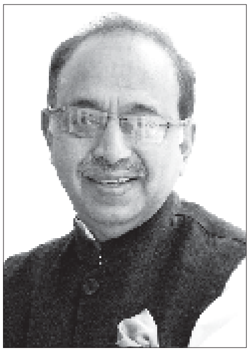

आर्थिक समानता और गरीब कल्याण

महात्मा गांधी मानते थे कि भारत में गरीबी इसलिए है, क्योंकि यहां के गांव गरीब हैं। इसलिए गांधीजी ने गांवों को ताकतवर बनाने की वकालत की थी। वे सर्वोदयी लोकतंत्र की बात करते थे। जिससे उनका तात्पर्य ऐसे लोकतंत्र से था, जिसमें गांवों को समुचित स्थान मिले। 18 जनवरी 1945 को 'हरिजन' में वे लिखते हैं–''सच्चे लोकतंत्र का संचालन केंद्र में बैठे बीस आदमियों से नहीं हो सकता। उसका संचालन नीचे से प्रत्येक गांव के लोगों को करना होगा''। गरीब कल्याण के लिए वे आर्थिक समानता की बात भी करते थे। आर्थिक समानता से उनका मतलब यह नहीं था कि सभी गरीबों के पास पांच एकड़ भूमि हो, अपितु वे चाहते थे कि सरकारी योजनाओं का लाभ गरीबों को मिले।

आज यदि हम मोदीजी के कार्य को देखें तो उनमें भी गरीब कल्याण की भावना साफ नजर आती है। गांधीजी की तरह वे भी कमजोर वर्ग को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं देने को तत्पर हैं। पिछले सालों में उनकी प्रमुख योजनाएं गरीब व्यक्ति को केंद्र में रखकर लागू की गई हैं। जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत योजना, गरीब कल्याण अन्न योजना समेत अनेक योजनाओं के जरिए आज वंचित वर्ग के जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है और गांधी के सपनों को साकार करने की दिशा में काम किया जा रहा है।

अंतिम जन के हर अंक में हम प्रयास करते हैं कि गांधी जी के जीवन के विभिन्न आयामों से पाठकों को अवगत कराएं। साथ ही समकालीन नेताओं के जीवन और विचारों को भी स्थान दें। हमारा ये प्रयास आपको कैसा लगा, कृपया अपनी प्रतिक्रियाओं से जरूर अवगत करवाएं।

विजय गोयल

आज भी प्रासंगिक हैं- बुद्ध और गांधी के विचार

महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध, दोनों मानव सभ्यता के ऐसे दीपस्तंभ हैं जिन्होंने अपने जीवन, आचरण और विचारों से न केवल भारत, बल्कि संपूर्ण विश्व को दिशा दी। दोनों ने अपने-अपने समय में सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा के माध्यम से समाज में नैतिक जागरण का कार्य किया। आज जब विश्व हिंसा, असहिष्णुता और लालच से ग्रस्त है, तब गांधी और बुद्ध के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। उनके दिखाए मार्ग पर चलकर ही हम एक शांतिपूर्ण, सहिष्णु और समतामूलक समाज की स्थापना कर सकते हैं।

गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी दोनों ही अहिंसा को जीवन का मूल स्तंभ मानते थे। बुद्ध ने कहा था, "सभी जीवों के प्रति करुणा और दया रखें। किसी को भी अपने शब्दों, कर्मों या विचारों से कष्ट न पहुँचाएँ।" उनके अनुसार, हिंसा केवल बाहरी ही नहीं होती, बल्कि मन, वचन और कर्म से भी होती है। गांधी जी ने इस विचार को और व्यापक बनाते हुए उसे सामाजिक और राजनीतिक स्तर तक पहुँचा दिया। उन्होंने कहा, "अहिंसा केवल एक नीति नहीं, बल्कि एक जीवित शक्ति है।" गांधी के नेतृत्व में भारत का स्वतंत्रता संग्राम अहिंसा पर आधारित एक अनोखा प्रयोग बन गया।

सत्य की खोज बुद्ध के जीवन का आधार थी। उन्होंने राजमहल का त्याग सत्य की खोज के लिए किया। उन्हें 'संबुद्ध' या 'जाग्रत व्यक्ति' इसीलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने सत्य का बोध किया। महात्मा गांधी ने 'सत्य' को ईश्वर का पर्याय माना। उनका प्रसिद्ध कथन है: "ईश्वर सत्य है, और सत्य ही ईश्वर है।" उन्होंने अपने जीवन और आंदोलनों में सत्याग्रह को केंद्र में रखा, जो एक ऐसा आंदोलन था जिसमें सत्य के लिए दृढ़ता और अहिंसा के मार्ग पर अडिग रहना प्रमुख था।

बुद्ध ने शांति और ध्यान के माध्यम से आत्मबोध की राह दिखाई। उन्होंने बताया कि आंतरिक शांति ही बाहरी शांति की नींव है। गांधी जी ने भी आत्मबल या 'सोल फोर्स' को बल से अधिक प्रभावशाली माना। वे मानते थे कि सच्ची शक्ति बाहुबल में नहीं, आत्मबल में होती है।

बुद्ध और गांधी दोनों की दृष्टि संकीर्ण राष्ट्रवाद से ऊपर थी। बुद्ध का धर्म सार्वभौमिक था - वह जाति, भाषा या क्षेत्र से बंधा नहीं था। गांधी जी ने भी अपने आंदोलनों में सबको साथ लेकर चलने की नीति अपनाई और धर्म, जाति, भाषा, लिंग आदि के भेदों से ऊपर उठने की प्रेरणा दी।

अंतिम जन का मई अंक आपके समक्ष है। इसमें प्रकाशित सामग्री आपको अवश्य प्रेरित करेगी। कृपया इसकी बेहतरी के लिए सुझाव अवश्य दें।

संजीत कुमार
निदेशक (प्रभारी)

आपके ख़त

''गांधी नाकार के नहीं, स्वीकार के उद्घोषक हैं!''

अंतिम जन का मार्च, 2025 का अंक पढ़ा। अंक बेहद विचारोत्तेजक एवं संग्रहणीय लगा। महिला सशक्तीकरण के बहाने विदुषी निदेशक महोदया पल्लवी प्रशांत होल्कर की संपादकीय, आधी-आबादी की वस्तु-स्थिति का पोस्टमार्टम करती दिखी तो वहीं गांव और शहरों के पारस्परिक व नैसर्गिक संबंधों पर राष्ट्रपिता गांधी का संस्मरणात्मक आलेख विशिष्ट जानकारी और दृष्टिकोण को स्थापित करता दिखा।

सचमुच यह कैसी विडम्बना है कि आजादी के 78 वसंत बाद भी हमारे मुल्क में महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, गांव-शहर मुद्दे, साम्प्रदायिक सद्भाव, अस्पृश्यता, पलायन, बेरोजगारी और ब्रेन-ड्रेन की समस्या यथावत कमोबेश बनी हुई है। आज भी महिलाएं घर-आंगन से लेकर सार्वजनिक जीवन तक में कमोबेश दोयम दर्जे के व्यवहार के शिकार हैं। अतीत में जहां पर्दे की ओट में महिलाएं नागरिक अधिकार से वंचित थीं तो आज भी खुले समाज में वह पुरूष प्रधान समाज के दुर्भावनाओं की बलि चढ़ रही हैं।

नगर का महानगर में बदलाव अच्छी बात है। नगरीकरण की प्रक्रिया चलनी चाहिए लेकिन गांव के विनाश पर नहीं, कारण कि एक के शर्त पर दूसरे का विकास संतुलित विकास नहीं कहा जाएगा। गौरतलब है कि गांधी स्वयं लिखते हैं कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। गांव आपसी सहयोग, आत्मनिर्भरता, प्यार और सद्भाव का केन्द्र है जो स्वयंपूर्णता का भाव रखती है। यहां स्वार्थ और अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं है। यह गांव है जो हमारी भाषा-बोली, आदर-सत्कार और संस्कृति को संजोये हुए हैं, सो यहां नगरीय या सांस्कृतिक प्रदूषण न फैले।

हालांकि मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश के गांवों को, सांसदों द्वारा "गोद लेने" की नियमावली बनी थी, काम भी शुरू हुआ लेकिन अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाया।

मानें या न मानें आज देश को गांधीवादी दृष्टिकोण और विचारधारा की सख्त जरूरत है जहां विकास के मायने "डेवलपमेंट विद् ह्यूमन फेस" हो न कि कंक्रीट की अट्टालिकाओं और चमचमाती सड़कों और गाड़ियों के बीच भिक्षावृत्ति करते अर्बन पाकेट-स्लम के बच्चे और महिलाएं दिखें। जहां गांव की सांस्कृतिक आबोहवा से गांव और शहर दोनों गुलजार हो। हालांकि गांधी के इस विचार को कई नगरीय समाजशास्त्रियों ने विरोधाभासपूर्ण और अनुपयोगी माना है लेकिन हकीकत तो है कि गांधी सर्वसमावेशिकता के पैरोकार रहें हैं। आधुनिकता और पश्चिमीकरण की वकालत करने वाले चिंतकों को देर-सबेर यह मानना ही पड़ेगा कि गांधी नकार के नहीं, स्वीकार के उद्घोषक हैं।

डॉ. हर्षवर्धन कुमार
(राज्य परियोजना समन्वयक)
सृष्टि रूपा भवन
सरस्वती लेन, पूर्वी लोहानीपुर
कदमकुआं, पटना-8000003, बिहार

आप भी पत्र लिखें। सर्वश्रेष्ठ पत्र को पुरस्कृत कर, उपहार दिया जाएगा।

सत्य और सौन्दर्य

मोहनदास करमचंद गांधी

चीजों के दो पहलू हैं – बाहरी और आंतरिक... बाहरी का कोई मतलब नहीं है, सिवाय इसके कि वह आंतरिक की मदद करे। इस प्रकार सभी सच्ची कलाएँ आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। बाहरी रूपों का मूल्य केवल तभी है जब वे मनुष्य की आंतरिक आत्मा की अभिव्यक्ति हों।

मैं जानता हूं कि कई लोग स्वयं को कलाकार कहते हैं, और इस रूप में पहचाने भी जाते हैं, फिर भी उनके कार्यों में आत्मा की ऊर्ध्वगामी प्रेरणा और अशांति का कोई चिह्न नहीं होता।

सभी सच्ची कला को आत्मा को उसके आंतरिक स्व को समझने में मदद करनी चाहिए। मेरे मामले में, मुझे लगता है कि मैं अपनी आत्मा की प्राप्ति में बाहरी रूपों के बिना पूरी तरह से काम कर सकता हूँ। इसलिए, मैं दावा कर सकता हूँ कि मेरे जीवन में वास्तव में कुशल कला है, हालाँकि आप मेरे बारे में वह नहीं देख सकते हैं जिसे आप कला के काम कहते हैं।

मेरे कमरे की दीवारें खाली हो सकती हैं; और मैं छत के बिना भी रह सकता हूँ, ताकि मैं ऊपर फैले तारों वाले आकाश को देख सकूँ जो अंतहीन विस्तार में फैला हुआ है। मनुष्य की कौन सी सचेत कला मुझे वह मनोरम दृश्य दिखा सकती है जो मेरे सामने खुलता है, जब मैं ऊपर आकाश को देखता हूँ जिसमें सभी चमकते सितारे हैं?

हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं कला के उत्पादनों के मूल्य को स्वीकार करने से इनकार करता हूँ, जिन्हें आम तौर पर इस रूप में स्वीकार किया जाता है, बल्कि केवल इतना है कि मैं व्यक्तिगत रूप से महसूस करता हूँ कि प्रकृति में सौंदर्य के शाश्वत प्रतीकों की तुलना में ये कितने अपर्याप्त हैं। मनुष्य की कला के इन उत्पादनों का मूल्य केवल इस हद तक है कि वे आत्मा को आत्म-साक्षात्कार की ओर आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

सभी सच्ची कला को आत्मा को उसके आंतरिक स्व को समझने में मदद करनी चाहिए। मेरे मामले में, मुझे लगता है कि मैं अपनी आत्मा की प्राप्ति में बाहरी रूपों के बिना पूरी तरह से काम कर सकता हूँ। इसलिए, मैं दावा कर सकता हूँ कि मेरे जीवन में वास्तव में कुशल कला है, हालाँकि आप मेरे बारे में वह नहीं देख सकते हैं जिसे आप कला के काम कहते हैं।

सत्य पहले

सत्य की खोज सबसे पहले की जानी चाहिए, और फिर सौंदर्य और अच्छाई आपके साथ जुड़ जाएगी। मेरे विचार से, यीशु एक महान कलाकार थे क्योंकि उन्होंने सत्य को देखा और व्यक्त किया; और मुहम्मद भी, कुरान, किसी भी मामले में, सभी अरबी साहित्य में सबसे उत्तम रचना है, ऐसा विद्वानों का कहना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों ने पहले सत्य के लिए प्रयास किया था, इसलिए अभिव्यक्ति की कृपा स्वाभाविक रूप से आई और फिर भी न तो यीशु और न ही मुहम्मद ने कला पर लिखा। यही वह सत्य और सौंदर्य है जिसके लिए मैं तरसता हूँ, जिसके लिए जीता हूँ और जिसके लिए मर सकता हूँ।

लाखों लोगों के लिए कला

यहाँ भी, अन्य जगहों की तरह, मुझे लाखों लोगों के बारे में सोचना चाहिए। और लाखों लोगों को हम वह प्रशिक्षण नहीं दे सकते जिससे वे सौंदर्य की अनुभूति इस तरह से प्राप्त कर सकें कि उसमें सत्य को देख सकें। पहले उन्हें सत्य दिखाओ और उसके बाद वे सौंदर्य को देखेंगे... मेरे विचार से जो कुछ भी उन भूखे लाखों लोगों के लिए उपयोगी हो सकता है, वह सुंदर है। आइए आज हम सबसे पहले जीवन की महत्वपूर्ण चीजें दें और जीवन की सभी कृपाएँ और आभूषण उसके बाद आएंगे। मैं ऐसी कला और साहित्य चाहता हूँ जो लाखों लोगों से बात कर सके।

कला को कला होने के लिए शांति प्रदान करनी चाहिए

आखिरकार, कला को केवल बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए डिजाइन की गई निर्जीव शक्ति-चालित मशीनों के माध्यम से नहीं, बल्कि केवल पुरुषों और महिलाओं के हाथों के नाजुक जीवंत स्पर्श के माध्यम से ही व्यक्त किया जा सकता है।

आंतरिक पवित्रता

सच्ची कला सिर्फ रूप पर ही ध्यान नहीं देती, बल्कि उसके पीछे छिपी चीजों पर भी ध्यान देती है। एक कला ऐसी होती है जो मारती है और एक कला ऐसी होती है जो जीवन देती है... सच्ची कला को अपने लेखकों की खुशी, संतुष्टि और पवित्रता का सबूत होना चाहिए।

सच्ची सुन्दरता अंततः हृदय की पवित्रता में ही निहित है। मुझे संगीत और अन्य सभी कलाएँ पसंद हैं, लेकिन मैं उन्हें उतना महत्व नहीं देता जितना आम तौर पर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, मैं उन गतिविधियों के महत्व को नहीं पहचान सकता जिन्हें समझने के लिए तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

जीवन सभी कलाओं से महान है। मैं तो इससे भी आगे जाकर यह घोषणा करूँगा कि जिस व्यक्ति का जीवन पूर्णता के सबसे निकट है, वही सबसे महान कलाकार है; क्योंकि एक महान जीवन के सुनिश्चित आधार और ढांचे के बिना कला क्या है?

हमने किसी तरह खुद को इस विश्वास के आदी बना लिया है कि कला निजी जीवन की पवित्रता से स्वतंत्र है। मैं अपने पास मौजूद सभी अनुभवों के आधार पर कह सकता हूँ कि इससे ज्यादा झूठ कुछ भी नहीं हो सकता। चूँकि मैं अपने सांसारिक जीवन के अंत के करीब हूँ, मैं कह सकता हूँ कि जीवन की पवित्रता, सर्वोच्च और सच्ची कला है। सुसंस्कृत आवाज से अच्छा संगीत बनाने की कला कई लोगों द्वारा हासिल की जा सकती है, लेकिन शुद्ध जीवन की सद्भाव से उस संगीत को बनाने की कला बहुत कम ही हासिल की जाती है।

सत्य में सौंदर्य

मैं सत्य में या सत्य के माध्यम से सौंदर्य देखता हूँ और पाता हूँ। सभी सत्य, न केवल सच्चे विचार, बल्कि सच्चे चेहरे, सच्चे चित्र या गीत अत्यधिक सुंदर होते हैं। लोग आम तौर पर सत्य में सौंदर्य को देखने में विफल रहते हैं, साधारण मनुष्य उससे दूर भागता है और उसमें मौजूद सौंदर्य के प्रति अंधा हो जाता है। जब भी मनुष्य सत्य में सौंदर्य देखना शुरू करता है, तब सच्ची कला उत्पन्न होती है। एक सच्चे कलाकार के लिए सिर्फ वही चेहरा सुंदर होता है जो अपने बाहरी रूप से बिलकुल अलग, आत्मा के भीतर के सत्य से चमकता हो। सत्य के अलावा कोई सौंदर्य नहीं है। दूसरी ओर, सत्य खुद को ऐसे रूपों में प्रकट कर

सकता है, जो बाहरी रूप से बिल्कुल भी सुंदर नहीं हो सकते। हमें बताया जाता है कि सुकरात अपने समय के सबसे सत्यवादी व्यक्ति थे, और फिर भी उनके चेहरे के भाव ग्रीस में सबसे बदसूरत कहे जाते हैं। मेरे ख़याल से वे सुंदर थे, क्योंकि उनका पूरा जीवन सत्य की खोज में बीता था, और आपको याद होगा कि उनके बाहरी रूप ने फिदियास को उनके भीतर के सत्य की सुंदरता की सराहना करने से नहीं रोका, हालाँकि एक कलाकार के रूप में वे बाहरी रूपों में भी सुंदरता देखने के आदी थे।

सत्य और असत्य अक्सर साथ-साथ रहते हैं; अच्छाई और बुराई अक्सर साथ-साथ पाई जाती है। एक कलाकार में भी अक्सर चीजों के बारे में सही धारणा और गलत धारणा एक साथ रहती है। सही धारणा के काम करने पर ही वास्तव में सुंदर रचनाएँ बनती हैं। अगर ये स्मारक जीवन में दुर्लभ हैं, तो कला में भी दुर्लभ हैं।

ये सुंदरियाँ ('सूर्यास्त या रात में तारों के बीच चमकता हुआ अर्धचंद्र') सत्य हैं, क्योंकि वे मुझे उनके पीछे मौजूद सृष्टिकर्ता के बारे में सोचने पर मजबूर करती हैं। सृष्टि के केंद्र में मौजूद सत्य के बिना ये और कैसे सुंदर हो सकती हैं? जब मैं सूर्यास्त के आश्चर्य या चंद्रमा की सुंदरता की प्रशंसा करता हूँ, तो मेरी आत्मा सृष्टिकर्ता की पूजा में विस्तृत हो जाती है। मैं इन सभी रचनाओं में उसे और उसकी दया को देखने की कोशिश करता हूँ। लेकिन सूर्यास्त और सूर्योदय भी केवल बाधाएँ ही होंगी यदि वे मुझे यह सोचने में मदद न करें कि आत्मा एक भ्रम और एक जाल है; यहाँ तक कि शरीर की तरह, जो अक्सर आपको मोक्ष के मार्ग में बाधा डालता है।

आप सब्जियों में रंगों की खूबसूरती क्यों नहीं देख पाते? और फिर, धब्बे रहित आसमान में भी खूबसूरती है। लेकिन नहीं, आप इंद्रधनुष के रंग चाहते हैं, जो कि एक मात्र ऑप्टिकल भ्रम है। हमें यह विश्वास करना सिखाया गया है कि जो सुंदर है वह जरूरी नहीं कि उपयोगी हो और जो उपयोगी है वह सुंदर नहीं हो सकता। मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि जो उपयोगी है वह सुंदर भी हो सकता है।

दुनिया ने देखी भारत की ताकत

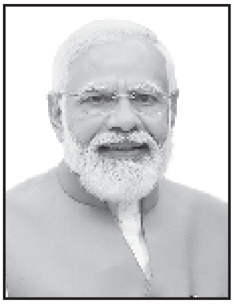

श्री नरेंद्र मोदी

भारत माता की जय!

भारत माता की जय!

भारत माता की जय!

इस जयघोष की ताकत अभी-अभी दुनिया ने देखी है। भारत माता की जय, ये सिर्फ उद्घोष नहीं है, ये देश के हर उस सैनिक की शपथ है, जो मां भारती की मान-मर्यादा के लिए जान की बाजी लगा देता है। ये देश के हर उस नागरिक की आवाज है, जो देश के लिए जीना चाहता है, कुछ कर गुजरना चाहता है। भारत माता की जय, मैदान में भी गूंजती है और मिशन में भी। जब भारत के सैनिक मां भारती की जय बोलते हैं, तो दुश्मन के कलेजे काँप जाते हैं। जब हमारे ड्रोन्स, दुश्मन के किले की दीवारों को ढहा देते हैं, जब हमारी मिसाइलें सनसनाती हुई निशाने पर पहुँचती हैं, तो दुश्मन को सुनाई देता है- भारत माता की जय! जब रात के अंधेरे में भी, जब हम सूरज उगा देते हैं, तो दुश्मन को दिखाई देता है- भारत माता की जय! जब हमारी फौजें, न्यूक्लियर ब्लैकमेल की धमकी की हवा निकाल देती हैं, तो आकाश से पाताल तक एक ही बात गूंजती है- भारत माता की जय!

साथियों, वाकई, आप सभी ने कोटि-कोटि भारतीयों का सीना चौड़ा कर दिया है, हर भारतीय का माथा गर्व से ऊंचा कर दिया है। आपने इतिहास रच दिया है। और मैं आज सुबह-सुबह आपके बीच आया हूं, आपके दर्शन करने के लिए। जब वीरों के पैर धरती पर पड़ते हैं, तो धरती धन्य हो जाती है, जब वीरों के दर्शन का अवसर मिलता है, तो जीवन धन्य हो जाता है। और इसलिए मैं आज सुबह-सुबह ही आपके दर्शन करने के लिए यहां पहुंचा हूं। आज से अनेक दशक बाद भी जब भारत के इस पराक्रम की चर्चा होगी, तो उसके सबसे प्रमुख अध्याय आप और आपके साथी होंगे। आप सभी वर्तमान के साथ ही देश की आने वाली पीढ़ियों की, और उनके लिए भी नई प्रेरणा बन गए हैं। मैं वीरों की इस धरती से आज एयरफोर्स, नेवी और आर्मी के सभी जांबाजों, BSF के अपने शूरवीरों को सैल्यूट करता हूं। आपके पराक्रम की वजह से आज ऑपरेशन सिंदूर की गूंज हर कोने में सुनाई दे रही है। इस पूरे ऑपरेशन के दौरान हर भारतीय

जब भारत के सैनिक मां भारती की जय बोलते हैं, तो दुश्मन के कलेजे काँप जाते हैं। जब हमारे ड्रोन्स, दुश्मन के किले की दीवारों को ढहा देते हैं, जब हमारी मिसाइलें सनसनाती हुई निशाने पर पहुँचती हैं, तो दुश्मन को सुनाई देता है- भारत माता की जय! जब रात के अंधेरे में भी, जब हम सूरज उगा देते हैं, तो दुश्मन को दिखाई देता है...।

आपके साथ खड़ा रहा, हर भारतीय की प्रार्थना आप सभी के साथ रही। आज हर देशवासी, अपने सैनिकों, उनके परिवारों के प्रति कृतज्ञ है, उनका ऋणी है।

साथियों, ऑपरेशन सिंदूर कोई सामान्य सैन्य अभियान नहीं है। ये भारत की नीति, नीयत और निर्णायक क्षमता की त्रिवेणी है। भारत बुद्ध की भी धरती है और गुरु गोबिंद सिंह जी की भी धरती है। गुरू गोबिंद सिंह जी ने कहा था- सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊं।" अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए शस्त्र उठाना, ये हमारी परंपरा है। इसलिए जब हमारी बहनों, बेटियों का सिंदूर छीना गया, तो हमने आंतकियों के फन को उनके घर में घुसके कुचल दिया। वो कायरों की तरह छिपकर आए थे, लेकिन वो ये भूल गए, उन्होंने जिसे ललकारा है, वो हिन्द की सेना है। आपने उन्हें सामने से हमला करके मारा, आपने आतंक के तमाम बड़े अड्डों को मिट्टी में मिला दिया, 9 आतंकी ठिकाने बर्बाद हुए, 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई, आतंक के आकाओं को अब समझ आ गया है, भारत की ओर नजर उठाने का एक ही अंजाम होगा- तबाही! भारत में निर्दोष लोगों का खून बहाने का एक ही अंजाम होगा- विनाश और महाविनाश! जिस पाकिस्तानी सेना के भरोसे ये आतंकी बैठे थे, भारत की सेना, भारत की एयरफोर्स और भारत की नेवी ने, उस पाकिस्तानी सेना को भी धूल चटा दी है। आपने पाकिस्तानी फौज को भी बता दिया है, पाकिस्तान में ऐसा कोई ठिकाना नहीं है, जहां बैठकर आतंकवादी चैन की सांस ले सके। हम घर में घुसकर मारेंगे और बचने का एक मौका तक नहीं देंगे। और हमारे ड्रोन्स, हमारी मिसाइलें, उनके बारे में तो सोचकर पाकिस्तान को कई दिन तक नींद नहीं आएगी। कौशल दिखलाया चालों में, उड़ गया भयानक भालों में। निर्भीक गया वह ढालों में, सरपट दौड़ा करवालों में। ये पंक्तियां महाराणा प्रताप के प्रसिद्ध घोड़े चेतक पर लिखी गई हैं, लेकिन ये पंक्तियां आज के आधुनिक भारतीय हथियारों पर भी फिट बैठती हैं।

मेरे वीर साथियों, ऑपरेशन सिंदूर से आपने देश का आत्मबल बढ़ाया है, देश को एकता के सूत्र में बाँधा है, और आपने भारत की सीमाओं की रक्षा की है, भारत के स्वाभिमान को नई ऊंचाई दी है।

साथियों, आपने वो किया, जो अभूतपूर्व है, अकल्पनीय है, अद्‌भुत है। हमारी एयरफोर्स ने पाकिस्तान में इतना डीप, आतंक के अड्डों को टारगेट किया। सिर्फ 20-25 मिनट के भीतर, सीमापार लक्ष्यों को भेदना, बिल्कुल पिन पॉइंट टारगेट्स को हिट करना, ये सिर्फ एक मॉडर्न टेक्नोलॉजी से लैस, प्रोफेशनल फोर्स ही कर सकती है। आपकी स्पीड और प्रिसीजन, इस लेवल की थी, कि दुश्मन हक्का-बक्का रह गया। उसको पता ही नहीं चला कि कब उसका सीना छलनी हो गया।

साथियों, हमारा लक्ष्य, पाकिस्तान के अंदर terror हेडक्वार्टर्स को हिट करने का था, आतंकियों को हिट करने का था। लेकिन पाकिस्तान ने अपने यात्री विमानों को सामने करके जो साजिश रची, मैं कल्पना कर सकता हूं, वो पल कितना कठिन होगा, जब सिविलियन एयरक्राफ्ट दिख रहा है, और मुझे गर्व है आपने बहुत सावधानी से, बहुत सतर्कता से सिविलियन एयरक्राफ्ट को नुकसान किए बिना, तबाह करके दिखाया, उसका जवाब दे दिया आपने। मैं गर्व के साथ कह सकता हूं, कि आप सभी अपने लक्ष्यों पर बिल्कुल खरे उतरे हैं। पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों और उनके एयरबेस ही तबाह नहीं हुए, बल्कि उनके नापाक इरादे और उनके दुस्साहस, दोनों की हार हुई है।

साथियों, ऑपरेशन सिंदूर से बौखलाए दुश्मन ने इस एयरबेस के साथ-साथ, हमारे अनेक एयरबेस पर हमला करने की कई बार कोशिश की। बार-बार उसने हमें टारगेट किया, लेकिन पाक के नाकाम, नापाक इरादे हर बार नाकाम हो गए। पाकिस्तान के ड्रोन, उसके UAV, पाकिस्तान के एयरक्राफ्ट और उसकी मिसाइलें, हमारे सशक्त एयर डिफेंस के सामने सब के सब ढेर हो गए। मैं देश के सभी एयरबेस से जुड़ी लीडरशिप की, भारतीय वायुसेना के हर एयर-वॉरियर की हृदय से सराहना करता हूं, आपने वाकई बहुत शानदार काम किया है।

साथियों, आतंक के विरुद्ध भारत की लक्ष्मण रेखा अब एकदम स्पष्ट है। अब फिर कोई टैरर अटैक हुआ, तो

भारत जवाब देगा, पक्का जवाब देगा। ये हमने सर्जिकल स्ट्राइक के समय देखा है, एयर स्ट्राइक के समय देखा है, और अब तो ऑपरेशन सिंदूर, भारत का न्यू नॉर्मल है। और जैसा मैंने कल भी कहा, भारत ने अब तीन सूत्र तय कर दिए हैं, पहला– भारत पर आतंकी हमला हुआ तो हम अपने तरीके से, अपनी शर्तों पर, अपने समय पर जवाब देंगे। दूसरा– कोई भी न्यूक्लियर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा। तीसरा– हम आतंक की सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग–अलग नहीं देखेंगे। दुनिया भी भारत के इस नए रूप को, इस नई व्यवस्था को समझते हुए ही आगे बढ़ रही है।

साथियों, ऑपरेशन सिंदूर का एक–एक क्षण भारत की सेनाओं के सामर्थ्य की गवाही देता है। इस दौरान हमारी सेनाओं का को–ऑर्डिनेशन, वाकई मैं कहूंगा, शानदार था। आर्मी हो, नेवी हो या एयरफोर्स, सबका तालमेल बहुत जबरदस्त था। नेवी ने समुद्र पर अपना दबदबा बनाया। सेना ने बॉर्डर पर मजबूती दी। और, भारतीय वायुसेना ने अटैक भी किया और डिफेंड भी किया। BSF और दूसरे बलों ने भी अद्‌भुत क्षमताओं का प्रदर्शन किया है। Integrated air and land combat systems ने शानदार काम किया है। और यही तो है, jointness, ये अब भारतीय सेनाओं के सामर्थ्य की एक मजबूत पहचान बन चुकी है।

साथियों, ऑपरेशन सिंदूर में मैनपावर के साथ ही मशीन का को–ऑर्डिनेशन भी अद्‌भुत रहा है। भारत के पारंपरिक एयर डिफेंस सिस्टम हों, जिन्होंने अनेक लड़ाइयां देखी हैं, या फिर आकाश जैसे हमारे मेड इन इंडिया प्लेटफॉर्म हों, इनको S–400 जैसे आधुनिक और सशक्त डिफेंस सिस्टम ने अभूतपूर्व मजबूती दी है। एक मजबूत सुरक्षा कवच भारत की पहचान बन चुकी है। पाकिस्तान की लाख कोशिश के बाद भी, हमारे एयरबेस हों, या फिर हमारे दूसरे डिफेंस इंफ्रास्ट्रक्चर, इन पर आंच तक नहीं आई। और इसका श्रेय आप सभी को जाता है, और मुझे गर्व है आप सब पर, बॉर्डर पर तैनात हर सैनिक को जाता है, इस ऑपरेशन से जुड़े हर व्यक्ति को इसका श्रेय जाता है।

साथियों, आज हमारे पास नई और cutting edge technology का ऐसा सामर्थ्य है, जिसका पाकिस्तान मुकाबला नहीं कर सकता। बीते दशक में एयरफोर्स सहित, हमारी सभी सेनाओं के पास, दुनिया की श्रेष्ठ टेक्नोलॉजी पहुंची है। लेकिन हम सब जानते हैं, नई टेक्नोलॉजी के साथ चुनौतियां भी उतनी ही बड़ी होती हैं। Complicated और sophisticated systems को मैंटेन करना, उन्हें efficiency के साथ ऑपरेट करना, एक बहुत बड़ी स्किल है। आपने tech को tactics से जोड़कर दिखा दिया है। आपने सिद्ध कर दिया है कि आप इस गेम में, दुनिया में बेहतरीन हैं। भारत की वायुसेना अब सिर्फ हथियारों से ही नहीं, डेटा और ड्रोन से भी दुश्मन को छकाने में माहिर हो गई है।

साथियों, पाकिस्तान की गुहार के बाद भारत ने सिर्फ अपनी सैन्य कार्रवाई को स्थगित किया है। अगर, पाकिस्तान ने फिर से आतंकी गतिविधि या सैन्य दुस्साहस दिखाया, तो हम उसका मुंहतोड़ जवाब देंगे। ये जवाब, अपनी शर्तो पर, अपने तरीके से देंगे। और इस निर्णय की आधारशिला, इसके पीछे छिपा विश्वास, आप सबका धैर्य, शौर्य, साहस और सजगता है। आपको ये हौसला, ये जुनून, ये जज्बा, ऐसे ही बरकरार रखना है। हमें लगातार मुस्तैद रहना है, हमें तैयार रहना है। हमें दुश्मन को याद दिलाते रहना है, ये नया भारत है। ये भारत शांति चाहता है, लेकिन, अगर मानवता पर हमला होता है, तो ये भारत युद्ध के मोर्चे पर दुश्मन को मिट्टी में मिलाना भी अच्छी तरह जानता है। इसी संकल्प के साथ, आइए एक बार फिर बोलें–

भारत माता की जय। भारत माता की जय।
भारत माता की जय।
वंदे मातरम। वंदे मातरम।
वंदे मातरम। वंदे मातरम।
वंदे मातरम। वंदे मातरम।
वंदे मातरम। वंदे मातरम।
वंदे मातरम।
बहुत–बहुत धन्यवाद।

(आदमपुर एयरबेस पर वायु सेना के योद्धाओं और सैनिकों के साथ प्रधानमंत्री की बातचीत)

बोधि गया

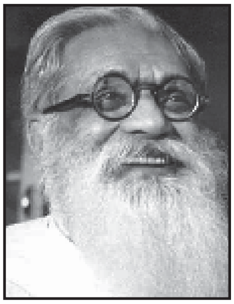

काका कालेलकर

बोधिगया कोई ऐसा-वैसा तीर्थ नहीं है। बोधिगया का नाम सुनते ही माथा भक्ति से झुक जाता है। पुराने जमाने में जिस स्थान को 'उस्वेला' कहते थे। आज से ढाई हजार वर्ष पहले नेरंजरा नदी के तीर पर इस वन में एक पीपल के पेड़ के नीचे एक युवक बैठा था। उसका शरीर सूखकर काँटा हो गया था। दोनों आँखें दो आलोकि समान गहरी हो गई थीं। परंतु उनसे दया, तप और तेज का अमृत टपकता था। छाती की एक-एक पसली गिनी जा सकती थी। दाढ़ी, मूँछ और बाल बढ़े हुए थे। लंबे-लंबे नख दीर्घ उपवास के कारण सफेद पड़ गए थे। बाहर से वह युवक विलकुल शांत दिखाई देता था। परंतु असके अभ्यंतर में महायुद्ध चल रहा था। भारतीय युद्ध तो दिन डूबते ही बंद हो जाता था, पर इसका युद्ध अहोरात्र चलता था। भारतीय युद्ध अठारह दिन में समाप्त हो गया। इसका युद्ध तो अठारह दिन बाद रंग लाया। यह युद्ध किसी व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, मनुष्य के सनातन शत्रु मार (काम) के विरुद्ध था। जिस युद्ध में मनुष्य-जाति के हित के लिए लड़ने वाला वह एकाकी वीर दृढ़ निश्चय करके बैठा था। मनुष्य-जाति का दुःख अब मुझ से देखा नहीं जाता। क्या मनुष्य अनंत काल तक इस तरह दुःख सहन के लिए ही पैदा किया गया है? इस दुःख की दवा कहीं न कहीं तो होनी ही चाहिए। अगर हो, तो इस जीवन की इससे अधिक सार्थकता और क्या हो सकती है, कि यह उस औषधि की शोध में बिताया जाए? और, अगर उस औषधि का मिलना ही असंभव हो, तो फिर इस जीने में ही क्या धरा है?

वहाँ वह नौजवान ही नहीं बैठा था, बल्कि भारत की सनातन श्रद्धा सजीव होकर बैठी थी। नवयुवकों के कुलगुरु, आस्तिकता के सागर, निर्भयता की मूर्ति, भगवान् नचिकेता का वह अवतार था। अक्षय्य धाम माँगने वाले राजपुत्र ध्रुव की परंपरा का वह अनुयाई था; कारण उसकी निष्ठा भी उतनी ही ध्रुव थी। युवक ने यह प्रण कर लिया था कि चाहे इसी आसनपर शरीर सूखकर काठ हो जाए, हाड, माँस और चमड़ी हवा में मिल जाएँ, परंतु जबतक इस भवरोग की पीड़ा का नाशक बोधि (ज्ञान) नहीं

बोधिगया कोई ऐसा-वैसा तीर्थ नहीं है। बोधिगया का नाम सुनते ही माथा भक्ति से झुक जाता है। पुराने जमाने में जिस स्थान को 'उस्वेला' कहते थे। आज से ढाई हजार वर्ष पहले नेरंजरा नदी के तीर पर इस वन में एक पीपल के पेड़ के नीचे एक युवक बैठा था। उसका शरीर सूखकर काँटा हो गया था। दोनों आँखें दो आलोकि समान गहरी हो गई थीं। परंतु उनसे दया, तप और तेज का अमृत टपकता था। छाती की एक-एक पसली गिनी जा सकती थी।

मिलेगा, तबतक यह शरीर यहाँ से टस-से-मस न होगा।

आजतक ऐसा एक भी उदाहरण देखने में नहीं आया, जिसमें सत्य सकल्य विफल हुआ हो। युवक को संतोष हुआ। सिद्धार्थ का नाम सार्थक हुआ। राजपुत्र गौतम, गौतम के बदले अब बुद्ध हो गया। उसी क्षण एक श्रद्धावान साध्वी थाली में पायस (खीर) लेकर वहाँ आई, और उसने वह वरान्न उस वन-देव को अर्पण किया।

यही स्थान बोधिगया है। जिस पुरातन अश्वत्थ-वृक्ष के नीचे भगवान् बुद्ध ने यह अंतिम साधना की, उसके सामने आज एक भव्य मंदिर खड़ा है। बगल में चक्रमण१ का स्थान है। आसपास प्राचीन ऋषियों के समान बड़े-बड़े वृक्ष हैं। इन वृक्षों ने कितनी ऋतुएँ सही होंगी, कितने प्राणियों की सहायता की होगी और कितने साधकों की श्रद्धा-भक्ति के ये साक्षी रहे होंगे!

हम पहले एक पेड़ के नीचे बैठे। कुओं से पानी निकालकर हाथ पैर धोए। पानी पिया। फिर प्रसन्न अंत करण से मंदिर में दर्शन करने गए। मंदिर के भीतर बुद्ध भगवान की भव्य मूर्ति थी। उन्हें साष्टांग दंडवत प्रणाम कर हम मंदिर पर चढ़े और गुंबद के आस-पास घूमे। कारीगरी में भव्यता है, लेकिन मादेव या नवीनता नहीं। नीचे उतर कर मंदिर की परिक्रमा की। ज्यूँ-ज्यूँ मैं परिक्रमा करता था, त्यूँ-त्यूँ मेरा भाव बदलता था। सारा जीवन दृष्टि के सामने खड़ा हो गया। और तुरंत दृष्टि शून्य हो गई। पानी में तैरने वाला तैराक डुबकी लगाकर जब गहरा और गहरा पैठता जाता है, तब जिस प्रकार निर्भय होते हुए भी वह भयभीत-सा हो जाता है, कुछ वैसी ही इस क्षण मेरी स्थिति हुई। जीवन के पृष्ठभाग (सतह) पर तो मैंने खूब विचरण किया था। खूब तैरा था। परंतु इस बार मैं गहराई में उतरा। ऐसी स्थिति पहले एक ही बार ध्यान में हुई थी। परंतु इसकी तुलना में वह स्पर्शमात्र थी। मेरी परिक्रमाएँ पूरी होने पर मैं पिछवाड़े के अश्वत्थको वंदन करने गया। घर का त्यागकर मैं हिमालय की ओर जा रहा था। भविष्य मेरे सामने अज्ञात था। मैंने अपनी नाव की सारी रस्सियाँ काट डाली थीं। सारी पतवार चढ़ा दी थीं। मेरी नौका फिरसे अपने पुराने बंदरगाह में लौटेगी, यह धारणा उस समय नहीं थी। उस समय की मनोवृत्तिका वर्णन कैसे हो सकता है? मैं बाहर से शांत था। लेकिन भीतर मानो ज्वालामुखी धधक रहा था। मुझे यह भान था कि मैं कोई त्याग कर रहा हूँ। मैं जानता था कि यह भान आध्यात्मिक उन्नत्ति में बाधक होता है। परंतु फिर भी, वह मिटता नहीं था। इतने में अंदर से एक आवाज आई त्याग करना सहज है। लेकिन किए हुए त्याग के योग्य बनने में ही पुरुषार्थ है। अहंकार के लिए इतनी फटकार बस थी। मैं उठा और पास वाले तालाब के किनारे जा बैठा।

तालाब में असंख्य कमल खिले थे। लेकिन उनकी तरफ मेरा चित्त-हमेशा का कला-रसिक चित्त-आकर्षित नहीं हुआ। वहाँ से उठकर पास की एक गढ़ी को देखने चला गया। उसमें कभी साधु रहते थे। वह किसी महंत के अखाड़े-जैसी दीख पड़ी। लेकिन उसके विषय में पूछ-ताछ करने का मन न हुआ। मैं खूब घूमा, हिमालय में रहकर साधना की, और समाधान प्राप्त किया; परंतु बोधिगया का उस दिन का अनुभव कुछ और ही था।

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

विद्यानिवास मिश्र

महीनों से मन बेहद-बेहद उदास है। उदासी की कोई खास वजह नहीं, कुछ तबीयत ढीली, कुछ आसपास के तनाव और कुछ उनसे टूटने का डर, खुले आकाश के नीचे भी खुलकर साँस लेने की जगह की कमी, जिस काम में लगकर मुक्ति पाना चाहता हूँ, उस काम में हजार बाधाएँ; कुल ले-देकर उदासी के लिए इतनी बड़ी चीज नहीं बनती। फिर भी रात-रात नींद नहीं आती। दिन ऐसे बीतते हैं, जैसे भूतों के सपनों की एक रील पर दूसरी रील चढ़ा दी गई हो और भूतों की आकृतियाँ और डरावनी हो गई हों। इसलिए कभी-कभी तो बड़ी-से-बड़ी परेशानी करने वाली बात हो जाती है और कुछ भी परेशानी नहीं होती, उल्टे ऐसा लगता है, जो हुआ, एक सहज क्रम में हुआ; न होना ही कुछ अटपटा होता और कभी-कभी बहुत मामूली-सी बात भी भयंकर चिंता का कारण बन जाती है।

अभी दो-तीन रात पहले मेरे एक साथी संगीत का कार्यक्रम सुनने के लिए नौ बजे रात गए, साथ में जाने के लिए मेरे एक चिरंजीव ने और मेरी एक मेहमान, महानगरीय वातावरण में पली कन्या ने अनुमति माँगी। शहरों की आजकल की असुरक्षित स्थिति का ध्यान करके इन दोनों को जाने तो नहीं देना चाहता था, पर लड़कों का मन भी तो रखना होता है, कह दिया, एक-डेढ़ घंटे सुनकर चले आना।

रात के बारह बजे। लोग नहीं लौटे। गृहिणी बहुत उद्विग्न हुई, झल्लायीं; साथ में गए मित्र पर नाराज होने के लिए संकल्प बोलने लगीं। इतने में जोर की बारिश आ गई। छत से बिस्तर समेटकर कमरे में आया। गृहिणी को समझाया, बारिश थमेगी, आ जाएँगे, संगीत में मन लग जाता है, तो उठने की तबीयत नहीं होती, तुम सोओ, ऐसे

महीनों से मन बेहद-बेहद उदास है। उदासी की कोई खास वजह नहीं, कुछ तबीयत ढीली, कुछ आसपास के तनाव और कुछ उनसे टूटने का डर, खुले आकाश के नीचे भी खुलकर साँस लेने की जगह की कमी, जिस काम में लगकर मुक्ति पाना चाहता हूँ, उस काम में हजार बाधाएँ; कुल ले-देकर उदासी के लिए इतनी बड़ी चीज नहीं बनती।

बच्चे नहीं हैं। पत्नी किसी तरह शांत होकर सो गई, पर मैं अकुला उठा। बारिश निकल गई, ये लोग नहीं आए। बरामदे में कुर्सी लगाकर राह जोहने लगा। दूर कोई भी आहट होती तो, उदग्र होकर फाटक की ओर देखने लगता। रह-रहकर बिजली चमक जाती थी और सड़क दिख जाती थी। पर सामने की सड़क पर कोई रिक्शा नहीं, कोई चिरई का पूत नहीं। एकाएक कई दिनों से मन में उमड़ती-घुमड़ती पँक्तिया गूँज गई :

‘मोरे राम के भीजे मुकुटवा

लछिमन के पटुकवा

मोरी सीता के भीजै सेनुरवा

त राम घर लौटहिं।’

(मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा, मेरे लखन का पटुका (दुपट्टा) भीग रहा होगा, मेरी सीता की माँग का सिंदूर भीग रहा होगा, मेरे राम घर लौट आते।)

बचपन में दादी-नानी जाँते पर वह गीत गातीं, मेरे घर से बाहर जाने पर विदेश में रहने पर वे यही गीत विह्वल होकर गातीं और लौटने पर कहतीं - ‘मेरे लाल को कैसा वनवास मिला था।’ जब मुझे दादी-नानी की इस आकुलता पर हँसी भी आती, गीत का स्वर बड़ा मीठा लगता। हाँ, तब उसका दर्द नहीं छूता। पर इस प्रतीक्षा में एकाएक उसका दर्द उस ढलती रात में उभर आया और सोचने लगा, आने वाली पीढ़ी पिछली पीढी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढ़ी अपनी संतान के सम्भावित संकट की कल्पना मात्र से उद्विग्न हो जाती है। मन में यह प्रतीति ही नहीं होती कि अब संतान समर्थ है, बड़ा-से-बड़ा संकट झेल लेगी। बार-बार मन को समझाने की कोशिश करता, लड़की दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में पढ़ाती है, लड़का संकट-बोध की कविता लिखता है, पर लड़की का ख्याल आते ही दुश्चिता होती, गली में जाने कैसे तत्व रहते हैं! लौटते समय कहीं कुछ हो न गया हो और अपने भीतर अनायास अपराधी होने का भाव जाग जाता, मुझे रोकना चाहिए था या कोई व्यवस्था करनी चाहिए थी, पराई लड़की (और लड़की तो हर एक पराई होती है, धोबी की मुटरी की तरह घाट पर खुले आकाश में कितने दिन फहराएगी, अंत में उसे गृहिणी बनने जाना ही है) घर आई, कहीं कुछ हो न जाए!

बचपन में दादी-नानी जाँते पर वह गीत गातीं, मेरे घर से बाहर जाने पर विदेश में रहने पर वे यही गीत विह्वल होकर गातीं और लौटने पर कहतीं - ‘मेरे लाल को कैसा वनवास मिला था।’ जब मुझे दादी-नानी की इस आकुलता पर हँसी भी आती, गीत का स्वर बड़ा मीठा लगता। हाँ, तब उसका दर्द नहीं छूता। पर इस प्रतीक्षा में एकाएक उसका दर्द उस ढलती रात में उभर आया और सोचने लगा, आने वाली पीढ़ी पिछली पीढी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढ़ी अपनी संतान के ...।

मन फिर घूम गया कौसल्या की ओर, लाखों-करोड़ों कौसल्याओं की ओर, और लाखों करोड़ों कौसल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौसल्या की ओर, इन सबके राम वन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिंता है? क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरम्भ होने के पूर्व एक निश्चित मुहुर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है? क्या बात है कि तुलसीदास ने ‘कानन’ को ‘सत अवध समाना’ कहा और चित्रकूट में ही पहुँचने पर उन्हें ‘कलि की कुटिल कुचाल’ दीख पड़ी? क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं? कहीं-न-कहीं इन सबके बीच एक संगति होनी चाहिए।

अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश में उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें, मुकुट न भीगने पाए, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर-बंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरूकता का उपलक्षण) न भीगने पाए और अखंड

सौभाग्यवती सीता की माँग का सिंदूर न भीगने पाए, सीता भले ही भीग जाएँ। राम तो वन से लौट आए, सीता को लक्ष्मण फिर निर्वासित कर आए, पर लोकमानस में राम की वनयात्रा अभी नहीं रूकी। मुकुट, दुपट्टे और सिंदूर के भीगने की आशंका अभी भी साल रही है। कितनी अयोध्याएँ बसीं, उजड़ीं, पर निर्वासित राम की असली राजधानी, जंगल का रास्ता अपने काँटों-कुशों, कंकड़ों-पत्थरों की वैसी ही ताजा चुभन लिये हुए बरकरार है, क्योंकि जिनका आसरा साधारण गँवार आदमी भी लगा सकता है, वे राम तो सदा निर्वासित ही रहेंगे और उनके राजपाट को सम्भालने वाले भरत अयोध्या के समीप रहते हुए भी उनसे भी अधिक निर्वासित रहेंगे, निर्वासित ही नहीं, बल्कि एक कालकोठरी में बंद जिलावतनी की तरह दिन बिताएँगे।

सोचते-सोचते लगा कि इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौसल्या है; जो हर बारिश में विसूर रही है - 'मोरे राम के भीजे मुकुटवा' (मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा)। मेरी संतान, एश्वर्य की अधिकारिणी संतान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐश्वर्य भीग रहा है, मेरे राम कब घर लौटेंगे; मेरे राम के सेवक का दुपट्टा भीग रहा है, पहरुए का कमरबंद भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है, मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिंदूर भीग रहा है, उसका अखंड सौभाग्य भीग रहा है, मैं कैसे धीरज धरूँ? मनुष्य की इस सनातन नियति से एकदम आतंकित हो उठा ऐश्वर्य और निर्वासन दोनों साथ-साथ चलते हैं। जिसे एश्वर्य सौंपा जाने को है, उसको निर्वासन पहले से बदा है। जिन लोगों के बीच रहता हूँ, वे सभी मंगल नाना के नाती हैं, वे 'मुद मंगल' में ही रहना चाहते हैं, मेरे जैसे आदमी को वे निराशावादी समझकर बिरादरी से बाहर ही रखते हैं, डर लगता रहता है कि कहीं उड़कर उन्हें भी दुख न लग जाए, पर मैं अशेष मंगलाकांक्षाओं के पीछे से झाँकती हुई दुर्निवार शंकाकुल आँखों में झाँकता हूँ, तो मंगल का सारा उत्साह फीका पड़ जाता है और बंदनवार, बंदनवार न दिखकर बटोरी हुई रस्सी की शक्ल में कुंडली मारे नागिन दिखती है, मंगल-घट औंधाई हुई अधफूटी गगरी दिखता है, उत्सव की रोशनी का तामझाम धुओं की गाँठों का अम्बार दिखता है और मंगल-वाद्य डेरा उखाड़ने वाले अंतिम कारबरदार की उसाँस में बजकर एकबारगी बंद हो जाता है।

लागति अवध भयावह भारी,
मानहुँ कालराति अँधियारी।
घोर जंतु सम पुर नरनारी,
डरपहिं एकहि एक निहारी।
घर मसान परिजन जनु भूता,
सुत हित मीत मनहुँ जमदूता।
वागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं,
सरित सरोवर देखि न जाहीं।

कैसे मंगलमय प्रभात की कल्पना थी और कैसी अँधेरी कालरात्रि आ गई है? एक-दूसरे को देखने से डर लगता है। घर मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गए हैं, पेड़ सूख गए हैं, लताएँ कुम्हला गई हैं। नदियों और सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है। केवल इसलिए कि जिसका ऐश्वर्य से अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया। उत्कर्ष की ओर उन्मुख समष्टि का चैतन्य अपने ही घर से बाहर कर दिया गया, उत्कर्ष की, मनुष्य की ऊर्ध्वोन्मुख चेतना की यही कीमत सनातन काल से अदा की जाती रही है। इसीलिए जब कीमत अदा कर ही दी गई, तो उत्कर्ष कम-से-कम सुरक्षित रहे, यह चिंता स्वाभाविक हो जाती

किसी तरह रात बीत गई। लेकिन उसे चिंता हो रही थी। अब तो मां को याद आ ही जायेगा और तब...। वह अंदर से बहुत उदास था पर कोशिश कर रहा था कि कोई जान न पाए। उसका मन न खेलने को कर रहा था, न खाने को और न ही कहीं जाने को। आशू-अज्जू मैदान की तरफ जाते-जाते इशारे से बोल रहे थे-अबे आ जा। पर उससे टस से मस भी नहीं हुआ जा रहा था। उसे लगता था कि अभी पापा आयेंगे और अंगूठी पर तफ्तीश शुरू करेंगे। फिर जोर से थप्पड़ लगाकर बोलेंगे-नवाब वाजिद अली शाह बनने का शौक चढ़ा है। परंतु न कोई पूछता था न उसका डर जा रहा था।

है। राम भीगें तो भीगें, राम के उत्कर्ष की कल्पना न भीगे, वह हर बारिश में हर दुर्दिन में सुरक्षित रहे। नर के रूप में लीला करने वाले नारायण निर्वासन की व्यवस्था झेलें, पर नर रूप में उनकी ईश्वरता का बोध दमकता रहे, पानी की बूँदों की झालर में उसकी दीप्ति छिपने न पाए। उस नारायण की सुख-सेज बने अनंत के अवतार लक्ष्मण भले ही भीगते रहें, उनका दुपट्टा, उनका अहर्निशि जागर न भीजे, शेषी नारायण के ऐश्वर्य का गौरव अनंत शेष के जागर-संकल्प से ही सुरक्षित हो सकेगा और इन दोनों का गौरव जगज्जननी आद्याशक्ति के अखंड सौभाग्य, सीमंत, सिंदूर से रक्षित हो सकेगा, उस शक्ति का एकनिष्ठ प्रेमपाकर राम का मुकुट है, क्योंकि राम का निर्वासन वस्तुतः सीता का दुहरा निर्वासन है। राम तो लौटकर राजा होते हैं, पर रानी होते ही सीता राजा राम द्वारा वन में निर्वासित कर दी जाती हैं। राम के साथ लक्ष्मण हैं, सीता हैं, सीता वन्य पशुओं से घिरी हुई विजन में सोचती हैं – प्रसव की पीड़ा हो रही है, कौन इस वेला में सहारा देगा, कौन प्रसव के समय प्रकाश दिखलाएगा, कौन मुझे सँभालेगा, कौन जन्म के गीत गाएगा?

कोई गीत नहीं गाता। सीता जंगल की सूखी लकड़ी बीनती हैं, जलाकर अँजोर करती हैं और जुड़वाँ बच्चों का मुँह निहारती हैं। दूध की तरह अपमान की ज्वाला में चित्त कूद पड़ने के लिए उफनता है और बच्चों की प्यारी और मासूम सूरत देखते ही उस पर पानी के छीटे पड़ जाते हैं, उफान दब जाता है। पर इस निर्वासन में भी सीता का सौभाग्य अखण्डित है, वह राम के मुकुट को तब भी प्रमाणित करता है, मुकुटधारी राम को निर्वासन से भी बड़ी व्यथा देता है और एक बार और अयोध्या जंगल बन जाती है, स्नेह की रसधार...।

कोई गीत नहीं गाता। सीता जंगल की सूखी लकड़ी बीनती हैं, जलाकर अँजोर करती हैं और जुड़वाँ बच्चों का मुँह निहारती हैं। दूध की तरह अपमान की ज्वाला में चित्त कूद पड़ने के लिए उफनता है और बच्चों की प्यारी और मासूम सूरत देखते ही उस पर पानी के छीटे पड़ जाते हैं, उफान दब जाता है। पर इस निर्वासन में भी सीता का सौभाग्य अखण्डित है, वह राम के मुकुट को तब भी प्रमाणित करता है, मुकुटधारी राम को निर्वासन से भी बड़ी व्यथा देता है और एक बार और अयोध्या जंगल बन जाती है, स्नेह की रसधार रेत बन जाती है, सब कुछ उलट-पलट जाता है, भवभूति के शब्दों में पहचान की बस एक निशानी बच रहती है, दूर उँचे खड़े तटस्थ पहाड़, राजमुकुट में जड़ें हीरों की चमक के सैकड़ों शिखर, एकदम कठोर, तीखे और निर्मम –

पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां
विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहामू।
बहोः कालाद् दृष्टं ह्यपरमिव मन्ये वनमिंद
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढ़यति।

राम का मुकुट इतना भारी हो उठता है कि राम उस बोझ से कराह उठते हैं और इस वेदना के चीत्कार में सीता के माथे का सिंदूर और दमक उठता है, सीता का वर्चस्व और प्रखर हो उठता है।

कुर्सी पर पड़े-पड़े यह सब सोचते-सोचते चार बजने को आए, इतने में दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक पड़ी, चिरंजीवी निचली मंजिल से ऊपर नहीं चढ़े, सहमी हुई कृष्णा (मेरी मेहमान लड़की) बोली – दरवाजा खोलिए। आँखों में इतनी कातरता कि कुछ कहते नहीं बना, सिर्फ इतना कहा कि तुम लोगों को इसका क्या अंदाज होगा कि हम कितने परेशान रहे हैं। भोजन-दूध धरा रह गया, किसी ने भी छुआ नहीं, मुँह ढाँपकर सोने का बहाना शुरू हुआ, मैं भी स्वस्ति की साँस लेकर बिस्तर पर पड़ा, पर अर्धचेतन अवस्था में फिर जहाँ खोया हुआ था, वहीं लौट गया। अपने लड़के घर लौट आए, बारिश से नहीं संगीत से भीगकर, मेरी दादी-नानी के गीतों के राम, लखन और सीता अभी भी वन-वन भीग रहे हैं। तेज बारिश में पेड़ की छाया और दुखद हो जाती है, पेड़ की हर पत्ती से टप-टप बूँदें पड़ने लगती हैं, तने पर टिकें, तो उसकी हर नस-नस से आप्लावित होकर बारिश पीठ गलाने लगती है। जाने कब से मेरे राम भीग रहे हैं और बादल हैं कि मूसलाधार ढरकाये चले जा रहे हैं, इतने में मन में एक चोर धीरे-से

फुसफुसाता है, राम तुम्हारे कब से हुए, तुम, जिसकी बुनाहट पहचान में नहीं आती, जिसके व्यक्तित्व के ताने-बाने तार-तार होकर अलग हो गए हैं, तुम्हारे कहे जानेवाले कोई भी हो सकते हैं कि वह तुम कह रहे हो, मेरे राम! और चोर की बात सच लगती है, मन कितना बँटा हुआ है, मनचाही और अनचाही दोनों तरह की हजार चीजों में। दूसरे कुछ पतियाएँ भी, पर अपने ही भीतर परतीति नहीं होती कि मैं किसी का हूँ या कोई मेरा है। पर दूसरी ओर यह भी सोचता हूँ कि क्या बार-बार विचित्र-से अनमनेपन में अकारण चिंता किसी के लिए होती है, वह चिंता क्या पराए के लिए होती है, वह क्या कुछ भी अपना नहीं है? फिर इस अनमनेपन में ही क्या राम अपनाने के लिए हाथ नहीं बढ़ाते आए हैं, क्या न-कुछ होना और न-कुछ बनाना ही अपनाने की उनकी बढ़ी हुई शर्त नहीं है?

तार टूट जाता है, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, यह भीतर से कहा पाऊँ? अपनी उदासी से ऐसा चिपकाव अपने सँकरे-से-दर्द से ऐसा रिश्ता, राम को अपना कहने के लिए केवल उनके लिए भरा हुआ हृदय कहाँ पाऊँ? मैं शब्दों के घने जंगलों में हिरा गया हूँ। जानता हूँ, इन्हीं जंगलों के आसपास किसी टेकड़ी पर राम की पर्णकुटी है, पर इन उलझानेवाले शब्दों के अलावा मेरे पास कोई राह नहीं। शायद सामने उपस्थित अपने ही मनोराज्य के युवराज, अपने बचे-खुचे स्नेह के पात्र, अपने भविष्य के संकट की चिंता में राम के निर्वासन का जो ध्यान आ जाता है, उनसे भी अधिक एक बिजली से जगमगाते शहर में एक पढ़ी-लिखी चंद दिनों की मेहमान लड़की के एक रात कुछ देर से लौटने पर अकारण चिंता हो जाती है, उसमें सीता का ख्याल आ जाता है, वह राम के मुकुट या सीता के सिंदूर के भीगने की आशंका से जोड़े न जोड़े, आज की दरिद्र अर्थहीन, उदासी को कुछ ऐसा अर्थ नहीं दे देता, जिससे जिंदगी ऊब से कुछ उबर सके?

और इतने में पूरब से हल्की उजास आती है और शहर के इस शोर-भरे बियाबान में चक्की के स्वर के साथ चढ़ती-उतरती जँतसार गीति हल्की-सी सिहरन पैदा कर जाती है। 'मोरे राम के भीजै मुकुटवा' और अमचूर की तरह विश्वविद्यालयीय जीवन की नीरसता में सूखा मन कुछ जरूर ऊपरी सतह पर ही सही भीगता नहीं, तो कुछ नम तो हो ही जाता है, और महीनों की उमड़ी-घुमड़ी उदासी बरसने-बरसने को आ जाती है। बरस न पाए, यह अलग बात है (कुछ भीतर भाप हो, तब न बरसे), पर बरसने का यह भाव जिस ओर से आ रहा है, उधर राह होनी चाहिए। इतनी असंख्य कौसल्याओं के कण्ठ में बसी हुई जो एक अरूप ध्वनिमयी कौसल्या है, अपनी सृष्टि के संकट में उसके सतत उत्कर्ष के लिए आकुल, उस कौसल्या की ओर, उस मानवीय संवेदना की ओर ही कहीं राह है, घास के नीचे दबी हुई। पर उस घास की महिमा अपरम्पार है, उसे तो आज वन्य पशुओं का राजकीय संरक्षित क्षेत्र बनाया जा रहा है, नीचे ढँकी हुई राह तो सैलानियों के घूमने के लिए, वन्य पशुओं के प्रदर्शन के लिए, फोटो खींचनेवालों की चमकती छवि यात्राओं के लिए बहुत ही रमणीक स्थली बनाई जा रही है। उस राह पर तुलसी और उनके मानस के नाम पर बड़े-बड़े तमाशे होंगे, फुलझड़िया दगेंगी, सैर-सपाटे होंगे, पर वह राह ढँकी ही रह जाएगी, केवल चक्की का स्वर, श्रम का स्वर ढलती रात में, भीगती रात में अनसोए वात्सल्य का स्वर राह तलाशता रहेगा – किस ओर राम मुड़े होंगे, बारिश से बचने के लिए? किस ओर? किस ओर? बता दो सखी।

तार टूट जाता है, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, यह भीतर से कहा पाऊँ? अपनी उदासी से ऐसा चिपकाव अपने सँकरे-से-दर्द से ऐसा रिश्ता, राम को अपना कहने के लिए केवल उनके लिए भरा हुआ हृदय कहाँ पाऊँ? मैं शब्दों के घने जंगलों में हिरा गया हूँ। जानता हूँ, इन्हीं जंगलों के आसपास किसी टेकड़ी पर राम की पर्णकुटी है, पर इन उलझानेवाले शब्दों के अलावा मेरे पास कोई राह नहीं।

पथ प्रदर्शक हैं हमारे उपनिषद

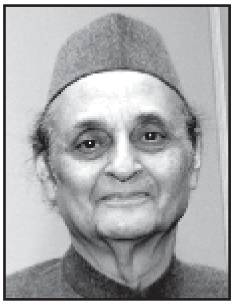

डॉ कर्ण सिंह

इस ऐतिहासिक स्थान पर आकर कम्पन होता है जब याद आता है कि यहीं गांधीजी रहे और यहीं उनकी हत्या हुई। मैं 94 वर्ष का हूं और मैं गांधी से मिला हूं। आपको आश्चर्य होगा। आज थोड़े से लोग रह गए होंगे जो वास्तव में गांधी से मिले। 1947 में गांधी जब श्रीनगर आए तो वे कृपा करके हमारे महल में आए। वो किसी महल में जाते नहीं थे। लेकिन हमारे यहां खासतौर से पिताजी को मिलने आए। तो पिताजी और माताजी दोनों बैठे थे और मैं व्हील चेयर पर था और मैंने जिद की कि मैं भी बैठूंगा, तो मेरी व्हील चेयर भी बीच में लगाई गई और आप देखेंगे कि वहां एक बोर्ड लगा हुआ है कि यह वह स्थान है, जहां महात्मा गांधी महाराजा हरिसिंह, महारानी तारादेवी और युवराज कर्ण सिंह से मिले थे। उस समय उनसे मिलना ही मेरे लिए बड़ी बात है। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मैं उनसे मिला। गांधीजी पर बहुत सी किताबें लिखी गई हैं, हजारों नहीं लाखों में, हरएक भाषा में व हरएक क्षेत्र में। लेकिन यह जो किताब 'माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रूथ' गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने निकाली है। मैंने देखा कि यह बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत की गई है। इसका जो सरलीकरण हुआ। एक-एक विषय को जो इन्होंने प्रस्तुत किया है। यह आत्मकथा गांधीजी ने स्वयं लिखी है। गांधी सत्य और अहिंसा को सबसे बड़ा मानते थे। सत्य, अहिंसा, अस्पृश्यता उन्मूलन त्याग, सामाजिक बुराईयों का उन्मूलन करना गांधी का सपना रहा और गांधीजी ने केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का ही नेतृत्व नहीं किया, उन्होंने जो दर्शन दिया है, उस दर्शन का सारे विश्व में प्रभाव पड़ा।

नेल्सन मंडेला से भी मैं मिला, जब वो जेल से निकले, उन्होंने गांधी का रास्ता अपनाया। हांलाकि उनका देश अलग है, धर्म अलग है, वर्ण अलग है। मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिका में जो आंदोलन किया, वो भी गांधी से प्रभावित थे और अनेक देशों में गांधी का प्रभाव पड़ा है। उनका दर्शन बड़ा स्पष्ट है-अहिंसा, त्याग और सत्य। सत्य के वे बड़े पुजारी थे। मुण्डकोपनिषद् में लिखा है-सत्यमेव जयते...।

1947 में गांधी जब श्रीनगर आए तो वे कृपा करके हमारे महल में आए। वो किसी महल में जाते नहीं थे। लेकिन हमारे यहां खासतौर से पिताजी को मिलने आए। तो पिताजी और माताजी दोनों बैठे थे और मैं व्हील चेयर पर था और मैंने जिद की कि मैं भी बैठूंगा, तो मेरी व्हील चेयर भी बीच में लगाई गई और आप देखेंगे कि वहां एक बोर्ड लगा हुआ है कि यह वह स्थान है, जहां महात्मा गांधी महाराजा हरिसिंह...।

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमंत्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्

ये सत्यमेव जयते भी हमारे उपनिषद् से लिया गया है। इस समय सारे विश्व में उथल-पुथल है। मानवीय चेतना का जैसे समुद्र मंथन हो रहा है। दुनिया में कहीं शांति नहीं है, कहीं युद्ध चल रहे हैं, कहीं युद्ध की तैयारियां हो रही हैं, कहीं आक्रमण हो रहे हैं। इस समय हम ऐसे युग में हैं, जहां शांति नहीं है। इसलिए हम अपनी सांस्कृतिक परंपरा को देखते हैं। इसलिए नहीं कि हम पीछे जाएं। पीछे तो हम जा ही नहीं सकते। चरैवेति- चरैवेति...। ये कहता है कि हम आगे बढ़ें, लेकिन आगे बढ़ने के लिए हमें अपने शास्त्रों से कोई बुद्धि, कोई प्रकाश, कोई पथप्रदर्शन हमें मिलता है, तो उसको हमें ले लेना चाहिए। हमारे हिंदू धर्म में तो इतने विशाल शास्त्र हैं। किसी भी धर्म में इतने शास्त्र नहीं हैं। वेद हैं, उपनिषद् हैं, पुराण हैं। क्या नहीं है। इस विषय के ऊपर पुस्तकें नहीं लिखी गई हैं। लेकिन इन सबमें वेद सर्वोपरि हैं। वेद के भी चार हिस्से होते हैं। उपनिषद् वेदों में चौथे नम्बर पर हैं। वेदान्त को उपनिषद् की शिक्षा हम मानते हैं। उपनिषद् 108 हैं, लेकिन 10-11 प्रमुख उपनिषद् हैं। 10 तो शंकराचार्य ने चुने हैं। ये उपनिषद् बड़े प्रभावी हैं। ये बड़ी गूढ़ विद्या है। जो हरएक व्यक्ति को नहीं दी जा सकती है। उपनिषद् में है क्या, ये बताना बड़ा कठिन है, लेकिन मैं उपनिषद् की मुख्य बातें आपके समक्ष रखूंगा।

उपनिषद् का मुख्य मुद्दा है-एकमसत्। ये सारी सृष्टि जो है, केवल पृथ्वी ही नहीं, अपितु अनंत कोटि ब्रह्मांड। इनकी एक शक्ति है-सारे ब्रह्मांड की। जिसे वैज्ञानिक भी अब मानने लगे हैं। वो क्या शक्ति है, उस शक्ति को उपनिषद् में ब्रह्म कहा गया है। उसका प्रतिबिम्ब हर एक व्यक्ति में है, जो ब्रह्म की शक्ति है, हरएक व्यक्ति के अंदर है, जिसे हम आत्मा कहते हैं। उपनिषद ब्रह्म और आत्मा की व्याख्या करते हैं और यह बताते हैं कि आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं। इन्हें मिलाना ही हमारा परम कर्तव्य है।

इन दोनों को मिलाने के चार प्रमुख मार्ग उपनिषदों में बताए गए हैं - ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, और राजयोग। ज्ञान योग का अर्थ है विवेक से, अध्ययन से, सत्य-असत्य का भेद जानना। यह मस्तिष्क का योग है और उपनिषदों के अध्ययन से प्राप्त होता है।

तीन प्रमुख प्रस्थान माने गए हैं - श्रुति (उपनिषद), स्मृति (भगवद्गीता), और तर्क (ब्रह्म सूत्र)। गीता स्वयं उपनिषदों से ही निकली है। जैसे कहा गया सभी उपनिषदों का सार गीता है, जैसे गाय का दूध बछड़ा पीता है वैसे ही अर्जुन को कृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया।

भक्ति योग हृदय का योग है। जब तक हृदय का पटल प्रेम और समर्पण से नहीं खुलता, साधना अधूरी रहती है। चाहे आप कितने भी ज्ञानी क्यों न हों, प्रेम और समर्पण के बिना ईश्वर को पाना कठिन है। हमारे धर्म में अनेक देव-देवियों के रूप में भक्ति के मार्ग खुले हैं। आप जिस भी स्वरूप में श्रद्धा रखते हैं, उसे अपनाएं।

कर्म योग बाहुबल का योग है। उपनिषद केवल ज्ञान का मार्ग नहीं सिखाते, बल्कि कर्म का भी उपदेश देते हैं। ईशावास्य उपनिषद का पहला श्लोक 'ईशा वास्यमिदं सर्वं' ब्रह्म की व्यापकता बताता है, वहीं दूसरा श्लोक कर्म की अनिवार्यता बताता है।

राजयोग श्वास का योग है - अपने भीतर की ओर ध्यान देना। क्या हम कभी अपने श्वास को सुनते हैं? उपनिषदों में बताया गया है कि किस प्रकार से श्वास को नियंत्रित कर साधना की जा सकती है। राजयोग आंतरिक साधना का मार्ग है। इन चारों योगों - ज्ञान, भक्ति, कर्म, और राजयोग की आवश्यकता है यदि हमें सच्चे अर्थों में आत्मा और ब्रह्म को मिलाना है। केवल एक मार्ग पर्याप्त नहीं है। आज के युग में समग्रता की आवश्यकता है।

अब बात आती है 'एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' की - सत्य एक है, परंतु ज्ञानी उसे विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करते हैं। मैंने संसद टीवी के लिए 'एकं सत्' नाम से एक कार्यक्रम किया था, जिसमें मैंने विभिन्न धर्मों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया था। हमारा देश धर्मों की विविधता में एकता का आदर्श है। चाहे वह बड़ा धर्म हो जैसे सनातन या इस्लाम, या छोटा धर्म हो जैसे पारसी - हर एक के लिए उसका धर्म ही सर्वोच्च होता है।

इसलिए हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि सत्य को जानने और व्यक्त करने के अनेक मार्ग हो सकते हैं। कोई निराकार को मानता है, कोई साकार को, तो कोई अन्य किसी रूप में। लेकिन सत्य एक ही है। यह ऋग्वेद का

वाक्य है, जिसे हमें न केवल समझना चाहिए बल्कि आत्मसात भी करना चाहिए।

अंत में, 'अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' – यह भावना भी उपनिषद से निकलती है कि उदार हृदय वालों के लिए पूरी पृथ्वी एक परिवार है। इस प्रकार उपनिषद हमें केवल दर्शन नहीं देते, बल्कि एक जीवन जीने की पूर्ण दृष्टि देते हैं – ब्रह्म, आत्मा, उनके योग, और व्यापक दृष्टिकोण। यहां दिया गया वक्तव्य कई गहरे और महत्वपूर्ण विचारों से ओतप्रोत है। इसे अलग-अलग अनुच्छेदों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

वसुधैव कुटुम्बकम का तात्पर्य 'वसुधा' यानी पृथ्वी से है, न कि 'वासुदेव' से जैसा कि कई लोग गलत समझते हैं। इसका आशय है कि पूरी पृथ्वी ही एक परिवार है। हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले यह महान विचार प्रस्तुत किया कि समस्त मानव जाति एक है। उस युग में भले ही कोई व्यक्ति 101 मील से अधिक पैदल यात्रा नहीं कर सकता था, फिर भी उनकी कल्पना थी – एक सत्य, एक विश्व, एक परिवार।

आज मानव जाति की जो स्थिति है, अगर हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' को अपनाते तो शायद ऐसी दशा न होती। जब से मानव अस्तित्व में आया है, तब से आपसी लड़ाइयों और हिंसा का सिलसिला रहा है। विज्ञान और तकनीक में भले ही अभूतपूर्व प्रगति हुई हो, परंतु मानवीय चेतना में क्या कोई उन्नयन हुआ है?

हमारे उपनिषदों और ऋषियों के विचारों की तुलना करें तो आज की मानसिक स्थिति कहीं पीछे लगती है। इसलिए यह मानना और समझना आवश्यक है कि जब तक हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विचार को नहीं अपनाएंगे, तब तक मानव जाति का कल्याण संभव नहीं। यह विचार आज ही नहीं, जब भी अपनाया जाएगा भले लाखों लोगों की मृत्यु के बाद-तब जाकर मानवता को दिशा मिलेगी। इसी संदर्भ में 'बहुजन सुखाय बहुजन हिताय' का विचार भी है। जब मैं संसद में था, मैंने एक मित्र कम्युनिस्ट से पूछा, क्या तुम्हारे दर्शन में इससे उच्च कोई विचार है?

हमारी संस्कृति में 'सर्वे सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः' जैसी प्रार्थनाएं हैं-जहां हर किसी के सुख, स्वास्थ्य और भले की कामना की जाती है। वहां घृणा और नफरत के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। नफरत के साथ परिस्थितियाँ हमेशा बिगड़ती हैं। प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई योजनाएं जैसे 'स्वच्छ भारत', किसी एक धर्म या जाति के लिए नहीं हैं, बल्कि पूरे देशवासियों के लिए हैं। इन योजनाओं से न केवल स्वच्छता बढ़ेगी, बल्कि आपसी दुश्मनी और घृणा को भी कम किया जा सकता है।

हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, उपनिषदों और चिंतन को अपनाकर ही देश को लाभ मिलेगा। विशेष रूप से युवाओं से मैं कहना चाहूंगा कि वे अपने ऊपर, अपने देश पर और भारत के भाग्य पर विश्वास रखें। हमारा देश कोई साधारण देश नहीं है।

कई कठिनाइयों के बाद भारतवर्ष ने अपनी अस्मिता बनाए रखी है।

इकबाल ने ठीक ही कहा है:

'यूनान, मिस्र, रोमा सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकी नामो-निशाँ हमारा।'
हमारी हस्ती कुछ ऐसी है जो मिटती नहीं।

भारत ने आक्रमण झेले, विदेशियों का शासन सहा, गांधीजी के नेतृत्व में अंग्रेजों का सामना किया और आजादी हासिल की। इसके बावजूद यह देश आज भी टिका हुआ है और तब तक टिका रहेगा जब तक हमें खुद पर विश्वास है।

मैं युवा पीढ़ी से विशेष अनुरोध करता हूं कि वे भ्रष्टाचार और निराशा के वातावरण के बावजूद अपने विश्वास पर अडिग रहें। रास्ता कठिन है, लेकिन यही कठिन रास्ता भविष्य की ओर ले जाएगा। कोई आसान रास्ता नहीं होता।

व्यक्तिगत कल्याण हो या समाज कल्याण, दोनों के लिए कठिन मार्ग पर चलना ही होगा। स्वामी विवेकानंद को कठोपनिषद का यह श्लोक प्रिय था – "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"। उठो, जागो, और लक्ष्य को प्राप्त करो-भले वह छुरी की धार पर चलने जैसा कठिन हो।

यह सत्य है कि सभी मतभेदों का समाधान वेदांत में है। परंतु हमें अपने सिद्धांतों को नहीं भूलना चाहिए। घृणा का उत्तर घृणा से नहीं देना चाहिए। गांधीजी ने कहा था कि अंग्रेजों से घृणा मत करो, उनकी हुकूमत का विरोध करो। यह एक सूक्ष्म अंतर है जो उन्होंने स्पष्ट किया। उन्होंने यह भी कहा कि जब तक सत्य, त्याग और प्रेम नहीं होगा, तब तक कल्याण असंभव है। इसी विश्वास के लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। हर बार जब हम 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, मुझे यह भी याद आता है कि जिन लोगों ने देश के लिए बलिदान दिया, उनमें वे भी शामिल हैं जो बंटवारे के दौरान मारे गए। लाखों लोग मरे, करोड़ों बेघर हुए।

मैंने स्वयं दिल्ली में शरणार्थी शिविर देखे हैं। उस कठिन समय में दो व्यक्तियों ने देश को संभाला–पंडित नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल। अगर वे न होते, तो देश बिखर भी सकता था। चर्चिल ने कहा था कि भारत 20 टुकड़ों में बंट जाएगा। परंतु हमारे नेतृत्व ने देश को जोड़कर रखा।

मैं किसी राजनैतिक पक्ष की बात नहीं कर रहा, परंतु उस दौर में जो कार्य हुआ, वह अनुकरणीय था। मैं तब 16 वर्ष का था और अपनी आंखों से सब देखा। गांधीजी उस दिन दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस मनाने नहीं आए। वे नौआखाली की गलियों में सांप्रदायिक हिंसा रोकने में लगे थे।

जिस व्यक्ति ने आजादी का आंदोलन चलाया, वह जश्न में नहीं था, बल्कि नफरत मिटाने में लगा था। गांधीजी जैसे व्यक्ति से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। उपनिषदों पर तो घंटों चर्चा हो सकती है, परंतु मैंने संक्षेप में मुख्य बातें रखने का प्रयास किया प्रण, आत्मा का मिलन, चार योग, वसुधैव कुटुम्बकम, एकम सत्य, बहुजन सुखाय। यदि हम ये छह विचार अपने जीवन में उतार लें, तो देश और समाज दोनों का कल्याण संभव है।

(6 मई 2025 को गांधी स्मृति में पूर्व केन्द्रीय मंत्री व वेदान्त के मर्मज्ञ डॉ कर्ण सिंह द्वारा दिए गए व्याख्यान के संपादित अंश)

मजदूर दिवस पर विशेष

श्रम की भूमिका पर गांधीजी के विचार

डॉ. वर्षा दास

गांधीजी को सभी सत्याग्रही और आश्रमवासी बापू कहते थे। एक बार उनके हाथ में बहुत दर्द हो रहा था फिर भी वे कात रहे थे। तब वल्लभभाई पटेल ने उनसे कहा, "देखिए न पहले अंगूठे में दर्द था अब वह कोहनी तक पहुंच गया। कोहनी से कंधे तक पहुंच जाएगा। अब रहने दीजिए। बहुत कताई हो गई।''

तो बापू बोले, "किसी दिन तो किसी के कंधे पर चढ़ना ही पड़ेगा ना"।

सरदार ने कहा, "अरे ऐसा नहीं हो सकता। देश को बीच में छोड़कर नहीं जा सकते हो। एक बार जहाज को किनारे ले आइए। उसके बाद जहाँ जाना हो वहां जाना। मैं भी आपके साथ जाऊंगा।''

कताई एक ऐसा श्रम है जिससे आमदनी मिलती है और घर बैठे यह काम हो पाता है। बापू ने 1928 के सितंबर महीने में 'यंग इंडिया' पत्रिका में लिखा था कि सेवा के लिए शरीर-श्रम की आवश्यकता है। सेवा के लिए जब कोई शरीर-श्रम करता है तो उसे जीने का अधिकार प्राप्त होता है। अधिकारों की उत्पत्ति का सच्चा स्रोत है-कर्तव्यों का पालन। जीवन की आवश्यकताओं को पाने का समान अधिकार मनुष्यों और पशु-पक्षियों को भी है। मनुष्य के लिए ये अधिकार कर्तव्यों से जुड़े हैं। कर्तव्य यह है कि हम अपने हाथ-पैरों से मेहनत करें।

एक बार वर्धा में तालीम लेने के लिए जो शिक्षक आए थे उनके साथ गांधीजी ने जो बात की थी वह उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार थी:

''आप में से एक भाई ने मुझे खत लिखा था। उसमें यह शिकायत की गई थी कि यहां हाथ-पैर की मेहनत पर बहुत ही जोर दिया जाता है। मैं मानता हूं कि ऐसी मेहनत बुद्धि के विकास का अच्छे से अच्छा जरिया है। हमारे मौजूदा स्कूल और कॉलेज ब्रिटिश सल्तनत की ताकत को मजबूत बनाने के लिए हैं। आप में से जिन्होंने उनमें शिक्षा पाई है, उन्हें वे जरूर

गांधीजी को सभी सत्याग्रही और आश्रमवासी बापू कहते थे। एक बार उनके हाथ में बहुत दर्द हो रहा था फिर भी वे कात रहे थे। तब वल्लभभाई पटेल ने उनसे कहा, "देखिए न पहले अंगूठे में दर्द था अब वह कोहनी तक पहुंच गया। कोहनी से कंधे तक पहुंच जाएगा। अब रहने दीजिए। बहुत कताई हो गई।''

अच्छे लगेंगे। उनमें पढ़नेवाले विद्यार्थियों को कोई यह थोड़े ही पूछता है कि वे रास्तों और पाखानों की सफाई करना जानते हैं या नहीं। लेकिन यहां तो सफाई और स्वच्छता आपको एक बुनियादी चीज की तरह सिखाई जाती है। भंगी-काम में भी कला तो है ही। 'तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' यानी बार-बार पूछकर और विनय के साथ आपको यह कला सीख लेनी चाहिए। बार-बार पूछने में उद्धता भी हो सकती है। इसी लिए ज्ञान प्राप्त करने की चाह के साथ नम्रता की भी जरूरत रहती है। तभी बुद्धि के दरवाजे खुलते हैं।

उपयोगी शरीर-श्रम के जरिये हमारी बुद्धि का विकास होता है। बुद्धि तो इसके बिना भी बढ़ सकती है, लेकिन यह बुध्दि का विकास नहीं, बिगाड़ होगा। उससे हम गुंडे भी बन सकते हैं। बुद्धि के साथ-साथ आत्मा और शरीर का भी विकास होना चाहिए। इसीलिए यहां की तालीम में हाथ-पैर की मेहनत को खास जगह दी गई है। बुद्धि के साथ आत्मा का विकास होने पर ही बुद्धि का सदुपयोग होता है। वरना बुद्धि हमको बुरे रास्ते ले जाती है और ईश्वरी देन के बदले शाप बन जाती है। अगर आप इस चीज को समझ लेंगे, तो आप को भेजनेवाली संस्थाएं आप पर जो खर्च कर रही है, वह बेकार न जायेगा अपने काम की शान बढ़ा सकेंगे।''

शरीर-प्रेम के एक प्रवचन में गांधीजी ने कहा, ''रोटी के लिए हर एक मनुष्य को मजदूरी करनी चाहिए, शरीर को (कमर को) झुकाना चाहिए, यह ईश्वर का कानून है। यह मूल खोज टोल्सटोय की नहीं है, लेकिन उनसे बहुत कम मशहूर रशियन लेखक टी. एम. बोन्दरेव्ह की है। टोल्सटोय ने उसे रोशन किया और अपनाया।'' इस विचार को गांधीजी भगवद्गीता के तीसरे अध्याय से जोड़ते हैं। जहां यज्ञ की बात कही गई है। गांधीजी कहते हैं, 'जो यज्ञ किए बिना खाता है वह चोरी का अन्न खाता है, ऐसा कठिन शाप यज्ञ नहीं करने वालों को दिया गया है।' यहां यज्ञ का अर्थ है जात-मेहनत या रोटी-मजदूरी ही शोभता है और मेरी राय में यही मुमकिन है।.... जो मजदूरी नहीं करता उसे खाने का क्या हक है? बाइबल में कहा है: ''अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा। दुनिया के 90 फीसदी से भी ज्यादा लोगों का निर्वाह खेती पर होता है। बाकी के दस फीसदी लोग अगर इनकी नकल करें तो जगत में कितना सुख, कितनी शांति और कितनी तंदुरुस्ती फैल जाए! और अगर खेती के साथ बुद्धि भी मिले तो खेती से संबंध रखनेवाली बहुत सी मुसीबतें आसानी से दूर हो जाएंगी। फिर, इस जात-मेहनत के निरपवाद कानून को सब मानें तो ऊंच-नीच का भेद मिट जाए।''

खेती की एवज में मनुष्य दूसरी मजदूरी भी कर सकता है-जैसे कताई, बुनाई, बढ़ईगिरी, लुहारी इत्यादि ।

गांधीजी ने मजदूरों के लिए निकाली जानेवाली एक पत्रिका में लिखा था, ''हिंदुस्तान में एक धंधा (व्यवसाय) करनेवाला आदमी दूसरा धंधा करने में अपनी तौहीन मानता है। इसके सिवा, कुछ धंधे स्वयं ही हलके माने जाते हैं। ये दोनों विचार गलत हैं। जो धंधा मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक है, उसमें ऊंच-नीच का भेद हो ही नहीं सकता। इसी तरह जो धंधा करना हम जानते हों, उससे भिन्न कोई धंधा करने में हमें शरम नहीं माननी चाहिए। हम तो यह मानते हैं कि कपड़ा बुनना और पत्थर फोड़ना, लकड़ी चीरना अथवा लकड़ी फाड़ना या खेत में मजदूरी करना ये सब आवश्यक और आदरणीय धंधे हैं। गांधीजी के भतीजे की पुत्री मनुबेन गांधी ने नोआखली की एक घटना के बारे में गांधीजी के स्वच्छता के बारे में जो विचार थे उसका बढ़िया वर्णन किया है। गांधीजी की कथनी और करनी में अंतर कभी नहीं था। उनके कार्य और व्यवहार द्वारा दूसरों को सीख मिल जाती थी। मनुबेन के शब्दों में ही मैं उस घटना को प्रस्तुत कर रही हूं।

'नोआखली में रास्ते पगडंडियां संकरे थे। कोई कोई रास्ता तो इतना संकरा था कि मुझे पीछे रखकर बापू जी अकेले ही पगडंडी पर चल पाते थे। इस से मेरा सहारा नहीं मिलता था तो दूसरी ओर सहारे के लिए उन्हें लाठी रखनी पड़ती थी।

कहीं भी गंदगी हो वह बापू को बहुत चुभता था। इतने गंदे रास्ते पर उन्हें खुले पैर चलना पड़ता था।

आसपास मैल, थूक, कचरा इत्यादि पड़े थे वह सारा वे आसपास के पत्तों को लेकर साफ करने लगे। मैं कुछ समय के लिए तो चौंक ही गई।

फिर मैंने बापू को गुस्से से कहा : बापूजी, आप मुझे क्यों शर्मिंदा कर रहे हैं? मैं यहां पीछे ही तो थी। फिर भी मुझे न कहकर आपने क्यों साफ किया?

इसके जवाब में बापू हंसे और बोले: तुम कहां जानती हो कि ऐसे काम करने में मुझे कितना आनंद आता है? मैं कहूं उसके बदले में कर ही डालूं तो मुझे कितनी कम परेशानी होती है?

मैंने कहा: 'लेकिन इस गांव के लोग देख रहे हैं।'

बापू ने कहा: तुम देखना। कल से मुझे इतने गंदे रास्ते साफ नहीं करने पड़ेंगे, क्योंकि इससे वे भी सबक सीखेंगे कि ऐसा काम करना तुच्छ काम नहीं है।

मैंने कहा: मान लो सिर्फ कल इसे साफ रखे और बाद में जैसा था वैसा ही गंदा रखे तो आप क्या करेंगे? तो उन्होंने तो मुझे ही पकड़ा। मुझसे कहा: 'मैं तुम्हें देखने के लिए भेजूंगा और रास्ता फिर से इतना गंदा होगा तो मैं साफ करने आऊंगा।'

सच में ऐसा ही हुआ। दूसरे दिन मैं देखने गई तो रास्ता गंदा था लेकिन बापू से न कहकर मैं ही उसे साफ करके लौटी। बापू से कहा: 'मैं रास्ता साफ कर आई। मेरे साथ गांव के लोग भी जुट गए थे, लेकिन आज तो उन्होंने वचन दिया है कि कल से आप नहीं आना, हम ही साफ करेंगे।'

बापू बोले: 'तुमने मेरा पुण्य ले लिया। वह रास्ता मुझे ही साफ करना था। खैर, अब दो काम हुए : एक तो स्वच्छता बनी रहेगी और दूसरा, लोग दिए हुए वचन का पालन करेंगे तो सत्यता सीखेंगे।' उसके बाद वह रास्ता हमेशा साफ रहा।

इस घटना से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि श्रम ही स्वावलंबन है या स्वावलंबन के लिए ही श्रम है।

बापू कहते थे कि जीने के लिए अन्न चाहिए, वस्त्र चाहिए। रहने के लिए घर भी चाहिए। ये सब परिश्रम के बिना प्राप्त नहीं होते। और परिश्रम कारगर करने के लिए उपकरण यानी औजार भी चाहिए। ये औजार भी मेहनत-मजदूरी के बिना तैयार नहीं होते। जीने का सब सामान मेहनत-मजदूरी से ही पैदा हो सकता है। जीना है तो मेहनत-मजदूरी की शर्त कबूल करनी ही चाहिए। शरीर-श्रम जीने का परवाना ही है।

गांधीजी ने हमें गरिमामय जीवन जीने की राह दिखाई है। उस राह पर एक व्यक्ति सौ कदम चले उससे अच्छा है कि सौ व्यक्ति, एक कदम आगे बढ़े। यही तो है सुखी सहअस्तित्व, बिना किसी भेदभाव के।

(साभार आकाशवाणी)

गांधीजी और औद्योगिक संबंध

संजीत कुमार

औद्योगिक संबंध नियोक्ता और कर्मचारी के बीच का संबंध है जो औद्योगिक प्रतिष्ठानों की उत्पादकता, क्षमता, कार्यबलों का मनोबल, गुणवत्ता आदि निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। श्रम प्रबंधन एक संवेदनशील और जटिल पहलू है जिसके कई अवयव है। औद्योगिक संबंध संगठन में कार्यरत प्रबंधन और कर्मचारियों के रवैये, यूनियन की कार्य शैली, रोजगार की शर्तें, उपस्थित मूलभूत सुविधाएँ, शिकायत निपटान प्रणाली और विवाद समाधान प्रक्रियाओं के तौर-तरीके, नियमों और कानूनों की प्रभावकारिता, निर्णय लेने में कर्मचारियों की भागीदारी आदि कारकों से निर्धारित होती है। औद्योगिक संबंध मूल रूप से श्रम प्रबंधन संबंध के विभिन्न पहलूओं के व्यवस्थित अध्ययन से संबंधित हैं। इसका निर्धारण नियोक्ताओं और ट्रेड यूनियनों के बीच निरंतर बातचीत से होता है। ट्रेड यूनियन संगठन में कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करते है एवं उनकी माँगों को उचित मंच पर रखकर उसका समाधान कराते हैं। इस प्रकार औद्योगिक संबंधों में मुख्य नायक ट्रेड यूनियन और संगठन में प्रबंघन के लोग हैं। सामूहिक सौदेबाजी के माध्यम से श्रमिक प्रतिनिधि प्रबंधन के समक्ष अपनी मांगों को रखते है एवं कर्मचारियों के हितों की रक्षा करते हैं।

औद्योगिक संबंधों में गांधीजी के दृष्टिकोण का मूल संगठन में प्रबंधकों एवं श्रमिक वर्ग के बीच के संघर्ष समाधान के साधन के रूप में अहिंसा की उपयोगिता है। उन्होने औद्योगिक संबंधों में श्रमिकों एवं मालिकों के बीच न्यायसंगत और सह-अस्तित्व के भावना की प्रगाढ़ता की बात की। गांधीजी ने शोषण रहित व्यवस्था की वकालत की जिसमें सभी की बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी हो सके एवं श्रमिकों को भी उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण मिल सके। संबंधों की बेहतरी के प्रमुख अवयवों में सत्य, अहिंसा, विवादों का स्वैच्छिक मध्यस्थता और अभाव मुक्ति औद्योगिक संबंध में गांधीवादी दृष्टिकोण का आधार है।

औद्योगिक संबंध नियोक्ता और कर्मचारी के बीच का संबंध है जो औद्योगिक प्रतिष्ठानों की उत्पादकता, क्षमता, कार्यबलों का मनोबल, गुणवत्ता आदि निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। श्रम प्रबंधन एक संवेदनशील और जटिल पहलू है जिसके कई अवयव है। औद्योगिक संबंध संगठन में कार्यरत प्रबंधन और कर्मचारियों के रवैये, यूनियन की कार्य शैली, रोजगार की शर्तें, उपस्थित मूलभूत सुविधाएँ, शिकायत निपटान प्रणाली...।

औद्योगिक संबंधों के मुख्य उद्देश्य

(i) प्रबंधन और श्रमिक वर्ग के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध विकसित करना और बनाए रखना जो देश के औद्योगिक विकास एवं उच्च उत्पादकता के लिए जरूरी है।

(ii) संगठन में सभी वर्गों के बीच आपसी समझ एवं सद्भावना को बेहतर कर श्रमिकों के साथ-साथ प्रबंधन के हितों की रक्षा करना।

(iii) ऐसे औद्योगिक लोकतंत्र विकसित करना जो उद्योगों के प्रबंधन एवं लाभ में श्रमिकों की भागीदारी पर आधारित हो।

गांधीजी ने श्रमिकों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने एवं उचित वेतन और उनके बेहतर जीवन की वकालत की। श्रमिक संगठनों को उन्होने समर्थन किया और श्रमिकों की माँगों को प्रबंधन के सामने रखने के लिए अहिंसात्मक तरीके अपनाने को प्रेरित किया। श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए भी कई प्रयास गांधीजी के द्वारा किए गए।

(iv) औद्योगिक शांति स्थापित करना जिसमे कार्यस्थल पर विभिन्न वर्गों के बीच आपसी विवाद न हो और हड़ताल को रोका जा सके।

(v) श्रमिकों के आर्थिक और सामाजिक हितों की रक्षा करना जिसमें अच्छी कार्य स्थितियों, सुरक्षा व्यवस्था, कल्याण संबंधी कार्य एवं सामाजिक लाभ प्राप्त हो।

(vi) विभिन्न वर्गों के बीच के विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से निपटाना जिससे कि संगठन का कार्य सुचारू रूप से चलता रहे।

(vii) अच्छे औद्योगिक संबंध श्रमिकों के मनोबल को बढाते हैं और अधिक कुशलता से कार्य करने हेतू प्रेरित करते हैं।

अच्छे औद्योगिक संबंधो के लिए गांधीजी का प्रयास

महात्मा गांधी ने अच्छे औद्योगिक संबंध स्थापित करने के लिए कई हड़तालों का नेतृत्व किया। अहमदाबाद मिल हड़ताल इनमें से प्रसिद्ध है जिसमें गांधीजी ने वहाँ कार्यरत मजदूरों के वेतन में वृद्धि और काम के घंटे को कम करने के लिए आंदोलन किया। उन्होंने अहमदाबाद मिल मजदूरों के हड़ताल में पहली बार भूख हड़ताल का प्रयोग किया जो अहिंसक प्रतिरोध का प्रमुख भाग था।

1917 में प्लेग बीमारी के कारण अहमदाबाद मिल मालिकों ने वहाँ कार्यरत श्रमिकों को प्लेग बोनस दिया था परंतु बाद में 1918 में मालिकों ने इसे वापस लेने की कोशिश की जिसका वहाँ के श्रमिकों ने जोरदार विरोध किया। गांधीजी ने इस मामले में हस्तक्षेप किया और शांतिपूर्वक और अहिंसक तरीके से उन्हें हड़ताल करने को प्रेरित किया। उनके समर्थन में गांधीजी ने अपना पहला आमरण अनशन किया जिसके कारण श्रमिकों के वेतन में 35% की बढ़ोतरी मिली और काम के घंटे भी कम किए गए।

गांधीजी ने श्रमिकों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने एवं उचित वेतन और उनके बेहतर जीवन की वकालत की। श्रमिक संगठनों का उन्होने समर्थन किया और श्रमिकों की माँगों को प्रबंधन के सामने रखने के लिए अहिंसात्मक तरीके अपनाने को प्रेरित किया। श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए भी कई प्रयास गांधीजी के द्वारा किए गए। गांधीजी ने औद्योगिक संबंधो में सत्य और अहिंसा के सिद्धांतो को अपनाने पर जोर दिया। उनका ऐसा मानना था कि संगठन में प्रबंधन और श्रमिकों के बीच में संबंध आपसी विश्वास, सम्मान और सहयोग पर आधारित होना चाहिए। किसी भी आपसी विवाद के समाधान के लिए मध्यस्थता एवं बातचीत पर उन्होने जोर दिया।

उद्योगों में स्थानीय उत्पादों को बढावा देने की वकालत की एवं बढते औद्योगिकरण के कारण उससे उत्पन्न अधिक असमानता, बेरोजगारी एवं पर्यावरण प्रदूषण पर चिंता जताई। खादी एवं ग्रामीण उद्योग-धंधों को आत्मनिर्भरता एवं शोषण रहित अर्थव्यवस्था का स्रोत माना।

गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत सामाजिक व्यवस्था में अमीर और गरीब के बीच समान धन वितरण पर जोर

देना है जिसका उद्देश्य सबका कल्याण है। उनका मानना था कि संपत्ति के मालिकों को मजदूरों और समाज के लोगों के हितों को ध्यान मे रखते हुए अपनी संपत्ति का उपयोग करना चाहिए। औद्योगिक व्यवस्था में गांधीजी ने ऐसी व्यवस्था की बात कही जहाँ श्रमिक वर्ग का शोषण न हो। मजदूरों को उचित वेतन और कार्यस्थल पर संगठन मे समुचित अधिकार होने चाहिए।

महात्मा गांधी ने कौशल सीखने पर अधिक जोर देने वाली शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया जो व्यावसायिक और शिल्प आधारित हो। शिक्षा को छात्रों के व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ना चाहिए जिससे कि बच्चे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें एवं उन्हे आगे चलकर रोजगार प्राप्त हो।

21वीं सदी और औद्योगिक संबंधों की चुनौतियाँ

आज के परिपेक्ष्य में औद्योगिक संबंधों की कई चुनौतियाँ है जिसमें वैश्वीकरण, बदलते श्रम बाजार, तकनीकी बदलाव, नए श्रम कानून का लागू होना, संगठन के विभिन्न वर्गों के बीच श्रम कानून की जानकारी का अभाव, प्रबंधन और श्रमिक प्रतिनिधियों के बीच सामंजस्य की कमी, कर्मचारी यूनियन के बीच तालमेल की कमी, ट्रेड यूनियन संगठन मे आंतरिक लोकतंत्र का कमजोर होना आदि है।

वैश्वीकरण ने जहाँ उद्योगों को प्रतिस्पर्धी बनाया है जिससे श्रमिकों की नौकरी का खतरा और कम वेतन पर कार्य करने का दबाव है। उद्योगों को ऐसी स्थिति में श्रमिकों एवं अन्य कर्मचारियों के कौशल विकास पर कार्य करना चाहिए जिससे कि बदलते समय में वो अपने आप को ढाल सके। आज का दौर तकनीक का दौर है। Artificial Intelligence (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और अन्य तकनीकी विकास ने नौकरी के खतरे को बढाया है क्योंकि इसका इस्तेमाल मार्केटिंग, मैन्यूफैक्चरिंग, हेल्थकेयर जैसे कई अन्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से होने लगा है जिससे बेरोजगारी बढ़ने के आसार है क्योंकि कई कार्यरत कर्मचारियों के पास उन तकनीकी भूमिकाओं के लिए आवश्यक कौशल नही होंगे या बहुत अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। ए आई वायस चेंजर के साथ राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी डीपफेक का गलत इस्तेमाल हो रहा है जिससे औद्योगिक संबंधो पर असर हो सकता है। कई उद्योगों में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी दर श्रमिकों को नही दिया जा रहा है साथ ही प्रोविडेंट फंड, ई.एस.आई. जैसे वैधानिक कल्याण संबंधी कानून अभी तक प्रभावी ढ़ंग से लागू नहीं है। सरकारी औद्योगिक प्रतिष्ठानों में भी श्रमिकों के लिए प्रशिक्षण संरचना का अभाव है, जिससे उत्पादकता प्रभावित हो रही है।

भारत सरकार द्वारा लाए गए चार नए श्रम कानून है :–

1. Code on wages
2. Code on Social Security
3. Code on Occupational Safety, Health, and Working Conditions
4. Code on Industrial Relations

वेतन संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता, व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति संहिता और औद्योगिक संबंध संहिता से जहाँ श्रम कानूनों को सरल बनाने के साथ बेहतर सामाजिक सुरक्षा, वेतन और कार्य स्थिति की श्रमिकों को गारंटी मिल सकती है वहीं नियोक्ताओं के लिए कानून अनुपालन प्रक्रिया सरल होती है बशर्ते लाए गए कानून जल्द लागू हो। नये श्रम कानून 29 से अधिक केंद्रीय श्रम कानूनों को 04 नए कोड के तहत समेकित करते है।

महात्मा गांधीजी के औद्योगिक संबंधों के प्रति विचार वर्त्तमान परिपेक्ष्य में प्रबंधन और श्रमिक वर्ग के बीच के विवादों के समाधान हेतू आपसी बातचीत और मध्यस्थता एक प्रभावी और कारगर कदम हो सकता है। साथ ही संगठन की उत्पादकता एवं श्रमिकों के कौशल विकास, उनकी सामाजिक कल्याण योजनाओं को सही तरीके से प्रबंधन द्वारा अपनाए जाये एवं मनोबल को बढ़ाने में साथ ही देश जब वर्ष 2047 तक विकसित और समृद्ध होने का सपना देख रहा है उसमें उद्योग एवं श्रमबल के योगदान को और मजबूत कर सकता है।

(लेखक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक (प्रभारी) हैं।)

खोज गांधी की
(नो! आई हैवन्ट डाइड येट!)

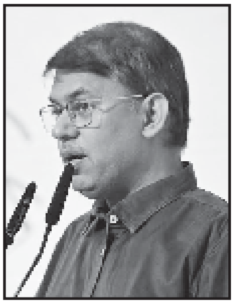

मनोज कुमार राय

लगभग 26-27 वर्ष पुरानी बात है। जीवन के 29वें-30वें वर्ष में अचानक बिना किसी प्रसंग के एक दिन स्वप्न में गांधी सीधे चले आए। काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, वाराणसी से कुछ ही दूरी पर गंगा नदी का 'सामने घाट' है। उसी घाट पर गांधी अपने शाश्वत वेशभूषा और लाठी के साथ कमर तक गंगा नदी में खड़े होकर मुझे आवाज दे रहे थे और मैं उनसे कह रहा था कि 'आप तो स्वर्गवासी हो चुके हैं। मुझे क्यों बुला रहे हैं?' वे कहते हैं 'नहीं, मैं जिंदा हूँ'। नो ! आई हैवन्ट डाइड येट! नींद खुल जाती है और गांधी का कुछ अता-पता नहीं। दो-चार दिन बाद फिर वही दृश्य। वही बुलावा और 'जीवित हूँ', 'तुम आ जाओ'। अबकी बार जगा तो सोच में पड़ गया कि प्रकृति यह कौन सा खेला खेल रही है। लेकिन मन में यह भाव तो आ ही गया कि बात तो कुछ है।

'हे राम' मंत्रोच्चार के साथ जीवन मुक्त हुए गांधी-शहादत वर्ष के लगभग तीन दशक बाद मेरा गांधी शब्द से वास्ता पड़ा था। मेरा बचपन निम्न मध्यवर्गीय भोजपुरी युवा की तरह ही रहा है। भोजपुरी बच्चों की दिनचर्या को कुबेरनाथ राय ने बड़े सुंदर शब्दों में कुछ यूं बयां किया है। वे लिखते हैं- 'ये बच्चे जंगल-जंगल, बाग-बाग, खेत-खेत कोई जड़ी, कोई गाँठ, कोई कन्द, चाहे खाद्य हो या कुखाद्य ढूँढते-खोदते-खाते फिरते हैं; मीठी भटकोंई हो या काषाय जड़, दोनों को चाव से खाते हैं; ज्वार-बाजरे का डण्ठल चूसते हैं और बाजरे का 'सीका' (नये गुम्फ) जानवरों की तरह भरपेट खा जाते हैं। ये धरती का चप्पा-चप्पा छानते हैं कि कहीं विधाता की भूल से कोई रस की बूँद छूट गयी हो, तो उसका आहरण कर लें।' (कुबेरनाथ राय : रस आखेटक, पृ.129) तो मेरे बचपन के भी प्रारम्भिक 7-8 वर्ष कुछ ऐसे ही गुजरे। लेकिन यह सब कब तक चलता!

मेरे पिताजी अपने गाँव से सवा सौ किमी दूर एक इंटर कालेज में अध्यापक थे। कुछ बदली परिस्थितियों में पढ़ने लिखने के लिए पिताजी के पास जाना पड़ा। वहाँ मेरी पढ़ाई सीधे कक्षा 3 से ही शुरू हुई, क्योंकि 'खाद्य-कुखाद्य' की खोज में 2-3 वर्ष पीछे हो गया था। हमारे होश

मेरे पिताजी अपने गाँव से सवा सौ किमी दूर एक इंटर कालेज में अध्यापक थे। कुछ बदली परिस्थितियों में पढ़ने लिखने के लिए पिताजी के पास जाना पड़ा। वहाँ मेरी पढ़ाई सीधे कक्षा 3 से ही शुरू हुई, क्योंकि 'खाद्य-कुखाद्य' की खोज में 2-3 वर्ष पीछे हो गया था। हमारे होश संभालने तक या कह सकते हैं कि स्कूल-प्रवेश के पहले मेरे आसपास गांधी किसी खास आकर्षण के रूप में मुझे नहीं दिखे थे।

संभालने तक या कह सकते हैं कि स्कूल-प्रवेश के पहले मेरे आसपास गांधी किसी खास आकर्षण के रूप में मुझे नहीं दिखे थे। 'स्मृति' पर जोर देने से दो जगह गांधी का नाम सुनाई देने की याद है। स्थानीय बस्ती में पिताजी की लोकप्रियता बहुत थी। लोकप्रियता के 'डाक-पते' के मामले में पिताजी गांधी के नजदीक थे। मेरे घर का पता था-'रायसाहब सिंधोरा वाराणसी' और गांधी का पता होता था-'महात्मा गांधी भारत में जहां कहीं भी हों'। तो पिताजी की लोकप्रियता का लाभ उठाने के लिए चुनावी नेता गण आते थे। 1977 का आम चुनाव था। एक मँझले कद के नेता कुछ हल्के रंग का कुर्ता पहने हुए दिखे थे। पिताजी भी उनके साथ थे। नारा लगाया जाता था-'गांधी लोहिया जयप्रकाश। भारत के तीन प्रकाश।' बड़े होने पर पता चला कि उस चुनाव में राजाराम शास्त्री हार गए थे। राजाराम शास्त्री एक बड़े शिक्षाविद थे। काशी विद्यापीठ के कुलपति भी रह चुके थे।

दूसरी बार गांधी से पाला पड़ा अपने प्राथमिक विद्यालय में। कक्षा 5 का विद्यार्थी था। तब वहाँ एक नए-नए अध्यापक आए थे। उन्हें हम सब 'दुबे पंडीजी' कहते थे। उन्होने प्रार्थना के बाद एक नई और सुंदर प्रथा शुरू की- प्रार्थना के बाद भारतमाता, महात्मा गांधी, नेहरू, सुभाष, आजाद, भगत सिंह आदि के जय-जयकार लगवाकर। वक्त ने मुझे भी प्रार्थना कराने का अवसर प्रदान किया। मुझे वह दिन अच्छी तरह से याद है जब मैं 'भारतमाता' की जय के बाद गांधी-नेहरू को लांघते हुए सीधे 'सुभाष-आजाद' पर चला गया और मैं प्रतिदिन ऐसा करता था। गांधी-नेहरू के उच्चारण के समय मुंह से आवाज नहीं निकालता था। साथ वाला लड़का गला फाड़कर चिल्लाता था। क्योंकि उसे दूनी मेहनत करनी होती थी। क्यों आगे बढ़ जाता था? यह रहस्य बहुत बाद में समझ आया।

पाठ्यक्रम में भी गांधी पर अध्याय थे। एक कविता आज भी स्नायु-मण्डल में स्थायी रूप से अंकित है जिसके रचयिता सियारामशरण गुप्त थे-'हम सब के थे प्यारे बापू/सारे जग से न्यारे बापू।'। पढ़ा और याद भी किया था। पर था यंत्रवत ही ।

फिर आया समय विश्वविद्यालय में पढ़ने का। बीएचयू आ गया था। विषय था-अर्थशास्त्र, गणित और सांख्यिकी। वहाँ सभी दलों/संगठनों के नेताओं से मित्रता थी। पढ़ाई और नौकरी के बीच समानुपाती रिश्ता से हम सब परिचित हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के समय गांधी-नेहरू-टैगोर को एक अनिवार्य पाठ्यक्रम के अंतर्गत पढ़ने का अवसर मिला। पढ़ा और फेल-पास हुआ। पर गांधी से यहाँ भी जुड़ नहीं पाया था। उसी दौरान हमारे एक सीनियर थे दिलीप त्रिगुणायत जी। उन्होने आचार्य जे बी कृपलानी की पुस्तक - Gandhi : His Life And Thought पढ़ने को दिया। सहमति-असहमति के साथ पढ़ गया। आकर्षण या बंध जाने वाली स्थिति अब भी नहीं बन पाई थी। समय अपनी गति से चल रहा था। दुनियादारी और सामाजिकता का दायरा बढ़ता जा रहा था।

इसी बीच एक किताब हाथ में आई 'गांधी दि मैन'। लेखक थे-एकनाथ ईश्वरन। शानदार किताब है। पहले अध्याय का नाम है - 'व्यक्त्विान्तरण'। भाषा अद्‌भुत है। साहित्य की शब्दावली में 'पोएटिक लैंग्वेज'। भीतर तक प्रवेश कर गई थीं उसकी बातें। पुस्तक के माध्यम से दबा बीज अंकुराने लगा था।

एक और मजेदार घटना घटी। एक दिन बैंक में पैसा निकालने के लिए लाइन में लगा था। 5-7 लोग आगे थे। तभी एक 18-20 वर्ष का नवयुवक आया और सीधे खिड़की में हाथ डाल दिया। मैंने उसे टोका। उसने रोष भारी नजरों से देखा और कहा-'मैं जानता हूँ कि आप कितने बड़े गांधी हैं'? माथा ठनका! लाइन में खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार करने के लिए कहना या खड़ा होना भी गांधी है।

गांधी की खोज शुरू ही थी। इस बार दो पतली-2 पुस्तकें हाथ में आईं। वे थीं -'पत्र मणिपुतुल के नाम' लेखक कुबेरनाथ राय और दूसरी Gandhi: A Very Short Introduction लेखक भीखू पारेख। दोनों के प्रकाशन वर्ष में लगभग 17 वर्ष का अंतर है। श्री राय की पुस्तक गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से 1980 में प्रकाशित हुई थी और भीखू पारेख की पुस्तक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से 1997 में । भीखू पारेख का लेखन सुंदर और सुग्राह्य था।

हालांकि इस पुस्तक में भीखू पारेख एक जगह लिखते हैं- He either ignored or took a dim view of the intellectual, scientific, aesthetic, sensuous, and other aspects of life. He rarely saw a film, read a book of poetry, visited an art gallery, watched a game or took any interest in history, archaeology, modern science, wildlife, unspoilt nature, and India's natural beauty- (भीखू पारेख, Gandhi: A Very Short Introduction, पृ. 97-99) मन थोड़ा खिन्न हुआ यह सब पढ़कर । श्री राय की पुस्तक 'पत्र मणिपुतुल के नाम' को पढ़ने में जो आनंद आया वह अद्‌भुत था। वैसे पुस्तक-शीर्षक से पता नहीं लगता है कि यह पुस्तक गांधी-चिंतन को केंद्र में रखकर लिखी गई है। पत्र शैली में लिखे गए इसके निबंध अद्वितीय हैं। इस पुस्तक का असर यह हुआ कि कुबेरनाथ राय और गांधी एक ही साथ प्रेत की तरह चढ़ बैठे।

विद्यार्थी जीवन में भी लाइब्रेरी के 'टीचर्स-रूम' में बैठने की आदत पड़ चुकी थी । वहाँ चर्चा और नई-नई किताबों से रूबरू होने का शानदार अवसर था। वहाँ गांधी के पक्ष-विपक्ष दोनों तरह के लोग बैठते थे। पारिभाषिक शब्दों पर गांधी-कथन की तलाश और उसकी मीमांसा रोज का शगल बन गया। इन्हीं दिनों 'सत्य का प्रयोग' से परिचय हुआ। भाषा की सहजता, मनुष्य की सरलता, उन्मुक्तता और अपनी खोज के साथ असीम धैर्य से सत्य के प्रयोग करते हुए 'हिमालय जैसी भूलों' को अत्यन्त सहजता से कबूल करने का साहस दिखाने वाले इस 'सत्य के प्रयोग'...।

कुबेरनाथ राय 'पत्र मणिपुतुल के नाम' में लिखते हैं-"विश्व-इतिहास में 19वीं शती तक आते-आते भारतवर्ष अपनी प्रतिष्ठा का मुकदमा हार चुका था। परन्तु उसे अन्तिम पराजय से बचाने वाले भारतीयों में तीन नाम विशेष रूप से आते हैं : विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ और तीसरा एक अपेक्षाकृत अल्पज्ञात नाम है सर आनन्द कुमारस्वामी। पहले ने उसकी दार्शनिक महिमा को विश्व-इतिहास की अदालत में उपस्थित किया, दूसरे ने साहित्यिक महिमा को और तीसरे ने उसकी कलात्मक गरिमा को। इन तीनों ने मिलकर भारतीय अस्मिता को पश्चिम के मुकाबले में खड़ा ही नहीं किया, प्रतिष्ठित किया। अस्मिता का अर्थ व्यक्तित्व होता है। परन्तु भारत की आत्मा को, जो अस्मिता से भी सूक्ष्मतर-गम्भीरतर सत्ता है, विश्व-इतिहास की अदालत में उपस्थित करना शेष था और यह काम किया था महात्मा गांधी ने अपने व्यापक और सहज जीवन के द्वारा। विश्व-इतिहास के आधुनिक दौर में यही चार हमारे वकील हैं : विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ, कुमारस्वामी और गांधी । इन्हीं के बल पर हम अपनी फिर खोयी हुई प्रतिष्ठा पा गये।" (कुबेरनाथ राय : पत्र मणिपुतुल के नाम,पृ.36)

अहसास हुआ कि 'अरे! गाँधीजी ऐसे थे '!

विद्यार्थी जीवन में भी लाइब्रेरी के 'टीचर्स-रूम' में बैठने की आदत पड़ चुकी थी । वहाँ चर्चा और नई-नई किताबों से रूबरू होने का शानदार अवसर था। वहाँ गांधी के पक्ष-विपक्ष दोनों तरह के लोग बैठते थे। पारिभाषिक शब्दों पर गांधी-कथन की तलाश और उसकी मीमांसा रोज का शगल बन गया। इन्हीं दिनों 'सत्य का प्रयोग' से परिचय हुआ। भाषा की सहजता, मनुष्य की सरलता, उन्मुक्तता और अपनी खोज के साथ असीम धैर्य से सत्य के प्रयोग करते हुए 'हिमालय जैसी भूलों' को अत्यन्त सहजता से कबूल करने का साहस दिखाने वाले इस 'सत्य के प्रयोग' ने बांध ही लिया ।

तो ग्रंथालय के माध्यम से 'Half naked fakir'-'अधनंगा फकीर' ही प्रत्यक्ष जीवन में अधिक-अधिक आता गया। इसी पढ़ने लिखने के क्रम में तीन व्यक्ति और मिले। प्रो नागेश्वर प्रसाद, डॉ एस एन राय और अमरनाथ भाई। प्रो नागेश्वर प्रसाद ने किताबें उपलब्ध कराई। डॉ एस एन राय ने दिल्ली की यात्रा कराई। अमरनाथ भाई ने श्री ठाकुरदास बंग और श्री सिद्धराज ढड्ढा को चिट्ठी लिखने के लिए कहा। मैंने इन दोनों लोगों को चिट्ठी लिखी। जवाब आया और कहा गया कि कभी इधर आना हो तो आप आश्रम में जरूर आएं। इस दौरान मैंने जो कुछ लिखा पढ़ा था, वह भी उन लोगों को भेज दिया। उन लोगों को काफी पसंद आया। वे लोग बार-बार बुलाते भी रहे। सिद्धराज ढड्ढा से मेरी भेंट नहीं हुई और उनका देहांत भी हो गया।

ठाकुरदास बंग से मेरी निकटता थोड़ी ज्यादा हो गई थी और वर्धा में मैं जहां रहता था उधर ही उनका पुश्तैनी घर था। तो आते जाते उनसे प्राय: भेंट हो जाती थी। आश्रम में ही मैंने एक दिन उनसे गांधी से मुलाकात के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि वे पहली बार आश्रम में 1936-37 में आए थे और उन्होंने गांधी जी से मिलने का समय मांगा। गांधी जी ने दूसरे दिन शाम को 6:45 बजे का उनको समय दिया था। वे वहां आश्रम में साइकिल से पहुंचे। गांधी जी ने नियत समय अपना दरवाजा खोला और अंग्रेजी में बोला 'हू इज ठाकुरदास'। मिलते ही उन्होंने पहला सवाल किया कि बापू आप अंग्रेजी क्यों बोल रहे हैं। तो गांधी ने कहा कि अरे तुम्हारे नाम से मुझे कंफ्यूजन हो गया था। मुझे लगा कि तुम बंगाली हो और बंगालियों का हाथ हिंदी में थोड़ा तंग होता है। इसलिए मैंने सोचा कि तुमको कोई कष्ट न हो। मुझे तुरंत वह दृष्टांत याद आ गया कि किस तरह से ईश्वर अपने भक्तों के प्रति या कोई गुरु अपने शिष्य के प्रति कितना सतर्क और सावधान रहता था। एक दूसरा सवाल भी ठाकुरदास से मैंने पूछा। गांधी तो अपरिग्रह के पालक थे और उसे पर जोर भी देते थे। तो मुझे लगता है कि वह उन चीजों को जरूर आश्रम में नहीं रखते थे जिनका वह प्रयोग नहीं करते थे। उन्होने हामी भरी। आश्रम में एक बक्सा है। बक्से में बहुत सारी चीज रखी हुई है। उन वस्तुओं में एक माला भी है। तो मैंने उनसे पूछा -'यदि यहाँ माला रखा हुआ है तो क्या कभी आप लोगों ने माला फेरते हुए उनको कभी देखा है? उन्होंने कहा-'यह तो नहीं देखा और न ही मेरा ध्यान ही कभी उधर गया। लेकिन मैं तो आश्रम में बहुत दिनों तक उनके साथ रहा। आश्रम में किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ था। लेकिन वे मुझे माला फेरते हुए कभी नहीं दिखे'। (निजी बातचीत के आधार पर)

तो अब गांधी धीरे-2 समझ में आने लगे थे। बचपन में गांधी से बनी दूरी भी स्पष्ट होने लगी थी। वही झूठे आरोप -'देश विभाजन, पाकिस्तान को रूपये देना, नेहरू को उत्तराधिकारी बनाना, भगत सिंह को फांसी से बचाने की कोशिश नहीं करना, सुभाष चंद्र बोस को कांग्रेस से बाहर करवा देना' आदि-आदि। आरोपों की लंबी फेहरिश्त है। समझ में आ गया कि गांधी की खोज इससे आगे बढ़कर करनी होगी।

फिल्मकार रिचर्ड एटनबरो के नाम से हम सब परिचित हैं। वे भी गांधी से प्रभावित लोगों में से थे। गांधी की मृत्यु के बाद उनपर एक फिल्म बनाना चाहते थे। 1960 के दशक में इसके लिए जवाहरलाल नेहरू से बात भी की थी। नेहरू ने न सिर्फ स्वीकृति दी, समर्थन का भी वादा किया। मगर फिल्म तब न बन सकी। दो दशक बाद अंतत: एटनबरो की यह फिल्म 1982 में बनकर तैयार हुई। यह ऑस्कर के लिए 11 श्रेणियों में नामांकित हुई, और 8 अवार्ड जीत भी लिए। यह एक अनूठा इतिहास है। आप सबको जानकर आश्चर्य होगा कि इस फिल्म को मैंने बहुत बाद में देखा। पर पूरा नहीं देख पाया। क्योंकि तब तक फिल्मों में मेरी गहरी अरुचि हो गई थी। आज भी वही स्थिति है।

गांधी तो अपरिग्रह के पालक थे और उसे पर जोर भी देते थे। तो मुझे लगता है कि वह उन चीजों को जरूर आश्रम में नहीं रखते थे जिनका वह प्रयोग नहीं करते थे। उन्होने हामी भरी। आश्रम में एक बक्सा है। बक्से में बहुत सारी चीज रखी हुई है। उन वस्तुओं में एक माला भी है। तो मैंने उनसे पूछा -'यदि यहाँ माला रखा हुआ है तो क्या कभी आप लोगों ने माला फेरते हुए उनको कभी देखा है? उन्होंने कहा-'यह तो नहीं देखा और न ही मेरा ध्यान ही कभी उधर गया। लेकिन मैं तो आश्रम में बहुत दिनों तक उनके साथ रहा। आश्रम में ...।

इस प्रकार 'खोज गांधी की' मेरे लिए किताबों के माध्यम से ही होती रही।

गांधी गीता के बारे में लिखते हैं-"सन 1889 में मैं गीता से परिचित हुआ तब से वह मेरी माता है। मैं हर कठिनाई में मार्गदर्शन के लिए उसकी ओर देखता हूँ, और मुझे उससे अपेक्षित सहायता प्राप्त होती है।... यह आध्यात्मिक माँ अपने भक्त को उसके जीवन में सदैव अभिनव ज्ञान, आशा और शक्ति प्रदान करती है।" (एकनाथ ईश्वरन, गांधी दि मैन, पृ. 44) आत्मकथा में गांधी ने गीता (262-63) के जिन दो श्लोकों को उद्धृत किया है उनमें काम से क्रोध, क्रोध से सम्मोह, सम्मोह से स्मृति भ्रंश, स्मृति भ्रंश से बुद्धि नाश और बुद्धि नाश से सर्वनाश की बात कही गयी है।

गीता से मैं भी परिचित था। बचपन में पढ़ा भी था। कुछ असर जरूर हुआ होगा। लेकिन जब मैंने गांधी-पथ पर चलते हुए गीता को समझने की कोशिश की तो कुछ चीजें स्पष्ट हुई। स्थिति-प्रज्ञ से संबन्धित श्लोकों का मर्म भी समझ में आया। पर श्मशान वैराग्य से आगे मामला बढ़ नहीं पाता है। फिसलता ही रहा हूँ।

इस पुस्तक को पढ़ते समय एक बात और ध्यान में आती है। वह यह कि गांधी के उभार के समय भारत में एक से बढ़कर एक वयोवृद्ध दिग्गज नेता, महान साधक और संत, कवि और कलाकार, वैज्ञानिक, दार्शनिक और पूंजीपति समकालीन भारतीय रंगमंच पर थे भी और उभर रहे थे। फिर भी उन्होंने कभी भी इन्द्र-ग्रंथि को, किसी के प्रति ईर्ष्या-भाव को, अपने मन में कोई जगह नहीं दी। सबको मान-सम्मान दिया। दुख की घड़ी में उन्हें आवश्यकतानुरूप सेवा की, सबको अपनी प्रतिभा के अनुरूप आगे बढ़ाने का समुचित अवसर प्रदान किया। पर ऐसा करते हुए उन्होंने सत्य शोधक की अपनी मर्यादा-रेखा का कभी विस्मरण नहीं किया।

गांधी के जीवन में जब-जब ईर्ष्या की महाशक्ति झांकने को हुई कि एक वैष्णव की विनम्रता से उन्होंने नमन किया और अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ते गये। काम को उन्होंने ब्रह्मचर्य की लगाम लगा दी; ईर्ष्या की अग्नि उन्हें दग्ध न करे, इसके लिए उन्होंने अहंकार का त्याग कर शून्यवत होने की साधना की। 'सेवक की प्रार्थना' नामक एक कविता भी गांधी ने लिखी है -

"हे नम्रता के सम्राट!

दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी।

...... हे भगवन तू तभी मदद के लिए आता है

जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।"

समय के साथ जीवन में जैसे-2 विभिन्न प्रकार के अवसर मिलते गए गांधी से निकटता भी बढ़ती गयी। अब मेरे समक्ष हँसते-बोलते गाँधीजी आ गए थे। पर्दे पर ही नहीं विशुद्ध उनकी आवाज सुनी। शांत, स्थिर और मद्धिम स्वर, जो सीधे मन में प्रवेश कर गयी। धीरे-2 यह बात भी समझ में आने लगी थी कि बाहर से अत्यन्त खुरदरा और अनाकर्षक दिखने वाले इस सनातनी बूढ़े ने चार्ली चौप्लिन, जॉन स्मट्स, रोमा रोला और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभाशाली लोगों को कैसे आकर्षित किया होगा।

रेहाना तैयब आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाली मशहूर शख्सियत थीं। उन्होने गांधी से प्रथम मुलाकात पर जो साक्षात्कार दिया है उसे हम सबको पढ़ना/जानना चाहिए। वे बताती हैं -"उस दरवाजे से दो व्यक्ति दाखिल हुए, एक तो कवि ठाकुर, ऊँचे और क्या हसीन, जैसे पुराने जमाने के कोई ऋषि, सफेद दाढ़ी, सफेद बाल, वैसी ही मखमल की लम्बी टोपी और रेशमी चोगा। दूसरा उनके साथ था छोटा सा, पतला सा बदसूरत आदमी जो मोटे गाढ़े का कुर्ता, गाढ़े की टोपी, पजिया और छोटी सी धोती पहने हुए था। ... कवि ठाकुर तो मेरे देवता थे। उस वक्त दिल के उपर कुछ असर पड़ा बापू की शख्सियत का और यही ख्याल आया कि यह छोटा सा आदमी ज्यादा बड़ा आदमी है ।" (पीएमएमएल, नई दिल्ली, मौखिक इतिहास इंटरव्यू, 5/9/1967) जीवित रहते हुए तो इन प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित किया ही, परन्तु धरा से जाने के बाद भी मार्टिन लूथर किंग, नेलसन मंडेला, ओबामा, लेक वॉलेसा, पेट्रा केली आदि तक यह गांधी पहुंचे कैसे? कौन-सी शक्ति है यह? आइंस्टीन का यह कथन कि 'हाड़-मांस का बना एक ऐसा मनुष्य इस पृथ्वी पर जन्मा था, इस पर आने वाली पीढ़ियाँ विश्वास नहीं कर पायेंगी'... विश्वसनीय लगने लगा था। इसलिए आइंस्टीन के अपने अध्ययन कक्ष में चार चित्र टंगे थे- न्यूटन, फैराडे, मैक्सवेल और गांधी। (भीखू पारेख, डिबेटिंग इंडिया, पृ .233)

समय के साथ मानसिक हलचल जैसे-जैसे समझ में आती गयी, वैसे-वैसे इस वाक्य पर विश्वास होने लगा। कानों से टकरायी वही शांत और गंभीर आवाज :I have to search my peace in semi turmoil'; अर्थात् 'मुझे अपनी शांति आँधी में से ही ढूँढ़नी है।' सेवा रूपी जीवन को मोक्ष का साधन मानने वाले महात्मा। आध्यात्म प्रवण। परन्तु उनकी आध्यात्मिकता मात्र शब्द-जाल न थी। एक बार किसी ने उनसे कहा भी कि इतना धर्म-अध्यात्म आदि की चर्चा करते रहते हैं तो हिमालय क्यों नहीं चले जाते। उन्होंने जो जबाव दिया वह बड़ा ही मजेदार है। उन्होंने कहा मैं

हिमालय को अपने पॉकेट में लेकर घूमता हूँ। तो उनका अध्यात्म जीवन से दूर, गिरि-कंदराओं में ध्यान लगाकर बैठने वाली न थी अपितु श्रीमद भागवत और मानस से प्रेरित थी- 'सिर भर जाऊँ उचित अस मोरा......'। यहीं, इस संसार में रहकर, मनुष्य की तरह जीवन जीकर मुझे अपनी शांति प्राप्त करनी है: यह कर्मप्रवण आध्यात्मिकता थी। कह सकते हैं कि मन में दयानंद-विवेकानंद से महात्मा जी तक का एक महामार्ग निर्मित हो गया था। इस महा मार्ग पर कदम तेजी से बढ़ने लगे।

दांडी मार्च के समय काका कालेलकर से किसी प्रसंग में कहे गए गांधी के इस कथन को कि 'जिस तरह एक गर्भवती महिला अपने गर्भ में पल रहे बच्चे की खातिर अपने स्वास्थ्य की देखभाल करती है, मैं भी अपना ख्याल उस स्वराज के लिए रखता हूं जो मेरे गर्भ में है', और 'मैं इस दुष्ट सरकार को नष्ट करने के लिए पैदा हुआ हूँ।' इस बात की पुष्टि करती है। हमें उनके जीवन के इस पक्ष को समझने में कई बार कठिनाई भी होती है। कारण यह है कि उन्हें हम खंड-2 में देखने/समझने की कोशिश करते हैं, जबकि वे प्राय: कहा करते थे कि "मेरा जीवन एक अविभाज्य इकाई है।.... खण्ड-पद्धति पर उसका निर्माण नहीं हुआ है। सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, अस्पृश्यता, हिन्दू-मुस्लिम एकता और अन्य कई चीजें ... एक ही पूर्ण वस्तु, सत्य के अविभाज्य अंग हैं।" (सम्पूर्ण गांधी वांगमय, खंड 61, पृ.163-64)

पठन-पाठन और संग-साथ से यह बात समझ में आ गई थी कि गांधी के पास असाधारण सर्जनात्मकता थी-जीवन निर्माण से लेकर व्यक्ति और व्यक्तित्व निर्माण तक। वे केवल भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रेरणा पुरुष के रूप में भारतीय राजनीति ही नहीं बल्कि लेखन समेत समग्र रचनात्मक कार्यक्रमों के प्रेरणा-पुरुष भी थे। गांधी के काल में सेवाग्राम वस्तुत: एक लोकधानी के रूप में विकसित हो चुकी थी। वायसराय से लेकर गाँव के किसान तक आश्रम पहुँच रहे थे। गांधी के पास सबके लिए कुछ-न कुछ रहता ही था। हर झोली में प्रसाद मिलता था। फलस्वरूप संपूर्ण भारतीय साहित्य, कला, दर्शन, कृषि, उद्योग आदि भी उनके रचनात्मक प्रभाव क्षेत्र में आ गये।

कुबेरनाथ राय सही लिखते हैं- "गांधी की शब्दावली देशी थी और उसका मर्म बहुत गंभीर होता था। परंतु आज का बुद्धिजीवी सतही और राजनीति आरोपित अर्थ से ज्यादा समझने में असमर्थ है। फलत: गांधी-चिंतन की बारीकी को वह समझ नहीं सका। जब 'हिन्द स्वराज्य' पहले पहल प्रकाशित हुआ, तो इन लोगों ने, देश के भीतर और देश के बाहर भी, इसका उद्देश्य न समझ कर खिल्ली उड़ाई थी। गोखले ने इसे पढ़कर कहा था "मिस्टर गांधी स्वयं साल भर बाद इस किताब को नष्ट कर देंगे।'' (कुबेर नाथ राय, चिन्मय भारत, पृ.187-88) पर हुआ क्या? गांधी एक शब्द के अलावा किसी भी प्रकार के परिवर्तन के लिए तैयार नहीं थे।

गुरु गोविन्द सिंह के नाम से हम सब परिचित हैं। उन्होंने भी गांधी की तरह 'अभय' का उपदेश दिया था। याद कीजिये। एक ओर एशिया की सबसे बड़ी विकराल वाहिनी, मुगल सेना और दूसरी ओर गरीब और कुचले हुए मुट्ठी भर सिख! तो भी उन्होंने कहा था 'बाज बटेर एक लड़ाऊँ। तब गुरु गोविन्द नाम धराऊँ।' आत्मशक्ति से सम्पन्न होने पर बटेर भी बाज से भिड़ सकता है और सिख गुरु के दिये 'अभय' के पीछे यही राज है। यही राज है गांधी की शक्ति का भी कि अंग्रेज-शासन के मुकाबले में 'दब्बू भारतीय' भी तनकर खड़ा हो गया। लेकिन यह सब एक दिन में नहीं हुआ था। इसकी तैयारी वे अपने अफ्रीका-प्रवास के दिनों से कर रहे थे। अपने देश से दूर, प्रवास के कर्म संकुल जीवन में भी वे भीतर-भीतर एकान्त होने की चेष्टा में रहते थे। कुबेरनाथ राय लिखते हैं-"उनके जीवन में आत्मचिन्तन का वह पूर्वपक्ष बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। एक दफे की बात है, पुतुल, जब गांधी 'तोलस्टोय फार्म' में थे। एक संध्या को वे शान्त तल्लीन बैठे थे, उनकी दृष्टि एक विषाक्त गेहूँअन साँप पर टिकी थी जो धीरे-धीरे उनके नंगे घुटने तक चढ़ आया था, पर काट नहीं रहा था। उसी समय उनके सहयोगी एक अंग्रेज सज्जन आये और यह तमाशा देखकर स्तब्ध रह गये। वे चौंक कर बोले, "मिस्टर गांधी, क्या मृत्यु के साथ जुआ खेल रहे हो?" गांधी नजर उठाकर मुस्करा दिये। इसी बीच साँप स्वयं नीचे उतरकर चला गया। यह दृश्य उपस्थित करता है

गांधी को 'भय' के साथ एक अहिंसक युद्ध में रत। गांधी अपने मनोबल की परीक्षा और प्रशिक्षण दोनों साथ-साथ कर रहे थे। यह छोटी-सी घटना बहुत-सी बातों का इशारा कर देती है जो उनके अन्तर में घटित होती रहीं, पूरे अफ्रीकी-प्रवास में।" (कुबेरनाथ राय : पत्र मणिपुतुल के नाम, पृ.53)

गांधी सदैव बड़ी-2 बात करने की अपेक्षा जमीन पर नजर गड़ाए हुए थे। एक बार किसी प्रवास में किसी का सवाल आया : मुझे क्या करना चाहिए? गांधी ने जो नुस्खा समझाया वह हमारी किताबों में कैद है। दरअसल इस स्वतंत्र देश के लिए उन्होंने एक कसौटी प्रदान की थी जिस पर अपने मन के प्रश्नों को कसना आवश्यक है। वे कहते हैं- 'मैं आपको एक नुस्खा बताता हूँ। जब कभी कोई योजना बनाते हुए या उसको कार्यान्वित करते हुए आपके मन में प्रश्न उठे कि 'क्या करें?', तब अपनी आँखों के समक्ष समाज की अंतिम सीढ़ी पर खड़े सबसे आखिरी आदमी को लाइए। जिससे उसका हित हो, वही करना चाहिए...।

किसी दूसरे को नीचा दिखाकर खुद सम्मानित होने वाले भाव को देख गांधीजी ताज्जुब करते थे। अफ्रीका में जब उन्हें उठाकर फेंका गया था तभी उनके मन में यह भाव उत्पन्न हुआ था "मुझे जो कष्ट सहना पड़ा है, सो तो ऊपरी कष्ट है। वह गहराई तक पैठे हुए महारोग का लक्षण है। यह महारोग है रंग-द्वेष। यदि मुझमें इस गहरे रोग को मिटाने की शक्ति हो, तो उस शक्ति का उपयोग मुझे करना चाहिए। ऐसा करते हुए स्वयं जो कष्ट सहने पड़ें सो सब सहने चाहिए और उनका विरोध रंग-द्वेष को मिटाने की दृष्टि से ही करना चाहिए।' (सत्य के प्रयोग, पृ.126)यहीं से बाजी पलट गयी। वे जानते थे कि प्रतिक्रिया से जन्म लेने वाला व्यक्ति, समाज और देश भी द्वेष मूलक और प्रतिक्रियावादी होगा। गांधी ने जातिगत भेदभाव के खिलाफ न केवल लड़ाई लड़ी अपितु पत्नी और रिश्तेदारों को भी उनकी अनिच्छा के बावजूद इस पवित्र युद्ध में झोंक दिया। उनका यह प्रस्ताव कि एक दलित महिला को स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में नियुक्त किया जाए और जवाहर, पटेल और राजेन्द्र बाबू उसके मंत्री के रूप में काम करेंगे, उनके साहस और आखिरी आदमी की चिंता को हमारे सामने रखते हैं। सहज ही कल्पना की जा सकती है कि गांधी के समक्ष एक तरफ 'अंग्रेज भारतीय गिरमिटियों को अपने हाथ से ढेर कर सकते हैं' का मुगालता पाले दंभी चर्चिल खड़े हैं तो दूसरी तरफ 'मुस्लिम राज्य के लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ' का उद्घोष करने वाले जिन्ना और केवल दलित को केंद्र में रखकर राजनीति की नब्ज पर अंगुली रखने वाले अंबेडकर थे। लेकिन गांधी का इनमें किसी से कोई द्वेष नहीं था।

गांधी सदैव बड़ी-2 बात करने की अपेक्षा जमीन पर नजर गड़ाए हुए थे। एक बार किसी प्रवास में किसी का सवाल आया : मुझे क्या करना चाहिए? गांधी ने जो नुस्खा समझाया वह हमारी किताबों में कैद है। दरअसल इस स्वतंत्र देश के लिए उन्होंने एक कसौटी प्रदान की थी जिस पर अपने मन के प्रश्नों को कसना आवश्यक है। वे कहते हैं-'मैं आपको एक नुस्खा बताता हूँ। जब कभी कोई योजना बनाते हुए या उसको कार्यान्वित करते हुए आपके मन में प्रश्न उठे कि 'क्या करें?', तब अपनी आँखों के समक्ष समाज की अंतिम सीढ़ी पर खड़े सबसे आखिरी आदमी को लाइए। जिससे उसका हित हो, वही करना चाहिए, वही योजना अमल में लानी चाहिए।' इससे सरल शब्द और क्या हो सकता है? अर्थशास्त्र के लिए इससे बढ़िया सिद्धांत और क्या हो सकता है? गांधी ऐसे ही नहीं दांडी यात्रा में स्वयं सीकर एक कमीज भेंट देने वाली लड़की से तीस कोटि शर्ट मांगते है। बुद्ध की महाकरुणा का सगुण रूप हैं गांधी। गांधी ने हमारे भीतर की ताकत को महसूस कराया। हमारी-आपकी करुणा को जगाया, संवेदनशील बनाया और फिर कभी चरखा कातने को कहते हैं, तो कभी कपड़ों की होली जलवाते हैं, नमक बनवाते हैं। मामूली कामों को प्रतिरोध का प्रतीक, और क्रांति का हथियार बनाकर हाथ में थमा देते हैं और आगे बढ़ने की ललक पैदा कर देते हैं।

लंदन में विलायती बाबू के इस सवाल पर कि 'आप अर्धनग्न क्यों हैं?', का जबाव कि 'मेरे हिस्से के कपड़े आपकी रानी ने पहन लिए हैं, इसलिए मैं अर्ध नग्न हूँ।',

अद्भुत गूढ़ार्थ जबाव है। 'पांत के आखिरी आदमी', जो आज भी अभिशप्त जीवन जी रहा है उसको ध्यान में रखकर, उसे जगाते हुए ही गांधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम लड़ा। महज एक वाक्य में अर्थव्यवस्था के दुष्चक्र को बड़े सलीके से विलायती बाबू के सामने रख दिया।

धीरे-धीरे समझ में आता गया कि गांधी, दरअसल भीरुओं की ताकत है। हम अपने जीवनानुभव से जानते हैं कि प्राय: आम व्यक्ति, शांति चाहने वाला व्यक्ति, विरोध से डरता है, क्रांति से डरता है, हथियार उठाकर बढ़ने से डरता है। वह कानून, पुलिस, जेल, सरकार के पचड़े में पड़ने से बचता है। और मौत से तो हम सब ही डरते हैं। गांधी उसको वहीं से उठाते हैं और निरभ्र आकाश में उछाल देते हैं। अब वह चरखा कातता है, तकली चलाता है, रचनात्मक कार्यक्रमों में अपने को झोंक देता है। इनका कोई न रंग है, न मजहब है, न भाषा है। बस लय और संगीत है जो एकीकृत प्रतिरोध के रूप में सामने प्रकट हो जाती है, और ये काम तो कोई गुनाह नहीं । इसके लिए यदि जेल भी जाएं, तो भीतर कोई अपराध बोध नहीं उल्टे गर्व होगा। और जब जेल जाना गर्व की बात बन जाये तो उस कौम को भला कब तक दबाया जा सकता है? यही बूंद-बूंद प्रतिरोध की नदी सागर में परिवर्तित उस साम्राज्य को भी बहा ले गया जिसका सूर्य अस्त नहीं होता था।

गांधी की एक अन्यतम विशेषता समझ में आई वह है-'अन्दर की आवाज'। यह 'अंदर की आवाज' हम सबके पास है। बस जरा अंदर झाँकने की जरूरत है- 'दिल के आईने में है तस्वीरे यार, जब जरा गर्दन झुकाई देख ली'। आज हम बाहर की आवाजों में इतना व्यस्त हो चुके हैं वहाँ झाँकने में डर लगता है। गांधी ने अपने जीवन में जितने भी आंदोलन किए सबके पीछे यही 'Still small voice within' है। लेकिन इस आवाज को सुनने के लिए लंबी तपस्या की जरूरत होती है, जिसका सूत्र हमें पतंजलि के योग सूत्र में मिलता है। गांधी ने यम-नियम को साध लिया था।

गांधी का सर्जन शील व्यक्तित्व अद्भुत है। हम कई बार गलती से उनसे रेडीमेड-फैन्सी उत्तर, फॉर्मूला या सिद्धांत की अपेक्षा कर बैठते हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम सब बचपन में राम शलाका से पास-फेल का उत्तर जानने के लिए प्रयास करते थे। तथ्य यह है कि गांधी ने सदैव अपने तर्जनी से सही दिशा की ओर बढ़ने का संकेत दिया है। सही दिशा की तलाश कैसे की जानी चाहिए यह स्वयं जी कर दिखा गए हैं। इसलिए भागते-हाँफते पत्रकार को, जो गांधी से किसी संदेश का गुजारिश कर रहा था, पर्ची पर लिखकर दिया- 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' ।

पार्लियामेंट स्क्वायर लंदन में गांधी के साथ उनके दो मित्रों जॉन स्मट्स और चर्चिल की भी मूर्ति है। इन दोनों से गांधी का परिचय अफ्रीका में हो चुका था। ये वही जॉन स्मट्स हैं जिसने गांधी को जेल में डाल दिया था और जब गांधी जेल गए तो वहाँ से स्मट्स के लिए अपने हाथ से बनाया एक जोड़ी चप्पल भेजा। स्मट्स ने पहना तो जरूर पर उसे अपनी अयोग्यता पर शर्म भी आई। दूसरे मित्र चर्चिल 'साहित्य और राजनीति' के शानदार कॉकटेल हैं और नोबेल पुरस्कार भी झटका है। उन्होंने अपने जीवन काल में खूब जमकर युद्ध लड़ा और साम्राज्य बचाया भी। ये वही चर्चिल हैं जिन्होंने ऐतिहासिक दुर्भिक्ष काल में भी बंगाल का सारा चावल ब्रिटेन मंगाकर, चार लाख लोगों को भूखा मर जाने को विवश कर दिया। और जब इन मौतों की सूचना लंदन आई, तो फाइल नोटिंग पर साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता चर्चिल पूछते हैं- 'व्हाय हैवन्ट गांधी डाइड येट' ?

गांधी अपनी शाश्वत और निर्दोष मुस्कान के शांत-मद्धिम-गम्भीर स्वर में कहते हैं- 'यस, आई हैवन्ट डाइड येट चर्चिल! मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ ।'

फिर वही मौन, जिसका जादू आज भी सिर चढ़कर बोल रहा है।

संपर्क:

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

ई मेल-chinmay69@gmail.com

'मैं स्वेच्छा से अस्पृश्य हूँ': महात्मा गांधी एवं अस्पृश्यता का प्रश्न

सौरव कुमार राय

भारतीय योग दर्शन में एक सिद्धि है जिसे 'परकाया प्रवेश' के नाम से जाना जाता है। इस क्रिया में कोई साधक अपनी आत्मा या प्राण को किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट कराने का प्रयोग करता है। इसका सबसे प्रचलित उदाहरण मंडन मिश्र की पत्नी भारती द्वारा आदि शंकराचार्य से पूछे प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने के लिए शंकराचार्य द्वारा सम्पन्न परकाया प्रवेश की घटना में मिलता है।

भारत के इतिहास में ऐसा एक और उदाहरण है जो परकाया प्रवेश से किसी मायने में कम नहीं है। महात्मा गांधी, जिनका जन्म तो सवर्ण कुल में हुआ था, लेकिन वे आजीवन स्वेच्छा से एक 'अस्पृश्य' अथवा 'भंगी' की भांति रहे। इसके पीछे उनका उद्देश्य आत्म-बलिदान का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत कर भारतीय समाज से अस्पृश्यता की भावना को ही जड़ से उखाड़ फेंकने का था। इस संदर्भ में 1932 का उनका यह कथन मानीखेज है, 'मैं नम्रतापूर्वक यह दावा पेश करना चाहता हूँ कि यद्यपि जन्म से मैं स्पृश्य हूँ, तथापि मैंने अस्पृश्य बनना पसंद किया है। अस्पृश्यों में भी ऊपर के दस फीसदी का प्रतिनिधि बनने का मैंने प्रयत्न नहीं किया, बल्कि मेरी महत्वाकांक्षा अस्पृश्यों की ठेठ नीचे की सतह के लोगों के साथ एकरूप हो जाने की और उनका प्रतिनिधि बनने की है।' यह अस्पृश्यता उन्मूलन को लेकर गांधीजी की प्रतिबद्धता का परिचायक है। आइये देखते हैं 'स्पृश्य' से 'अस्पृश्य' बनने की उनकी इस जीवनयात्रा को।

भारत के इतिहास में ऐसा एक और उदाहरण है जो परकाया प्रवेश से किसी मायने में कम नहीं है। महात्मा गांधी, जिनका जन्म तो सवर्ण कुल में हुआ था, लेकिन वे आजीवन स्वेच्छा से एक 'अस्पृश्य' अथवा 'भंगी' की भांति रहे। इसके पीछे उनका उद्देश्य आत्म-बलिदान का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत कर भारतीय समाज से अस्पृश्यता की भावना को ही जड़ से उखाड़ फेंकने का था। इस संदर्भ में 1932 का उनका यह कथन मानीखेज है, 'मैं नम्रतापूर्वक ...।

ऊका का मोनिया

'अस्पृश्यता' अथवा 'छुआछूत' भारतीय समाज की एक ऐसी हकीकत है, जिससे महात्मा गांधी का सामना बचपन में ही हो गया था। उनके घर में सफाई का काम करने ऊका नाम का एक लड़का आता था जो उनसे एक-दो साल ही बड़ा था। वह चुपचाप काम करता और चला जाता। मोनिया (महात्मा गांधी के बचपन का नाम) का उससे धीरे-धीरे परिचय बढ़ा। मोनिया उसके साथ खेलना चाहता था, लेकिन ऊका कतराता। मोनिया के अन्य दोस्त भी ऊका के साथ नहीं खेलना चाहते। धीरे-धीरे मोनिया को इसकी वजह पता चली जिसके मूल में 'अस्पृश्यता' की वह जंजीर थी जिससे ऊका जकड़ा हुआ था। कहते हैं मोनिया ने अपने जीवन का प्रथम सत्याग्रह अपनी माँ के समक्ष

ऊका के लिए ही किया, ताकि वह उसे ऊका के साथ बेरोकटोक खेलने दे।

हुआ यूं कि मोनिया की माताजी पुतलीबाई उसे ऊका के साथ खेलने को मना किया करती थीं। लेकिन मोनिया नहीं मानता और माँ से इसका कारण पूछता। माँ कहती ऊका गंदगी साफ करता है, इसलिए उसे छूना ठीक नहीं है। लेकिन मोनिया को यह बात हजम नहीं होती। माँ खीझ कर उसे नहाने कहती। मोनिया माँ की नहाने वाली बात तो नहीं टालता, लेकिन उसने ऊका के साथ खेलना जारी रखा। वह जब भी ऊका के साथ खेल कर आता स्वयमेव नहाने घुस जाता। आखिरकार माँ को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने मोनिया को ऊका के साथ बेरोकटोक खेलने की मंजूरी दे दी।

दक्षिण अफ्रीका की प्रयोगशाला

दक्षिण अफ्रीका कई मायनों में महात्मा गांधी के लिए एक प्रयोगशाला की भांति था। वहाँ की भूमि पर उन्होंने अपने कई विचारों की उपयुक्तता को जाँचने-परखने हेतु आरंभिक प्रयोग किए। इसी क्रम में 'अस्पृश्यता' उन्मूलन को लेकर भी उनका एक प्रयोग उल्लेखनीय है। उन्हें यह एहसास हुआ कि छुआछूत की भावना समाज में इसलिए भी है क्योंकि अस्पृश्य समुदाय से जुड़े लोग प्रायः ऐसे कार्यों में लीन रहते हैं जिन्हें 'गंदा' माना जाता है। गांधीजी को लगा कि यदि अस्पृश्यता का कलंक मिटाना है तो उनके द्वारा किए जाने वाले काम को गरिमा प्रदान करनी होगी, तभी इस कार्य में लीन लोगों को समाज सम्मान की नजरों से देखेगा। फिर क्या था ! महात्मा गांधी ने स्वयं झाड़ू उठा लिया और हर वो काम जिसे 'अस्पृश्य' माना जाता था स्वयं करने लग गये।

हिन्दुस्तान में जिस प्रकार साफ-सफाई करने वालों को अस्पृश्य मान उन्हें गाँव से बाहर बसाये जाने की परंपरा थी, उसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटिया मजदूरों को 'कुली-लोकेशन' में बसाया जाता था। इन कुली-लोकेशन की हालत कुछ-कुछ भंगी बस्ती जैसी ही थी। चारों तरफ फैली गंदगी, सुविधाओं के नाम पर म्युनिसिपैलिटी की निष्क्रियता और 'लोकेशन' में रहने वाले लोगों का तिरस्कारवाचक शब्दों से सम्बोधन। महात्मा गांधी ने इन 'कुली-लोकेशन' की कायाकल्प का बीड़ा उठाया। विशेष रूप से प्लेग महामारी के दौरान गांधीजी के सक्रिय हस्तक्षेप से इन 'कुली-लोकेशन' को प्रशासन का कोपभाजन बनने से बचाया जा सका।

अस्पृश्यता उन्मूलन को लेकर महात्मा गांधी की सनक अक्सर गृह-कलेश का भी कारण बन जाती थी। एक बार की बात है, उन दिनों महात्मा गांधी डरबन में वकालत किया करते थे। उनके घर में आगंतुकों का आना-जाना लगा रहता था। आगंतुकों का मल-मूत्र उठाने का कार्य गांधीजी और उनकी पत्नी कस्तूरबाई स्वयं किया करते थे। एक बार उनके यहाँ 'पंचम (अस्पृश्य) कुल' में जन्मा अतिथि आया हुआ था। कस्तूरबाई को उसका मल-मूत्र उठाना असह्य लगा और उन्हें यह भी मंजूर नहीं था कि गांधीजी ऐसा करें। इसको लेकर पति-पत्नी के बीच कलह हुआ। अंततः, कस्तूरबाई रोते हुए और गांधीजी को उलाहना देते हुए मल-मूत्र का बर्तन उठा कर जाने लगीं। गांधीजी को यह उलाहना बर्दाश्त न हुआ और उन्होंने कस्तूरबाई को काफी खरी-खोटी सुनाई। बाद में अपनी इच्छा दूसरों पर थोपने को लेकर वे काफी शर्मिंदा हुए। लेकिन वे कहाँ रुकने वाले थे।

सन 1901 की बात है। संयोगवश गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए हुए थे। उस वर्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में होनी थी। इस कांग्रेस में गांधीजी भी शामिल हुए। यह गांधीजी के लिए कांग्रेस का पहला अनुभव था। इस अधिवेशन के दौरान कलकत्ता के रिपन कॉलेज में बहुत से प्रतिनिधियों को ठहराया गया था। लेकिन वहाँ गंदगी की कोई हद नहीं थी। चारों तरफ पानी ही पानी फैल रहा था। पाखाने कम थे। उनकी दुर्गन्ध से पूरा वातावरण गमक रहा था। ऐसे में गांधीजी ने एक स्वयंसेवक को यह सब दिखाया। लेकिन उसने साफ इनकार करते हुए कहा, 'यह तो भंगी का काम है।' इसपर गांधीजी ने झाड़ू मांगा। वह उनका मुँह ताकता रहा। गांधीजी ने स्वयं ही झाड़ू खोज निकाला और पाखाना साफ किया। ऐसी थी गांधीजी की कांग्रेस में प्रथम भागीदारी।

आश्रम में अछूत परिवार के प्रवेश से खलबली

1915 में दक्षिण अफ्रीका से हमेशा के लिए भारत लौटने के पश्चात गांधीजी ने अपना प्रथम आश्रम गुजरात के कोचरब में स्थापित किया। आश्रम को कायम हुए अभी कुछ ही महीने बीते थे कि गांधीजी के समक्ष एक कसौटी प्रस्तुत हो गयी। उन्हें ठक्कर बापा का पत्र मिला कि 'एक गरीब और अंत्यज (अस्पृश्य) परिवार है। वह आपके आश्रम में रहना चाहता है। क्या उसे भरती करेंगे?' महात्मा गांधी ने खुले दिल से इस अछूत परिवार दूदाभाई, उनकी पत्नी दानीबहन और उनकी दूध-पीती बच्ची लक्ष्मी का आश्रम में स्वागत किया। इससे गांधीजी के सहायकों एवं दानदाताओं में खलबली मच गयी। गांधीजी के आश्रम को लोगों ने चन्दा देना बंद कर दिया। आश्रमवासियों के सामूहिक बहिष्कार की भी अफवाहें आने लगीं। इस पर भी गांधीजी डिगे नहीं और स्पष्ट शब्दों में आश्रमवासियों से कहा, 'यदि हमारा बहिष्कार किया जाये और हमें कहीं से कोई मदद न मिले, तो भी हम अहमदाबाद नहीं छोड़ेंगे। अंत्यजों की बस्ती में जाकर उनके साथ रहेंगे और जो कुछ मिलेगा उससे अथवा मजदूरी करके अपना निर्वाह करेंगे।' अंततः, जीत गांधीजी की हुई और आश्रम को फिर से चन्दा मिलने लगा। यही नहीं गांधीजी ने आगे चलकर लक्ष्मी को अपनी दत्तक पुत्री के रूप में स्वीकार किया।

'जाति बनाम वर्ग'

हिन्दुस्तान वापस लौटने के बाद अपने अनुभवों के आधार पर महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता एवं जाति के प्रश्न पर और गहराई से सोचना आरंभ किया। इस संदर्भ में गांधीजी ने 29 दिसम्बर 1920 को 'यंग इंडिया' में 'जाति बनाम वर्ग' शीर्षक से एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने जाति विशेष के कर्म को महत्वहीन अथवा घृणित मानने की आलोचना की। उनके अनुसार प्रत्येक जाति कर्म का समाज की दृष्टि से समान महत्व है। दूसरे अर्थों में एक भंगी का कार्य ब्राह्मण के जाति कर्म से कहीं से भी छोटा अथवा महत्वहीन नहीं है। बल्कि, गांधीजी एक भंगी के कर्म को ब्राह्मण के जाति-कर्म से भी ऊपर रखते हैं। गांधीजी का यह कहना था कि जाति कर्म के आधार पर भेदभाव एक प्रकार की विकृति है जो कालांतर में इस व्यवस्था का हिस्सा बन गयी।

1920 की कलकत्ता कांग्रेस में गांधीजी की प्रेरणा से कांग्रेसजनों के लिए एक दस-सूत्री कार्यक्रम स्वीकृत हुआ, जिसमें यह भी शामिल था कि 'प्रत्येक कांग्रेसजन का, जो हिन्दू हो, यह कर्तव्य होगा कि वह अस्पृश्यता को दूर करने के लिए जो कुछ कर सकता है वह करे और अस्पृश्य कहे जानेवालों को उनकी अयोग्यताएं दूर करने और अपनी हालत सुधारने के प्रयत्नों में यथासंभव सहायता दें।' इसी क्रम में 1921 में कांग्रेस के तत्वाधान में सत्याग्रह का निर्णय करने पर अन्य शर्तों के साथ यह शर्त भी रखी गयी कि 'सत्याग्रह में विश्वास रखने वाला व्यक्ति यदि हिन्दू हो, तो उसे अस्पृश्यता को राष्ट्रीयता के लिए कलंक समझना होगा।'

इसे विस्तार देते हुए 'यंग इंडिया' में 25 मई 1921 को प्रकाशित अपने एक लेख में गांधीजी लिखते हैं, 'यदि हम भारत की आबादी के पाँचवें हिस्से को स्थायी गुलामी की हालत में रखना चाहते हैं और उन्हें जान-बूझकर राष्ट्रीय संस्कृति के फलों से वंचित रखना चाहते हैं, तो स्वराज्य एक अर्थहीन शब्दमात्र होगा। आत्मशुद्धि के इस महान आन्दोलन में हम भगवान की मदद की आकांक्षा रखते हैं, लेकिन उसकी प्रजा के सबसे ज्यादा सुपात्र अंश को हम मानवता के अधिकारों से वंचित रखते हैं। यदि हम स्वयं मानवीय दया से शून्य हैं, तो उसके सिंहासन के निकट दूसरों की निष्ठुरता से मुक्ति पाने की याचना हम नहीं कर सकते।'

यह गौरतलब है कि समय के साथ गांधीजी जाति के प्रश्न को लेकर अपने विचारों में लगातार बदलाव भी लाते रहे। 1920 एवं 30 के दशक में जातीय अस्मिता के राजनीतिकरण के दौर में गांधीजी ने जाति के प्रश्न को देखने के अपने नजरिए एवं उसे सुलझाने के तौर-तरीकों में भी यथोचित बदलाव लाया। 1947 आते-आते तो वे यह मानने लगे कि यदि हिन्दू धर्म को जीवित रहना है तो उसे जाति-विहीन बनना पड़ेगा। 12 फरवरी 1947 की प्रार्थना सभा में उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि सच्ची स्वतंत्रता तो तभी स्थापित होगी जब जातियों के बीच का उच्चताभेद पूर्णरूपेण समाप्त हो जायेगा।

बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर द्वारा प्रस्तुत चुनौती का इस बदलाव में काफी बड़ा योगदान रहा। यह बदलाव

गांधीवादी विचारों के लचीलेपन को भी परिलक्षित करता है। हालाँकि, अस्पृश्यता उन्मूलन को लेकर गांधीजी का जो रुख बचपन में था, वो अंत तक बना रहा। वे हिन्दू समाज की इस विकृति को नि:स्वार्थ प्रेम एवं त्याग के जरिये हल करने के पक्षधर थे। इसी क्रम में 1932 में उन्होंने अस्पृश्य समुदाय के लिए एक नया शब्द प्रचलन में लाया 'हरिजन' अर्थात 'हरि (भगवान) के जन'।

पृथक निर्वाचन, गांधी एवं अम्बेडकर

गोलमेज सम्मेलन में डॉ बी आर अम्बेडकर ने अस्पृश्यता उन्मूलन एवं वंचितों के राजनीतिक सशक्तिकरण हेतु मुसलमानों एवं सिक्खों की भांति दलितों के लिए भी अलग निर्वाचक मंडल बनाने की मांग की। उनकी मांगों का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री रैमसे मैकडॉनल्ड के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सरकार ने 1932 में दलित वर्ग को अलग निर्वाचक मंडल का अधिकार दे दिया जिसे 'कम्युनल अवॉर्ड' अथवा 'साम्प्रदायिक पंचाट' के नाम से भी जाना जाता है। यह मूलत: औपनिवेशिक शासन द्वारा 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने का एक षड्यन्त्र था। उस समय गांधीजी सविनय अवज्ञा आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करने के आरोप में यरवडा जेल में कैद थे। गांधीजी ने इस षड्यन्त्र को भांप लिया और पृथक निर्वाचन की इस विभाजनकारी नीति के विरोध में 20 सितंबर 1932 को जेल में ही आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया।

अनशन शुरू करने से पूर्व गांधीजी ने टैगोर को पत्र लिखा और कविवर ने उसका जो उत्तर दिया, दोनों भारत के इतिहास में सुरक्षित रखने योग्य दस्तावेज हैं। महात्मा गांधी ने लिखा, 'अभी मंगलवार की सुबह के 3 बजे हैं। दोपहर के समय मैं अग्निमय द्वार में प्रवेश करूंगा। मैं चाहूंगा कि आप मेरे इस कार्य को आशीर्वाद दें। आप सच्चे मित्र हैं, क्योंकि आप स्पष्टवादी मित्र हैं। आप अपने विचारों को प्राय: स्पष्टता से प्रकट कर देते हैं। यदि आपकी अन्तरात्मा मेरे कार्य की निन्दा करे तो भी आपकी आलोचना को बहुमूल्य समझूँगा, यद्यपि अब यह मेरे उपवास के दिनों में ही हो सकेगा... आपका हृदय यदि मेरे कार्य को पसन्द करे तो मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। इससे मुझे सहारा मिलेगा।'

अभी पत्र डाक में पड़ा ही था कि गांधीजी को कविवर का तार मिला : 'भारत की एकता और सामाजिक अविछिन्नता के लिए बहुमूल्य जीवन का दान श्रेयस्कर है। हम लोग ऐसे हृदयहीन नहीं हैं कि इस राष्ट्रीय वज्रपात को चरमसीमा तक पहुंचने दें। हमारे व्यथित हृदय आपकी लोकोत्तर तपस्या को श्रद्धा और प्रेम से निहारते रहेंगे।'

महात्माजी ने इस तार के उत्तर में लिखा : 'जिस तूफान में मैं प्रवेश कर रहा हूँ उसमें आपका आशीर्वाद मुझे सहारा देगा।'

महात्मा गांधी के उपवास के आरंभ होने के साथ ही देश के सार्वजनिक जीवन के कल-पुर्जे घूमने लगे। 20 सितंबर को बंबई में सवर्ण हिंदुओं और दलित वर्ग के नेताओं की सभा आयोजित की गयी जिससे बातचीत द्वारा कोई हल निकाल सके। चार दिनों तक खूब ऊहापोह हुई। उधर अनशन के कारण गांधीजी की तबियत लगातार बिगड़ने लगी। मदन मोहन मालवीय, पालवंकर बालू समेत अनेक नेताओं ने अम्बेडकर से पृथक निर्वाचन के प्रस्ताव को वापस लेने का आग्रह किया। 24 सितम्बर 1932 को यरवडा जेल में गांधीजी और डॉ अम्बेडकर के बीच समझौता हुआ, जो 'पूना पैक्ट' के नाम से जाना गया। अम्बेडकर ने दलितों के लिए आरक्षित सीटों के बदले पृथक निर्वाचन के अधिकार को छोड़ने की घोषणा की। 26 सितंबर को ब्रिटिश सरकार ने भी इस समझौते को मान लिया जिसके बाद गांधीजी ने अपना अनशन तोड़ दिया।

अस्पृश्यता-निवारण की प्रवृत्ति में गांधीजी के इस अनशन ने अविस्मरणीय मोड़ दिया। अनशन तो खत्म हुआ, लेकिन महात्मा गांधी का मन अछूतों की समस्या पर केंद्रित हो गया। इस समस्या का गांधीजी ने नया नामकरण-संस्कार करके 'हरिजन-समस्या' के रूप में परिणत कर दिया। गांधी विचारधारा और साहित्य में अछूत या दलित लोग 'हरिजन' नाम से निर्दिष्ट होने लगे। यरवडा करार के बाद तो हरिजनों के लिए मंदिरों के खुलने का मानो सिलसिला ही शुरू हो गया। बंबई का एक सदी पुराना ठाकुरद्वारे का राम मंदिर और अस्सी वर्ष पुराना सिन्धी मंदिर ही नहीं खुले, बल्कि पटना, लायलपुर, ब्यावर,

राजवाड़ी, कटक, आदि कई स्थानों में प्राय: सभी मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश निर्बाध हो गया। कई स्थानों पर अन्तर्जातीय सहभोज हुए। गाँव के गाँव कुएँ हरिजनों के लिए खोल दिए गये।

हरिजन सेवक संघ की स्थापना

इसी क्रम में 30 सितंबर 1932 को मदन मोहन मालवीय के सभापतित्व में बम्बई में हिन्दू नेताओं की एक विशाल सभा आयोजित की गयी। इस सभा में अस्पृश्यता-निवारणार्थ एक अखिल भारतीय संगठन बनाने का निश्चय किया गया। पहले इसका नाम 'एंटी अंटचेबिलिटी लीग' यानी 'अस्पृश्यता-निवारण संघ' रखा गया था जिसे बाद में बदल के 'सरवेंट्स ऑफ अंटचेबल्स सोसायटी' और फिर अंतत: 'हरिजन सेवक संघ' कर दिया गया। तब से लेकर आजतक यह संघ अछूत माने जाने वाले समुदायों के उत्थान एवं महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यो के विस्तार हेतु सन्नद्ध है। इसका संविधान स्वयं गांधीजी ने अपने हाथों से लिखा जो इस संघ और इसके कार्यों को लेकर उनकी गंभीरता का परिचायक है।

हरिजन सेवक संघ का घोषित उद्देश्य 'हिन्दू समाज में से सत्यमय और अहिंसक साधनों द्वारा छुआछूत को मिटाना और उससे पैदा हुई उन दूसरी बुराइयों तथा निर्योग्यताओं को जड़मूल से नष्ट करना' निश्चित किया गया। यह तय हुआ कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ सवर्ण हिंदुओं से भारत भर में संपर्क स्थापित कर उनके हृदय-परिवर्तन का कार्य करेगा तथा साथ ही अस्पृश्य समुदायों के बीच शिक्षा के प्रसार, उद्योग प्रशिक्षण, कल्याण कार्य, मंदिर प्रवेश, आदि रचनात्मक कार्यों के जरिये हरिजनों की सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी उन्नति हेतु कार्य करेगा। संघ के इस पुनीत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रथम अध्यक्ष के तौर पर घनश्याम दास बिरला एवं सचिव के रूप में ठक्कर बापा को चुना गया।

अस्पृश्यता निवारण संबंधी विचारों एवं कार्यकलापों के व्यापक प्रचार हेतु महात्मा गांधी से प्रेरणा पाकर हरिजन सेवक संघ के संरक्षण में तीन पत्रों का प्रकाशन भी आरंभ हुआ: हरिजन (फरवरी 1933), हरिजन बंधु (मार्च 1932) एवं हरिजन सेवक (फरवरी 1936)। महात्मा गांधी का यह मानना था कि समाचार पत्र सेवाभाव से ही चलाये जाने चाहिए अन्यथा वे समाज का अहित करने के साधन बन जायेंगे। उपरोक्त तीन पत्र गांधीजी द्वारा सेवाभाव से परिपूर्ण पत्रकारिता के आग्रह के उत्कृष्ट नमूने सिद्ध हुए।

हरिजन यात्रा

महात्मा गांधी ने अपने जीवनकाल में चार ऐतिहासिक यात्राओं अथवा कूच का नेतृत्व किया: ट्रांसवाल मार्च (1913), दांडी मार्च (1930), हरिजन यात्रा (1933), एवं शांति यात्रा (1946)। इन चारों में, समय एवं भूगोल दोनों के हिसाब से, सबसे व्यापक यात्रा 'हरिजन यात्रा' थी। इसका आरंभ 7 नवंबर 1933 को उन्होंने वर्धा से किया। इस दौरान उन्होंने मध्य भारत, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, आसाम, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, राजस्थान, और सिंध प्रांत का दौरा किया। इस यात्रा के पीछे उनका मुख्य उद्देश्य भारतीय मानस को अछूतोद्धार की मथनी से मथना था, जिससे कि समाज से अस्पृश्यता का समूल विनाश किया जा सके।

अपनी इस यात्रा के दौरान गांधीजी ने सामाजिक कार्यकर्ताओं को संबोधित किया, जगह-जगह हरिजनों की बस्ती में गये, उनके लिए मंदिर, कुओं, छात्रावासों के दरवाजे खुलवाए, अछूतोद्धार हेतु फंड एकत्रित किया और सवर्ण हिंदुओं से अस्पृश्यता के पाप से निवारण के लिए प्रायश्चित करने की अपील की।

हरिजन यात्रा के दौरान महात्मा गांधी को रेलवे स्टेशनों और सार्वजनिक सभाओं में लोगों के सामने हाथ फैलाकर और कटोरा लेकर दान मांगते देखा गया जिसकी कई जीवंत तस्वीरें मौजूद हैं। इस यात्रा में इकट्ठे किए हुए धन को उन्होंने हरिजन उत्थान हेतु स्वयं द्वारा स्थापित संगठन हरिजन सेवक संघ को सौंप दिया जिसे 'हरिजन फंड' की संज्ञा दी गयी। यात्रा की समाप्ति के बाद भी गांधीजी जहाँ भी जाते लोगों से इस 'हरिजन फंड' हेतु खुले मन से दान देने की अपील करते।

हरिजन यात्रा के दौरान कई रोचक एवं हृदयस्पर्शी प्रसंग भी हुए जिनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ यथोचित

जान पड़ता है। ये प्रसंग इस बात का परिचायक हैं कि गांधीजी की इस यात्रा ने कैसे देशवासियों के अंतर्मन को झकझोर के रख दिया और वे अस्पृश्यता को लेकर द्रवित हो उठे। पहला प्रसंग कुछ यूँ है कि, अच्छी खासी कमाई को तिलांजलि दे स्वतंत्रता-संग्राम में जूझ पड़नेवाले बैरिस्टर अभ्यंकर की पत्नी ने अपने हाथ की सोने की चूड़ियाँ उतारकर महात्मा गांधी को 'हरिजन फंड' हेतु देते हुए कहा : 'मेरे पति ने मेरे लिए तो कुछ भी नहीं रहने दिया है। ये चूड़ियाँ ही बची हैं। इन्हें जिस काम में आप लगाना चाहें लगा लें।' गांधीजी ने चूड़ियाँ लेते हुए कहा, 'मैं अपने को पत्थर के समान कड़े दिल का आदमी समझता हूँ। पर यहाँ मेरा दिल पिघल पड़ा है, क्योंकि श्रीमती अभ्यंकर का यह सर्वस्व-दान मेरे हृदय में चुभ-सा गया है।'

इसी प्रकार एक सभा में भोले बालक ने मंच पर आकर एक पैसा गांधीजी को दिया। जिसपर हंसकर उन्होंने कहा: 'अरे, यह तो बड़ा उस्ताद मालूम पड़ता है !' फिर कहा: 'पर कौन जाने, बेचारे को यह एक ही पैसा मिठाई खाने को मिला हो? यदि यह बात है, तो इसका यह काफी बड़ा त्याग है।' इसी से मिलता-जुलता एक वाकया जबलपुर की सभा में हुआ जब एक हरिजन बालक ने कांच का कंचा (खेलने की गोली) गांधीजी को भेंट किया और गांधीजी के हँसने पर सहमता हुआ वह बोला 'मेरे पास पैसा नहीं है।' इस पर गांधीजी ने कहा , 'नहीं है तो क्या हुआ ? तुम्हारा यह दान कम थोड़े ही है।'

बढ़े चलो !

12504 मील की यह लंबी यात्रा कर नौ महीने पश्चात महात्मा गांधी 5 अगस्त 1934 को वर्धा वापस लौट आए। इसके साथ ही उनकी 'हरिजन यात्रा' तो पूर्ण हुई लेकिन अस्पृश्यता निवारण को लेकर उनकी जीवनयात्रा जारी रही। वे जहाँ भी जाते सवर्णों से छुआछूत को जड़ से खत्म करने की अपील करते, हरिजन उत्थान के लिए फंड इकट्ठा करते और मौका मिलने पर हरिजन बस्तियों में रुका करते। दिल्ली में पंचकुइयां रोड स्थित वाल्मीकि मंदिर के आस-पास अवस्थित हरिजन बस्ती से तो उनका विशेष संबंध रहा। अप्रैल 1946 से जून 1947 के बीच गांधीजी जब भी दिल्ली आए तो वे यहीं रुका करते थे। यह स्थान महात्मा गांधी ने स्वयं चुना था, ताकि वह आसपास की झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले 'अस्पृश्य' लोगों के बीच रहकर उनकी समस्याएं जान सकें।

वाल्मीकि मंदिर में रहते हुए वे हरिजन बच्चों को पढ़ाते भी थे। और साथ ही उन्हें स्वच्छता अपनाने, नैतिक बनने व कुप्रथाओं को दूर करने के लिए प्रेरित करते थे। गांधीजी को इन बच्चों को पढ़ाना इतना रास आता था कि इसके कारण अक्सर उनसे मुलाकात करने आए नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, माउण्टबेटन जैसे महत्वपूर्ण लोगों को भी इंतजार करना पड़ता था।

अस्पृश्यता निवारण को लेकर गांधीजी कितने गंभीर थे इसका पता इस बात से भी चलता है कि आजादी करीब आता देख जब पूरा देश अपना नया निजाम तलाश रहा था तब महात्मा गांधी ने 2 जून 1947 की अपनी प्रार्थना सभा में सबको यह कहकर चौंका दिया कि उनका ख्वाब है एक साहसी नि:स्वार्थ हरिजन महिला स्वतंत्र भारतीय गणराज्य की पहली राष्ट्रपति बने। एक झटके में उन्होंने सदियों से अवदमित देश की बहुसंख्य जनता को मानो आवाज देने की तरकीब सुझा दी जिस पर पूर्णरूपेण अमल किया जाना अभी बाकी है।

संदर्भ सूची

- इन्द्र विद्यावाचस्पति, भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास, नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल, 1960
- महात्मा गांधी, सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट, 1947
- महात्मा गांधी, सम्पूर्ण गांधी वाङमय, नयी दिल्ली: प्रकाशन विभाग
- मुकुट बिहारी एवं हरि प्रसाद वर्मा, हरिजन सेवक संघ का इतिहास, 1932-68, दिल्ली: हरिजन सेवक संघ, 1969

(लेखक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के शोध अधिकारी हैं)

संपर्क:

मो. 9717659097

किताब

महात्मा गांधी की माता : पुतलीबाई

प्रवीण दत्त शर्मा

पुतलीबाई महात्मा गांधी की माता थीं। गांधी जी ने अपने मूल्यों और आदर्शों की प्रेरणा का स्रोत अपनी माता पुतलीबाई को माना। वह अपनी माँ की धार्मिक विचार प्रक्रिया और विचारधाराओं से गहरे प्रभावित थे। वे अपने जीवन में अनेकों लोगों से प्रभावित हुए लेकिन आध्यात्मिक विकास में उनकी मां पुतलीबाई का प्रभाव या योगदान उन्होंने सबसे ऊपर माना। उनकी माता आध्यात्मिक आकांक्षी थी तथा उन्होंने इस बात को बरकरार रखा कि प्रेम का सबसे बड़ा रूप दूसरे के लिए स्वयं का त्याग करना है।

यानि पूरे विश्व के प्रेरक व्यक्तित्व महात्मा गांधी की प्रेरणा स्रोत उनकी माँ पुतलीबाई थी। लेकिन पुतलीबाई के जीवन के बारे में हमें ज्यादा जानकारी नहीं मिलती। उनके संबंध में कोई पुस्तक या अन्य सामग्री भी ज्यादा नहीं है। ऐसे में लेखिका संतोष बंसल का हाल ही में प्रकाशित उपन्यास 'महात्मा गांधी की माता: पुतलीबाई' काफी महत्वपूर्ण है। इसे इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड ने प्रकाशित किया है। यह कृति इतिहास और कल्पना का सुंदर मिश्रण प्रस्तुत करती है, जिसमें पुतलीबाई के संस्कारों और उनके प्रभाव को गहराई से उकेरा गया है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पुतलीबाई उपन्यास का मुख्य उद्देश्य महात्मा गांधी के जीवन में उनकी माता पुतलीबाई के प्रभाव को उजागर करना है। लेखिका ने पुतलीबाई के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हुए यह बताया है कि कैसे उनके संस्कारों ने गांधीजी को महान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपन्यास में इतिहास और कल्पना का समावेश करते हुए पुतलीबाई के जीवन की घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

पुतलीबाई का चरित्र-चित्रण

पुतलीबाई का चरित्र उपन्यास का केंद्रबिंदु है। लेखिका ने उन्हें एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो धर्म, करुणा, और आत्मबल की प्रतीक हैं। उनकी धार्मिकता, संयम, और सेवा भावना ने

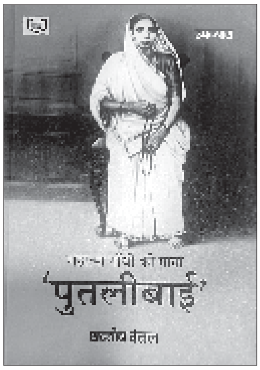

प्रकाशकः
इण्डिया नेटबुक्स प्रा. लि.
लेखिकाः
संतोष बंसल

गांधीजी के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपन्यास में पुतलीबाई के जीवन की घटनाओं के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे उनके संस्कारों ने गांधीजी को सत्य, अहिंसा, और आत्मसंयम के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

ऐतिहासिक और कल्पनाशीलता का समन्वय

उपन्यास में लेखिका ने ऐतिहासिक तथ्यों और कल्पनाशीलता का संतुलित समावेश किया है। पुतलीबाई और गांधीजी के जीवन की घटनाओं को ऐतिहासिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने उन घटनाओं के भावनात्मक और मानसिक पहलुओं को भी उजागर किया है। इससे पाठकों को न केवल घटनाओं की जानकारी मिलती है, बल्कि उनके पीछे की भावनाओं और विचारों को भी समझने का अवसर मिलता है।

भाषा और शैली

लेखिका की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, और भावनात्मक है। उन्होंने संवादों और वर्णनों के माध्यम से पात्रों के मनोभावों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की शैली वर्णनात्मक है, जिसमें पात्रों के आंतरिक संघर्षों और भावनाओं को गहराई से उकेरा गया है। पाठक उपन्यास को पढ़ते हुए पात्रों के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं और उनकी भावनाओं को साझा करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ

पुतलीबाई उपन्यास में उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी चित्रण किया गया है। लेखिका ने यह दिखाया है कि कैसे एक महिला, पुतलीबाई, अपने समय की सीमाओं के बावजूद अपने परिवार और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम थीं। उनकी धार्मिकता, सेवा भावना, और आत्मबल ने न केवल उनके परिवार को, बल्कि समाज को भी प्रभावित किया।

गांधीजी पर पुतलीबाई के प्रभाव

उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि पुतलीबाई के संस्कारों ने गांधीजी के जीवन में गहरा प्रभाव डाला। उनकी धार्मिकता, सत्यनिष्ठा, और आत्मसंयम ने गांधीजी को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। पुतलीबाई की शिक्षाओं और उनके जीवन के उदाहरणों ने गांधीजी को एक महान नेता और मानवतावादी बनने में मदद की।

निष्कर्ष

संतोष बंसल का उपन्यास पुतलीबाई एक प्रेरणादायक कृति है, जो महात्मा गांधी की माता पुतलीबाई के जीवन और उनके गांधीजी के व्यक्तित्व निर्माण में योगदान को उजागर करती है। उपन्यास में इतिहास और कल्पना का सुंदर समावेश है, जो पाठकों को पुतलीबाई के जीवन की घटनाओं और उनके प्रभाव को समझने में मदद करता है। लेखिका की सरल और भावनात्मक भाषा, प्रभावी शैली, और गहन चरित्र-चित्रण उपन्यास को पठनीय और प्रेरणादायक बनाते हैं। यह उपन्यास न केवल पुतलीबाई के जीवन की कहानी है, बल्कि यह एक महिला के आत्मबल, सेवा भावना, और धार्मिकता की भी कहानी है, जो आज के समाज के लिए भी प्रासंगिक है।

उपन्यास में लेखिका ने ऐतिहासिक तथ्यों और कल्पनाशीलता का संतुलित समावेश किया है। पुतलीबाई और गांधीजी के जीवन की घटनाओं को ऐतिहासिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने उन घटनाओं के भावनात्मक और मानसिक पहलुओं को भी उजागर किया है। इससे पाठकों को न केवल घटनाओं की जानकारी मिलती है, बल्कि उनके पीछे की भावनाओं और विचारों को भी समझने का अवसर मिलता है।

भाषा और शैली

लेखिका की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, और भावनात्मक है। उन्होंने संवादों और वर्णनों के...।

कविता विकास की कविताएं

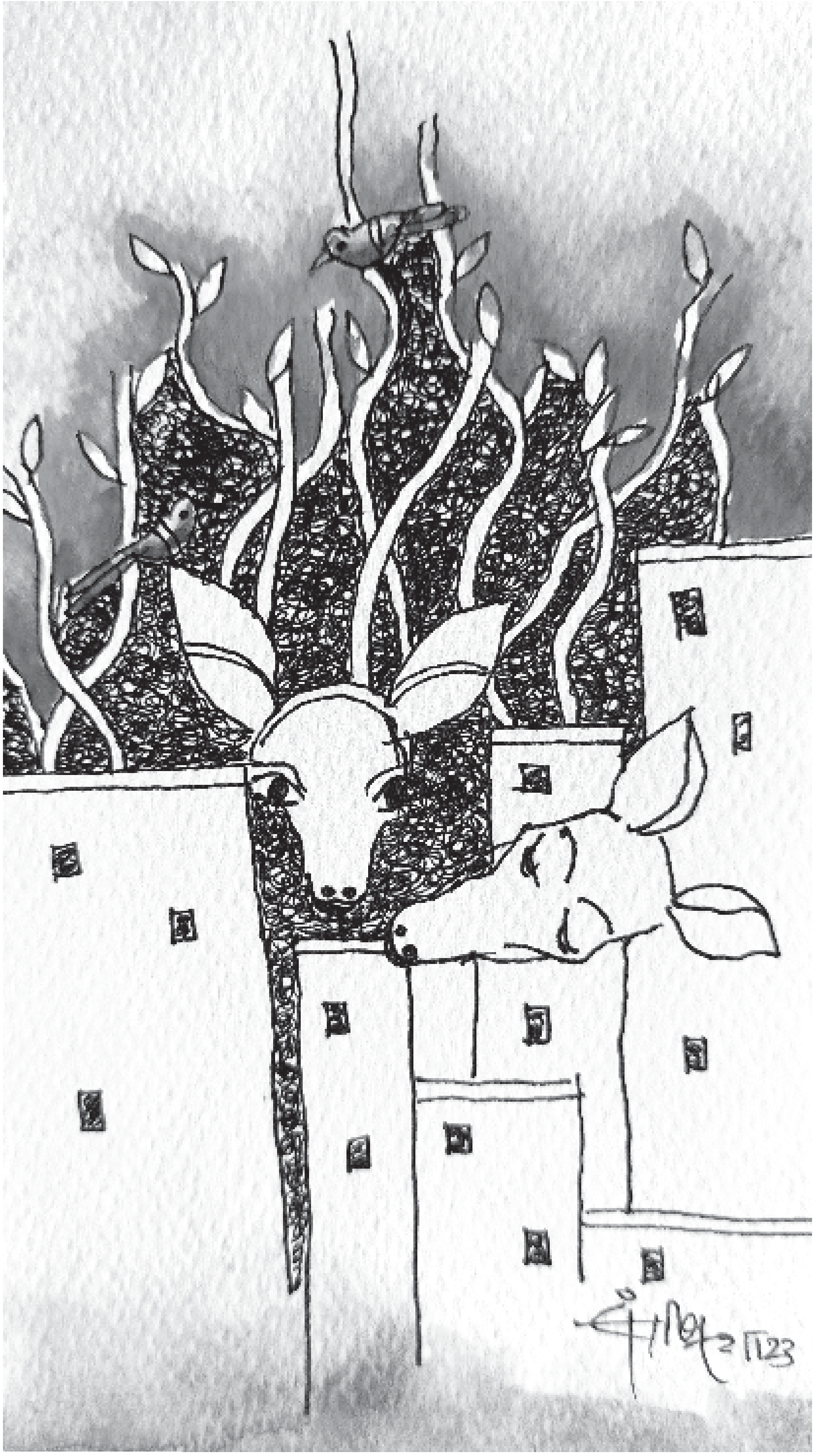

जीवन की कविता

बीज में छिपे पौध का रूप
जब लहलहाता है
धरती जीवन की कविता रचती है।
कोख़ में पलता शिशु जब
किलकारियाँ भरता है
माँ जीवन की कविता रचती है।
सूर्य के उदय और अस्त के साथ
सिलसिलेवार ढंग से
दिनचर्या चलाने में
प्रकृति जीवन की कविता रचती है।
यकीनन हर शै में
अपने अनुसार सृजन करके,
जनमानस के कल्याण का
नाम ही कविता है।
संभावनाओं के आकाश में
कविता नित पनपती रहती है।

रोटी

रोटी की तलाश में
निकलने वाले नन्हें हाथ
जब थरथराते हाथों में
तब्दील हो जाते हैं
तब महसूस करते हैं कि
वे रोटी को नहीं खाते
रोटी उनको खाती है।

माँ

यह कोहरा मुझे कभी नहीं भाता है
यह मुझे अंदर तक उद्वेलित करता है
शरीर शिथिल और मन विचलित
मैं बीमार हो जाती हूँ ।
कभी आत्मविश्लेषण करती हूँ
तो लगता है, शायद रात का कोहरा
उस चमकते तारे को ढँक लेता है
जिसमें मेरी माँ रहती हैं और दिन का कोहरा
सूर्य की उन प्रखर किरणों को जिनमे
माँ के प्यार की उष्णता छिपती है ।
लोग कहते हैं माँ जीवित नहीं हैं
वे झूठ कहते हैं। मैंने उन्हें
क्षिति, जल, पावक, वायु और अंबर
के हवाले किया था।
इसलिए मैं उन्हें हवा की सुरमई संगीत में
गुलाब की खुशबू में,
सूर्य की गर्मी में और जल की
पारदर्शिता में महसूस करती हूँ।
मैं उन्हें उन सभी शै में देखती हूँ
जो अदृश्य है सबके लिए ।
माँ जीवित है, वह प्रकृति है ।

एक बच्चे की व्यथा

स्कूल में मन नहीं लगता माँ

सभी चिढ़ाते हैं भोंदू कहकर
कहते हैं यह पिद्दी सा लड़का
हमारा दोस्त नहीं बनेगा।
मैं अकेला बैठता हूँ
कोने वाली बेंच पर
जब टीचर जी पढ़ने कहतीं हैं
मैं बार - बार अटकता हूँ
फिर कक्षा में ठहाके लगते हैं
टीचरजी झल्ला कर कहतीं हैं
"बैठ जा, तुझे पढ़ना नहीं आता।"
मैं उनसे कह नहीं पाता कि
वही सीखने तो यहां आया हूँ।
आप सिखाओ, मैं सीखूंगा।
खेल के मैदान में बस मेरी पूछ होती है
क्योंकि दोस्तों के शॉट मारने पर
मैदान के बाहर से दौड़ - दौड़ कर
बॉल लाने वाला मैं ही होता हूँ।
पर जब मैं शॉट मारना चाहता हूँ
तो लड़के झिड़क कर कहते हैं
"तू क्या मारेगा, ला इधर।"
मैं डर जाता हूँ, मैं सबके लिए बेकार हूँ।
पर तू बहुत अच्छी लगती है माँ
मुझे घर आते देख, एक तू ही तो है जो
हर दिन खुशी से कहती है
"मेरा राजा बेटा आ गया।"

स्त्रियाँ जो कविताएँ रचती हैं

उन्हें कागज और कलम की जरूरत नहीं
कविताएँ लिखने के लिए
वे तो भात के खौलते पानी और
सब्जी की गमगम खुशबू में
कविताएँ रचतीं हैं।
बच्चों के लिए रात - रात भर
जागने वाली स्त्रियाँ
चाँद रात की स्निग्ध रोशनी में
लोरियों की तानों में
कविताएँ रचती हैं।
बाहर के अनगिनत कामों का
निबाह करने वाली स्त्रियाँ
अपने लिए जगह बनाती हुई
खड़े - खड़े ही भरी बस में
कविताएँ रचती हैं।
परिवार के लिए कुशल - क्षेम
चाहने वाली स्त्रियाँ, दूर रह कर
अपने एकांत पलों में विस्मृत होती
यादों को ताजा करती हुई
अपने आँसुओं में
कविताएँ रचती हैं।

संपर्क :
डी.-15, सेक्टर-9, पीओ-कोयलानगर,
जिला-धनबाद, झारखण्ड-826005

तारों में मुन्नी का चेहरा

रात का आसमाँ, तारों से भरा है,
हर तारा जैसे कोई सपना अधूरा है।
उनमें एक चेहरा झिलमिलाता है कहीं,
"मुन्नी ऊपर चली गई," – माँ ने यूँ कहा है।
धरा से गगन तक, कोई राह नजर नहीं,
वो कैसी डगर है जो लौटकर आती नहीं।
सितारों ने देखी हैं सदियाँ बदलती,
मानवता के मुख पर, मासूमियत मचलती।
इन्हीं तारों ने देखा, धरा जब बनी थी,
पशु जब मनुज की देह में ढली थी।
पर अब खो गया है कुछ बहुत अनमोल,
इंसान से इंसानियत गई है कहीं डोल।
हैवान बना है मानव, जब रक्त चखा है,
धरती ने कांपा है, जब प्रेम सजा है।
कब रुकेगा ये अंतहीन रक्तपात?
कब फिरेगा मानवता की ओर ये बात?
क्या कभी वो क्षितिज आएगा सामने,
जहाँ सभी तारे झुकेंगे समानता के नाम पे?
जहाँ गगन तले हो हर उड़ान बेखौफ,
ना हो कोई जंजीर, ना कोई खौफ।
हर स्वप्न जो आँखों में पलता है चुपचाप,
धरा पे उसका भी एक दिन होगा आभास।
जब नन्ही मुन्नी की आत्मा मुस्कराएगी,
तब ही सही मायनों में सुबह आएगी।

संपर्कः
रश्मि किरण
राँची, झारखंड, पिन 8340011
मो. 9599173998

बाल कविता

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के

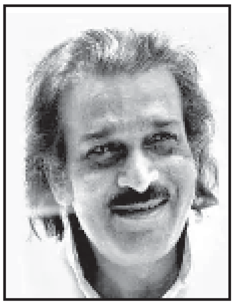

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,

दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,

आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,

'बरस बाद सुधि लीन्हीं'-
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,

हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी,
'क्षमा करा गाँठ खुल गई अब भरम की',

बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

मैं सबसे छोटी होऊँ

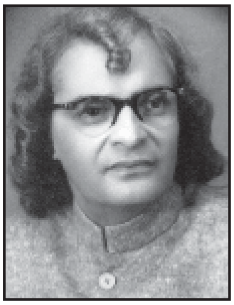

सुमित्रा नंदन पंत

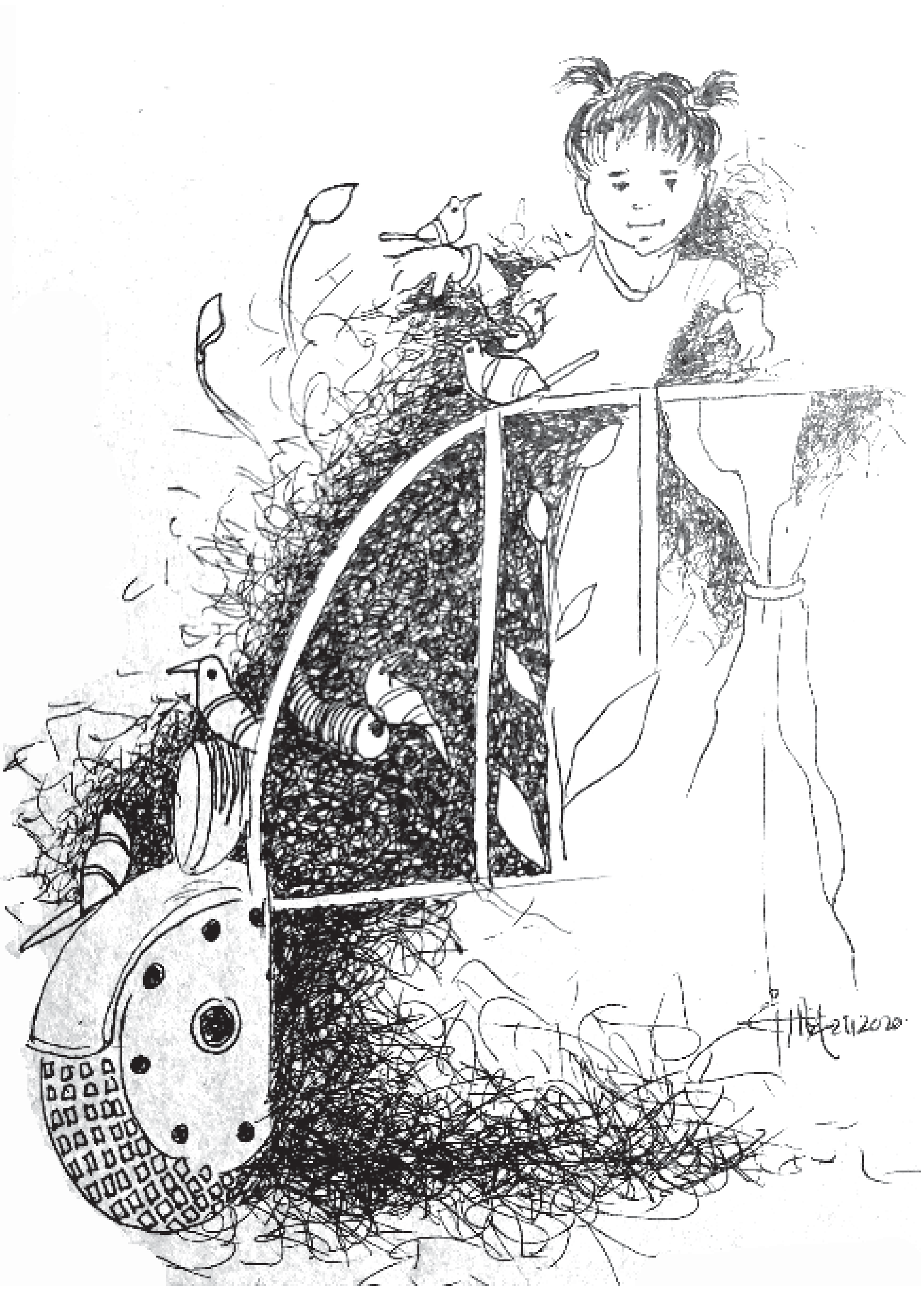

मैं सबसे छोटी होऊँ,
तेरा अंचल पकड़-पकड़कर

फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ!

बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!

हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात!

अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,

थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!

ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,

तेरे अंचल की छाया में
छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,

कहूँ-दिखा दे चंद्रोदय!

बाल कहानी

पंचतंत्र की कहानी

एक धोबी का गधा था। गधे का नाम था--उद्धत। वह दिन भर कपडों के गट्ठर इधर से उधर ढोने में लगा रहता। धोबी स्वयं कंजूस और निर्दयी था। अपने गधे के लिए चारे का प्रबंध नहीं करता था। बस रात को चरने के लिए खुला छोड देता। निकट में काई चरागाह भी नहीं थी। शरीर से गधा बहुत दुर्बल हो गया था।

एक रात उस गधे की मुलाकात एक गीदड़ से हुई। गीदड़ ने उससे पूछा 'कहिए महाशय, आप इतने कमज़ोर क्यों हैं?'

गधे ने दुखी स्वर में बताया कि कैसे उसे दिन भर काम करना पडता है। खाने को कुछ नहीं दिया जाता। रात को अंधेरे में इधर-उधर मुंह मारना पडता है।

गीदड़ बोला 'तो समझो अब आपकी भुखमरी के दिन गए। यहां पास में ही एक बडा सब्जियों का बाग़ है। वहां तरह-तरह की सब्जियां उगी हुई हैं। खीरे, ककडियां, तोरई, गाजर, मूली, शलजम और बैंगनों की बहार है। मैंने बाग़ तोडकर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहां से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूं और सेहत बना रहा हूं। तुम भी मेरे साथ आया करो।' लार टपकाता गधा गीदड़ के साथ हो गया।

बाग़ में घुसकर गधे ने महीनों के बाद पहली बार भरपेट खाना खाया। दोनों रात भर बाग़ में ही रहे और पौ फटने से पहले गीदड़ जंगल की ओर चला गया और गधा अपने धोबी के पास आ गया।

उसके बाद वे रोज रात को एक जगह मिलते। बाग़ में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भुखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत अच्छी तरह हरी हो गई। वह झूमने लगा और अपना मुंह ऊपर उठाकर कान फड़फड़ाने लगा। गीदड़ ने चिंतित होकर पूछा 'मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?'

गीदड़ बोला 'तो समझो अब आपकी भुखमरी के दिन गए। यहां पास में ही एक बडा सब्जियों का बाग़ है। वहां तरह-तरह की सब्जियां उगी हुई हैं। खीरे, ककडियां, तोरई, गाजर, मूली, शलजम और बैंगनों की बहार है। मैंने बाग़ तोडकर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहां से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूं और सेहत बना रहा हूं। तुम भी मेरे साथ आया करो।' लार टपकाता गधा गीदड़ के साथ हो गया।

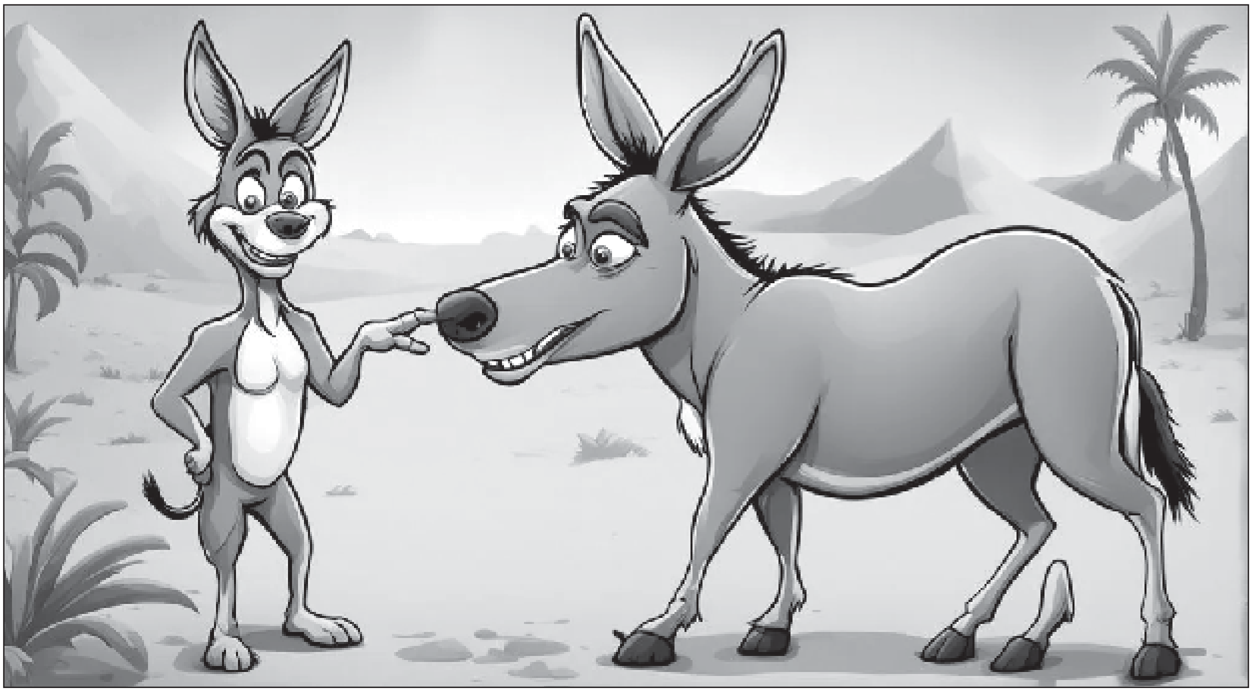

गधा आंखें बंद करके मस्त स्वर में बोला 'मेरा दिल गाने का कर रहा हैं। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूं कि ढैंचू राग गाऊं।'

गीदड़ ने तुरंत चेतावनी दी 'न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गाने-वाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहां चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्यौता मत दो।'

गधे ने टेढी नजर से गीदड़ को देखा और बोला 'गीदड़ भाई, तुम जंगली के जंगली रहे। संगीत के बारे में तुम क्या जानो?'

गीदड़ ने हाथ जोडे 'मैं संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता। केवल अपनी जान बचाना जानता हूं। तुम अपना बेसुरा राग अलापने की ज़िद छोड़ो, उसी में हम दोनों की भलाई है।'

गधे ने गीदड़ की बात का बुरा मानकर हवा में दुलत्ती चलाई और शिकायत करने लगा 'तुमने मेरे राग को बेसुरा कहकर मेरी बेइज्जती की है। हम गधे शुद्ध शास्त्रीय लय में रेंकते हैं। वह मूर्खों की समझ में नहीं आ सकता।'

गीदड़ बोला 'गधे भाई, मैं मूर्ख जंगली सही, पर एक मित्र के नाते मेरी सलाह मानो। अपना मुंह मत खोलो। बाग़ के चौकीदार जाग जाएंगे।'

गधा हंसा 'अरे मूर्ख गीदड़! मेरा राग सुनकर बाग़ के चौकीदार तो क्या, बाग़ का मालिक भी फूलों का हार लेकर आएगा और मेरे गले में डालेगा।'

गीदड़ ने चतुराई से काम लिया और हाथ जोडकर बोला 'गधे भाई, मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो गया हैं। तुम महान गायक हो। मैं मूर्ख गीदड़ भी तुम्हारे गले में डालने के लिए फूलों की माला लाना चाहता हूं। मेरे जाने के दस मिनट बाद ही तुम गाना शुरू करना ताकि मैं गायन समाप्त होने तक फूल मालाएं लेकर लौट सकूं।'

गधे ने गर्व से सहमति में सिर हिलाया। गीदड़ वहां से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकना शुरू किया। उसके रेंकने की आवाज़ सुनते ही बाग़ के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लट्ठ लेकर दौडे, जिधर से रेंकने की आवाज़ आ रही थी। वहां पहुंचते ही गधे को देखकर चौकीदार बोला ह्यही है वह दुष्ट गधा, जो हमारा बाग़ चर रहा था।'

बस सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पड़े। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा गिर पडा।

(सीखः अपने शुभचिन्तकों और हितैषियों की नेक सलाह न मानने का परिणाम बुरा होता है।)

बाल कहानी

गुल्लू की पहली गो-कार्टिंग

रोचिका अरुण शर्मा

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में गुल्लू अपनी मौसी के घर चेन्नई गया। उसकी मौसी का घर चेन्नई से पांडिचेरी जाने वाली मुख्य सड़क पर बने एक अपार्टमेन्ट में था।

इस मार्ग पर चेन्नई से पांडिचेरी जाते समय बाईं तरफ समुद्र अत्यंत खूबसूरत दिखाई पड़ता है। दिन में सूर्य की किरणें जब समुद्र के पानी पर पड़ती हैं तो पानी आसमानी-चमकीला सा प्रतीत होता है। शाम के समय जब सूरज ढलने लगता है तो कोवलम बीच पर किनारे पर आती उछलती लहरें सफेद झक्क एवं पानी हल्का हरा-नीला सा प्रतीत होता है। देखने में यह दृश्य अत्यंत रमणीय प्रतीत होता है। इसीलिए इस सड़क के किनारे बहुत से रिजोर्ट, रेस्टौरेंट एवं मनोरंजन स्थल बन गए हैं। इसी मार्ग पर ओल्ड महाबलीपुरम भी है। बाहर से आये सैलानी इस ऐतिहासिक स्थल को देखने जरूर जाते हैं।

पूरे दिन तो यहाँ उमस भरी गर्मी पड़ती है। गर्मी में पसीने से शरीर चिपचिपा सा हो जाता है। लेकिन शाम के समय खुले समंदर के कारण हवा की गति तेज होती है क्योंकि बीच में कोई अवरोध जैसे कोई इमारत, पेड़-पौधे आदि नहीं होते। ऐसे में यहाँ आस-पास रहने वाले लोग एवं सैलानी बीच पर समंदर का आनंद लेने आ जाते हैं।

वहाँ पास में ही एक स्थान पर गो-कार्टिंग भी होती है।

"गुल्लू क्या तुम गो-कार्टिंग के लिए जाना चाहोगे?" मौसी के बेटे मुक्कू ने चहक कर पूछा।

"गो-कार्टिंग, यह क्या होता है?"

"चल कर देखना क्या होता है, मजा आयेगा खूब"

"लेकिन मुक्कू तुम पहले मुझे बताओ तो सही कि यह होता क्या है, तभी तो मैं चलने के बारे में सोचूँगा"

यह एक चार पहियों वाली खुली गाड़ी होती है, जिसे कार्ट कहते हैं। ऊपर बैठने के लिए एक सीट होती है। यह छोटी खुली मोटर रेसिंग कार

इस मार्ग पर चेन्नई से पांडिचेरी जाते समय बाईं तरफ समुद्र अत्यंत खूबसूरत दिखाई पड़ता है। दिन में सूर्य की किरणें जब समुद्र के पानी पर पड़ती हैं तो पानी आसमानी-चमकीला सा प्रतीत होता है। शाम के समय जब सूरज ढलने लगता है तो कोवलम बीच पर किनारे पर आती उछलती लहरें सफेद झक्क एवं पानी हल्का हरा-नीला सा प्रतीत होता है। देखने में यह दृश्य अत्यंत रमणीय प्रतीत होता है।

जैसी होती है। इसे चलाने के लिए खुले में एक ट्रैक बना होता है। यहाँ पर जो ट्रैक है वह कहीं तो समतल है और कहीं उतार-चढ़ाव वाला है।

मुक्कू आँखें मटका-मटका कर बता रहा था और गुल्लू गर्दन हिला-हिला कर सुन रहा था।

लेकिन उतार-चढ़ाव वाले ट्रैक पर हम गिर तो नहीं जायेंगे? डर तो नहीं लगेगा?

गुल्लू ने प्रश्न किया।

"नहीं डरने की कोई बात नहीं बल्कि खूब मजा आयेगा" मुक्कू ने भौंहें चढ़ा कर मुस्कुराते हुए आँखें मटकाईं। शाम को वे दोनों गुल्लू की मौसी के साथ गो-कार्टिंग के लिए पहुँच गए। मौसी जल्दी से कतार में लगी और उन्होंने टिकट-खिड़की से टिकटें ले ली।

गुल्लू और मुक्कू गो-कार्टिंग की कतार में पहले से ही खड़े हो गए थे। ताकि जैसे ही टिकटें मिलें उन्हें जल्दी से गो कार्टिंग करने का अवसर मिल जाए।

मुक्कू ट्रैक पर इतने सारे टायर एक के ऊपर एक क्यों रखे हैं?

वह इसलिए कि यदि कोई चालक कार्ट से नियंत्रण खो दे तो इन टायरों से टकरा कर थम जाए और उसे चोट भी न लगे।

तभी गुल्लू ने देखा कि जो लोग गो-कार्टिंग ट्रैक पर रवाना हुए उनमें से एक उन टायरों से जा कर टकराया। उसने स्टीयरिंग व्हील से कार्ट घुमाई और फिर आगे बढ़ गया। सभी कार्ट आगे निकलने की होड़ में कभी आगे होती तो कभी पीछे रह जाती। पहले गो-कार्टिंग के लिए गए लोगों ने रेस समाप्त की तो कार्ट खाली हुई। तो वे दोनों झटपट कार्ट में जा कर बैठ गए। गुल्लू ने पीछे मुड़कर मुक्कू को देखा और दोनों ने एक-दूसरे को थम्स-अप किया।

कार्ट के हैंडल से रेस बढाने के लिए ऊपर-नीचे घुमाना होगा और रोकने के लिए पैर से ब्रेक लगाना होगा। वहाँ के कर्मचारी ने उन्हें जानकारी दी। इसके बाद कर्मचारी ने इंजन स्टार्ट कर दिया।

मुक्कू और गुल्लू ने हैंडल संभाल कर रेस बढाई। कार्ट जूऊऊम करके आगे बढी। मुक्कू ने तो कार्ट पहले भी कई बार चलाई थी। लेकिन गुल्लू तो आज पहली बार ऐसी कार्ट चला रहा था। इसलिए वह अत्यंत उत्साहित था और कार्ट की गति का अनुभव लेने के लिए बार-बार रेस बढाता फिर पैर से ब्रेक लगाता।

जब कार्ट घुमावदार रास्ते पर जूऊऊऊऊम करके तेजी से घूमी तो उसके पेट में गुदगुदी सी हुई। उसे स्वतः ही जोर-जोर से हँसी आने लगी। उसके बाद चढाई वाला रास्ता आ गया और कार्ट की गति कम हो गयी। उसने रेस बढाई तो कार्ट घर्र-घर्र की आवाज के साथ ऊपर चढने लगी।

जैसे ही कार्ट ऊपर जा कर समतल मार्ग पर पहुँची, उसकी गति बढ़ गयी। गुल्लू को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह नियंत्रण खो देगा। उसने रेस कम कर कार्ट की गति कम कर दी।

थोड़ी दूरी पर ढलान आ गयी। अब कार्ट की गति बढ़ने लगी थी इसलिए कार्ट चलाते समय वह बीच-बीच में ब्रेक लगाता रहा। वह धीरे-धीरे ढलान से नीचे उतर कर पुनः समतल पर आ गया।

थोड़ी ही दूरी पर वहाँ के कर्मचारी खड़े थे। उनके पास जा कर उसने ब्रेक लगाया और कार्ट रोक दी।

उसका मन तो नहीं भरा था, जी चाहता था कि एक बार और गो-कार्टिंग करे लेकिन

अन्य लोग कार्ट में बैठने के लिए कतार में खड़े थे। इसलिए उसे कार्ट से उतरना पड़ा।

गुल्लू कैसा लगा "गो-कार्टिंग?"

"मजा आ गया मुक्कू, बिलकुल नया अनुभव है मेरे लिए" "मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे मैं अब अपने पिताजी की कार भी चला ही लूँगा"

"हम्म, तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ गया है" मौसी ने स्नेहपूर्वक उसके दोनों गाल खींचे।

थोड़ी ही देर में वे खिलखिलाते हुए घर लौट आये थे।

संपर्क:

मो.9597172444

फोटो में गांधी

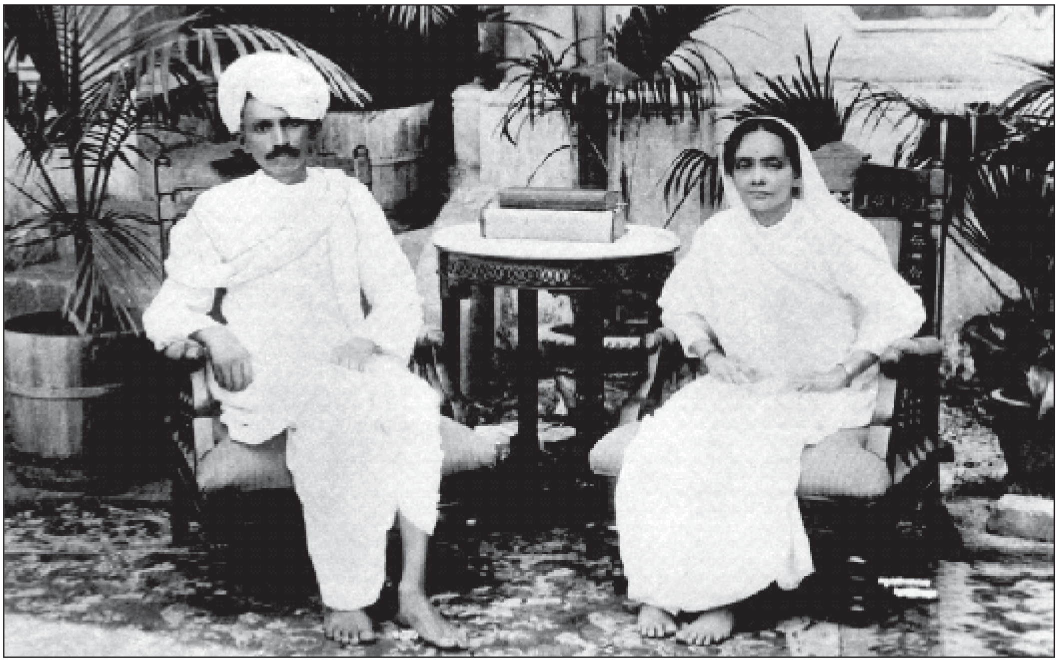

गांधीजी कस्तूरबा के साथ

ट्रांसवाल इंडियन फुटबाल टीम के सदस्यों के साथ गांधी

भरोसा

–हरीशचंद्र पांडे

आज भी मधुर को घबराहट हो रही थी। मधुर पाँचवी कक्षा में पढ़ता है। आज उसका क्लास टेस्ट है। मधुर की पूरी कक्षा को इस टेस्ट की जानकारी दस दिन पहले दे दी गई थी। सारी कक्षा तैयारी में जुटी हुई थी। मगर मधुर हमेशा की तरह क्लास पर टालता जा रहा था। हर बार उसके साथ यही बात होती आई है। कितनी दफा उससे मां ने भी कहा है कि मधुर यह मौज मस्ती फिर कर लेना। जरा अपना सबक तो याद करो। मगर मधुर को कोई लेना देना नहीं है। उसकी बला से।क्लास के सहपाठी भी उसे टोकते थे कि मधुर तुम टेस्ट की तैयारी पर ध्यान दे रहे हो कि नहीं। मगर मधुर हमेशा यही करता। कभी–कभार तो तुक्का लगाकर विकल्प वाले प्रश्न हल कर आता था। मगर अब वह पाँचवी में था।अब उसको गंभीर होना चाहिए था। मगर नहीं। मधुर को अब अपने किये पर पछताना पड़ रहा था।

कक्षा में आकर वह अपना गमगीन चेहरा लेकर उदास बैठ गया। उसे एक सबक तक याद नहीं था। उसके हाथों में पसीना आ रहा था। गला बार–बार सूख रहा था। पैर बुरी तरह कंपकंपा रहे थे। इतना ही नहीं वह खुद भी कुछ बोलते हुए कंपकंपा रहा था।

टीचर ने क्लास में आते ही सबको तैयार रहने को कहा। सब तैयार थे। प्रश्न दिये।

मधुर की आखों में आंसू थे।

टीचर ने देखा कि सभी प्रश्न हल कर रहे हैं। मधुर सर झुकाकर उदास बैठा है।

टीचर ने उसे बुलाया। मधुर अपनी सीट से उठकर गया। वह अभी तक कांप रहा था। उसका बदन पसीने से लथपथ था। टीचर ने उसे एक पेज सुलेख लिखने को कहा। मधुर फिर से सीट पर चला गया। वह सुलेख लिखने की कोशिश करने लगा। मगर उसके हाथ कांप रहे थे। टीचर समझ गई कि मधुर बहुत ही नर्वस हो रहा है। टीचर ने उसको न तो फटकार लगाई और न उसका अपमान किया।

आज भी मधुर को घबराहट हो रही थी। मधुर पाँचवी कक्षा में पढ़ता है। आज उसका क्लास टेस्ट है। मधुर की पूरी कक्षा को इस टेस्ट की जानकारी दस दिन पहले दे दी गई थी। सारी कक्षा तैयारी में जुटी हुई थी। मगर मधुर हमेशा की तरह क्लास पर टालता जा रहा था। हर बार उसके साथ यही बात होती आई है। कितनी दफा उससे मां ने भी कहा है कि मधुर यह मौज मस्ती...।

दो दिन बाद पैरेंट्स टीचर मीट होने वाली थी। मधुर अपने माता–पिता के साथ आया था। वह बहुत ही डरा हुआ था। उसने न तो टैस्ट दिया था। न उसने सुलेख लिखा था। वह जानता था कि आज जमकर फटकार लगने वाली है।

टीचर ने माता–पिता को अपने पास बिठाया। मधुर की खूब तारीफ की। उसकी मददगार आदत। उसका विद्यालय के आँगन में पौधों को जल पिलाना। छोटी कक्षा के बच्चों की खेल मैदान में सहायता करना आदि आदि।

अपनी इतनी तारीफ सुनकर मधुर चौंक ही गया। उसने तो इसकी उम्मीद तक न की थी। उसके चेहरे का रंग ही बदल गया था। अब टीचर ने हंसकर कहा कि अगर मधुर हर दिन केवल एक बार सबक को दोहरा लिया करे। तो मधुर बहुत होशियार हो सकता है। मुझे इस पर गर्व है।

मधुर के कानों में यही शब्द बार–बार गूंजने लगे। सब एक बार सबक दोहरा लो। मधुर ने घर आते ही बस्ता निकाला।

हर विषय का सबक दोहराने लगा। उसे अब खुद भी बेहद अच्छा लग रहा था। सबक दोहराते हुए वह कठिन शब्द एक कापी में लिखने भी लगा।

अब मधुर कक्षा में भी मन लगाकर पढ़ाई करने लगा। आज का सबक कल पर टालने की आदत धीरे –धीरे छूट रही थी। मधुर अब हाथ खडाकर जवाब भी देने लगा। मधुर का बदलाव टीचर ने भी गौर से देखा। अब मधुर को खुद पर भरोसा होने लगा था। अब हर दिन मधुर एक जागरूक छात्र बनता जा रहा था।

संपर्क

शुभम् विहार

आर के टेंट रोड, कुसुमखेड़ा

हल्द्वानी उत्तराखंड

गांधीजी के बंदर तीन

-बाल स्वरूप राही

गांधी जी के बन्दर तीन,
सीख हमें देते अनमोल।
बुरा दिखे तो दो मत ध्यान,
बुरी बात पर दो मत कान,
कभी न बोलो कड़वे बोल।
याद रखोगे यदि यह बात,
कभी नहीं खाओगे मात,
कभी न होगे डांवाडोल।
गांधी जी के बन्दर तीन,
सीख हमें देते अनमोल।

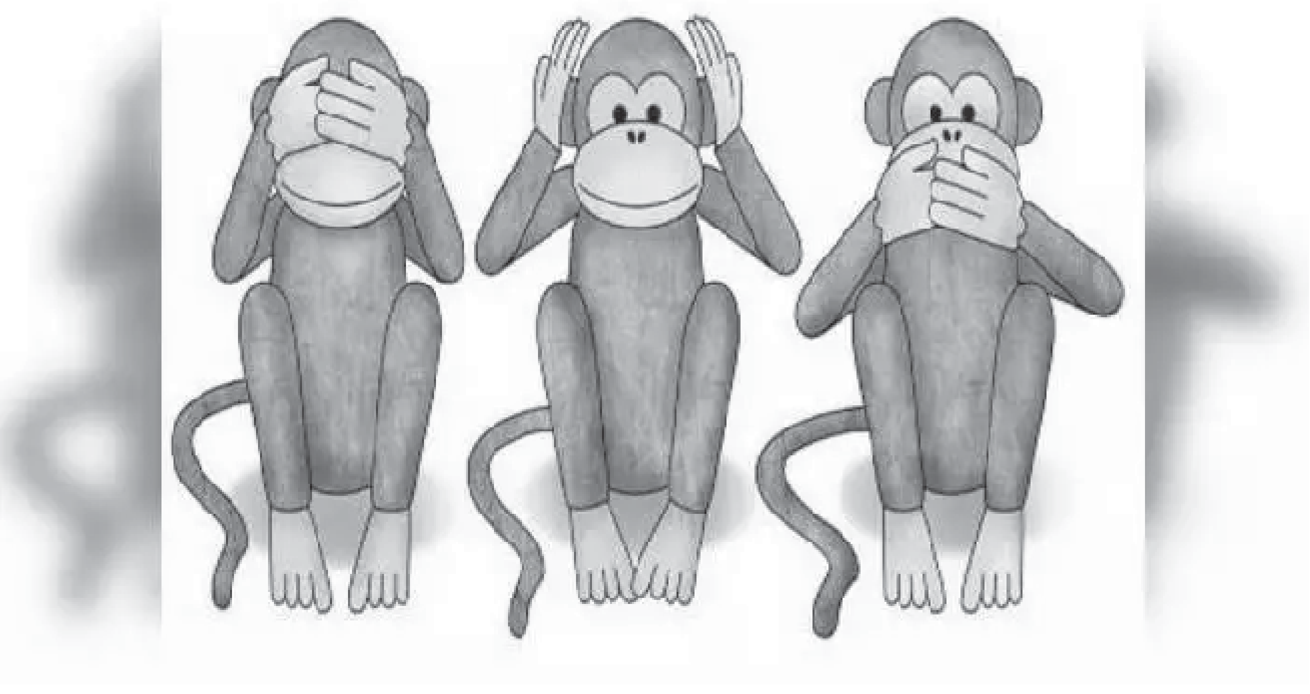

पुष्प की अभिलाषा

– माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी–माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक

गांधी क्विज-12

प्रश्न 1. महात्मा गांधी को 'महात्मा' की उपाधि किसने दी?

उत्तर:- क. जवाहरलाल नेहरू

ख. सुभाष चंद्र बोस

ग. रवींद्रनाथ टेगोर

घ. बाल गंगाधर तिलक

प्रश्न 2. महात्मा गांधी ने 1942 में कौन सा आंदोलन शुरू किया था?

उत्तर:- क. सविनय अवज्ञा आंदोलन

ख. भारत छोड़ो आंदोलन

ग. असहयोग आंदोलन

घ. नमक सत्याग्रह

प्रश्न 3. महात्मा गांधी ने कानून की पढ़ाई कहां से की थी?

उत्तर:- क. हार्वर्ड विश्वविद्यालय

ख. इनर टेम्पल, लंदन

ग. मुंबई विश्वविद्यालय

घ. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

प्रश्न 4. महात्मा गांधी ने कौन सी पुस्तक लिखी थी?

उत्तर:- क. भारत की खोज

ख. रानी लक्ष्मीबाई

ग. हिंद स्वराज

घ. दुखी भारत

प्रश्न 5. महात्मा गांधी ने 1930 में किस प्रसिद्ध मार्च का नेतृत्व किया था?

उत्तर:- क. दांडी मार्च

ख. भारत छोड़ो मार्च

ग. चंपारण सत्याग्रह

घ. खेड़ा सत्याग्रह

प्रश्न:6 महात्मा गांधी ने भारत में अपना पहला आंदोलन कहां शुरू किया था?

उत्तर:- क. चंपारण

ख. दांडी

ग. राजकोट

घ. पोरबंदर

प्रश्न 7. महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहने वाले पहले व्यक्ति कौन थे?

उत्तर:- क. मदन मोहन मालवीय

ख. राजा राम मोहन राय

ग. सुभाष चंद्र बोस

घ. रवीन्द्रनाथ टेगोर

प्रश्न 8. 'गांधी', फिल्म में महात्मा गांधी की भूमिका किसने निभाई थी?

उत्तर:- क. रॉबर्ट डी निरो

ख. अक्षय खन्ना

ग. अनुपम खेर

घ. बेन किंग्सले

प्रश्न 9. दांडी यात्रा में कितने लोग शामिल थे?

उत्तर:- क. 78

ख. 79

ग. 80

घ. 81

प्रश्न 10. गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से सदैव के लिए भारत कब आए?

उत्तर:- क. 1915

ख. 1916

ग. 1917

घ. 1920

नोट: आप गांधी क्विज के उत्तर antimjangsds@gmail.com पर भेज सकते हैं। प्रथम विजेता को उपहार स्वरूप गांधी साहित्य दिया जायेगा।

गतिविधियाँ

कार्यक्रमों को लेकर शिक्षकों से चर्चा

गांधी दर्शन, राजघाट में 22 अप्रैल, 2025 को 'टेकिंग गांधी टू स्कूल' कार्यक्रम के तहत शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली और एनसीआर के 64 से अधिक स्कूलों के शिक्षकों ने भाग लिया। सम्मेलन में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित हुए। इस अवसर पर, समिति निदेशक श्रीमती पल्लवी पी होलकर ने भी शिक्षकों के साथ बातचीत की। श्री गोयल ने समिति के आगामी कार्यक्रमों जैसे कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं पर चर्चा की। उन्होंने इन कार्यक्रमों से जुड़ने का स्कूलों से आग्रह किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त किए और अपने सुझाव दिए। इस अवसर पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की कार्यक्रम समिति सदस्य डॉ रुबीना मित्तल, प्रशासनिक अधिकारी श्री संजीत कुमार, कार्यक्रम अधिकारी डॉ वेदाभ्यास कुंडु, शोध अधिकारी डॉ सौरव राय ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

समिति ने मनाया स्वच्छता अभियान 3.0

भारत सरकार द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान 3.0 में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

'स्वच्छता पखवाड़ा' के अंतर्गत गांधी स्मृति और गांधी दर्शन में स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान में समिति के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने-अपने कार्यस्थलों की सफाई कर स्वच्छता के संकल्प को मजबूत किया।

स्वच्छता 3.0 अभियान के अंतर्गत 30 अप्रैल, 2025 को गांधी दर्शन, राजघाट में समिति के प्रशासनिक अधिकारी श्री संजीत कुमार ने सभी स्टाफ सदस्यों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर सभी ने यह संकल्प लिया कि वे अपने कार्यालय, घर तथा आसपास के परिवेश को स्वच्छ रखने में सक्रिय रूप से भाग लेंगे।

राजकीय बुनियादी विद्यालय, वृन्दावन, और राजकीय बुनियादी विद्यालय, सिरिसिया अड्डा, चनपटिया, पश्चिम चम्पारण, बिहार में स्वच्छता 3.0 अभियान के अंतर्गत नई दिल्ली स्थित गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के तत्वाधान मे विद्यालय के बच्चों और शिक्षकों ने ली स्वच्छता शपथ ली। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराया।

अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने किए 'गांधी दर्शन'

जापान की संसद के स्पीकर श्री फुकुशिरो नुकागा ने 3 मई, 2025 को गांधी स्मृति का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने महात्मा गांधी के कमरे का दौरा किया और शहीद स्तंभ पर प्रार्थना भी की। इस अवसर पर जापान के भारत में राजदूत माननीय श्री केइची ओनो भी उनके साथ थे। उन्होंने इस अवसर पर गांधी स्मृति संग्रहालय में स्कूली बच्चों से भी मुलाकात की।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल ने 2 मई, 2025 को गांधी स्मृति में जर्मन संघीय विदेश कार्यालय के एशिया एवं प्रशांत महानिदेशक श्री फ्रैंक हार्टमैन के आगमन पर उन्हें गांधी चरखा भेंट कर स्वागत किया। उन्होंने इस अवसर पर भारत/भूटान प्रभाग के प्रमुख डॉ. स्टीफन कोच का भी स्वागत किया। प्रतिनिधिमंडल ने शहीद स्तंभ पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा महात्मा गांधी कक्ष का भी दौरा किया। जर्मनी संघीय गणराज्य के दूतावास के प्रथम सचिव श्री पीटर स्टेंटजलर भी उनके साथ थे।

“समृद्ध हैं हमारे उपनिषद”

तीस जनवरी मार्ग स्थित गांधी स्मृति में आज ‘वेदान्त’ पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं प्रख्यात विचारक डॉ. करण सिंह ने व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री विजय गोयल ने की। इस अवसर पर गांधीजी की आत्मकथा ‘सत्य के प्रयोग’ के नए संस्करण का विमोचन भी किया गया।

डॉ. करण सिंह ने कहा कि भारत के उपनिषद व वेद काफी समृद्ध हैं और इनमें जीवन का असली रहस्य छिपा है। हमारे वेद, पुराण और शास्त्र व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाता है। श्रीमद्‌भागवत गीता सर्वश्रेष्ठ उपनिषदों में से एक है।

उन्होंने कहा कि आज पूरे संसार में युद्ध का माहौल है, ऐसे में गांधीजी की शिक्षाओं को अपनाकर विश्व में शांति कायम की जा सकती है।

उन्होंने अपने व्याख्यान में वेदान्त के सूत्रों की व्याख्या करते हुए कहा हमारे ऋषि मुनियों ने वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा दी थी, जिसका अर्थ है पूरा संसार एक परिवार है। समाज के कल्याण के लिए इस मंत्र को अपनाना आवश्यक है। उन्होंने देश में चल रहे स्वच्छ भारत अभियान के लिए प्रधानमंत्री की सराहना की।

अपने सम्बोधन में श्री विजय गोयल ने कहा कि आज के तनावपूर्ण जीवन में वेदान्त हमें सच्चा मार्ग दिखाता है। यह हमारे जीवन को शांति और आनंद प्रदान करता है। इसलिए वेदान्त केवल प्राचीन विचार नहीं, बल्कि आज के युग में भी उतना ही उपयोगी और आवश्यक है।

गोयल ने कहा कि गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने गांधीजी की आत्मकथा को नए कलेवर में प्रकाशित किया है। युवा पीढ़ी गांधीजी में रुचि ले, इसलिए इसमें दुर्लभ चित्र भी शामिल किए गए हैं। उम्मीद है कि लोग इस पुस्तक के माध्यम से गांधीजी के गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। समिति के प्रशासनिक अधिकारी संजीत कुमार ने अतिथियों का आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम में पूर्व सांसद के सी त्यागी, विजय जौली, राजकुमार शर्मा, सहित काफी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

'अंतिम जन' मासिक पत्रिका

(सदस्यता प्रपत्र)

मैं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा प्रकाशित अंतिम जन मासिक पत्रिका, (हिन्दी) का/की ग्राहक ....वर्ष/वर्षों के लिये बनना चाहता/चाहती हूँ।

	वर्ष	रुपये		वर्ष	रुपये
[ ]	एक प्रति शुल्क	20/-	[ ]	दो वर्ष का शुल्क	400/-
[ ]	वार्षिक शुल्क	200/-	[ ]	तीन वर्ष का शुल्क	500/-

.... बैंक चेक संख्या/डिमान्ड ड्राफ्ट संख्या ....

दिनांक .... राशि .... **Director, Gandhi Smriti & Darshan Samiti, New Delhi** में देय, संलग्न है।

ग्राहक का नाम (स्पष्ट अक्षरों में): ....

व्यवसाय : ....

संस्थान : ....

पता : ....

....

पिन कोड : .... राज्य : ....

दूरभाष (कार्यालय) .... निवास .... मोबाईल..............................

ई मेल : ....

हस्ताक्षर ....

कृपया इस प्रोफॉर्मा को भरकर (शुल्क) राशि (चेक/ड्राफ्ट) सहित निम्नलिखित पते पर भेजें :

प्रधान संपादक

'अंतिम जन' मासिक पत्रिका

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली - 110002

आप हमसे संपर्क कर सकते हैं :- दूरभाष : 011-23392796

ई मेल : **antimjangsds@gmail.com, 2010gsds@gmail.com**

अगर आप 'अंतिम जन' पत्रिका के नियमित पाठक बनना चाहते हैं तो अकाउंट में पेमेंट कर भुगतान की प्रति या स्क्रीनशॉट और अपना पत्राचार का साफ अक्षरों में पता, पिनकोड, मोबाईल नंबर, ईमेल आईडी सहित भेजें।

Name – Gandhi Smriti & Darshan Samiti
A/c No. - 90432010114219
IFSC Code- CNRB0019043
Bank – Canara Bank
Branch – Khan Market, New Delhi-110003

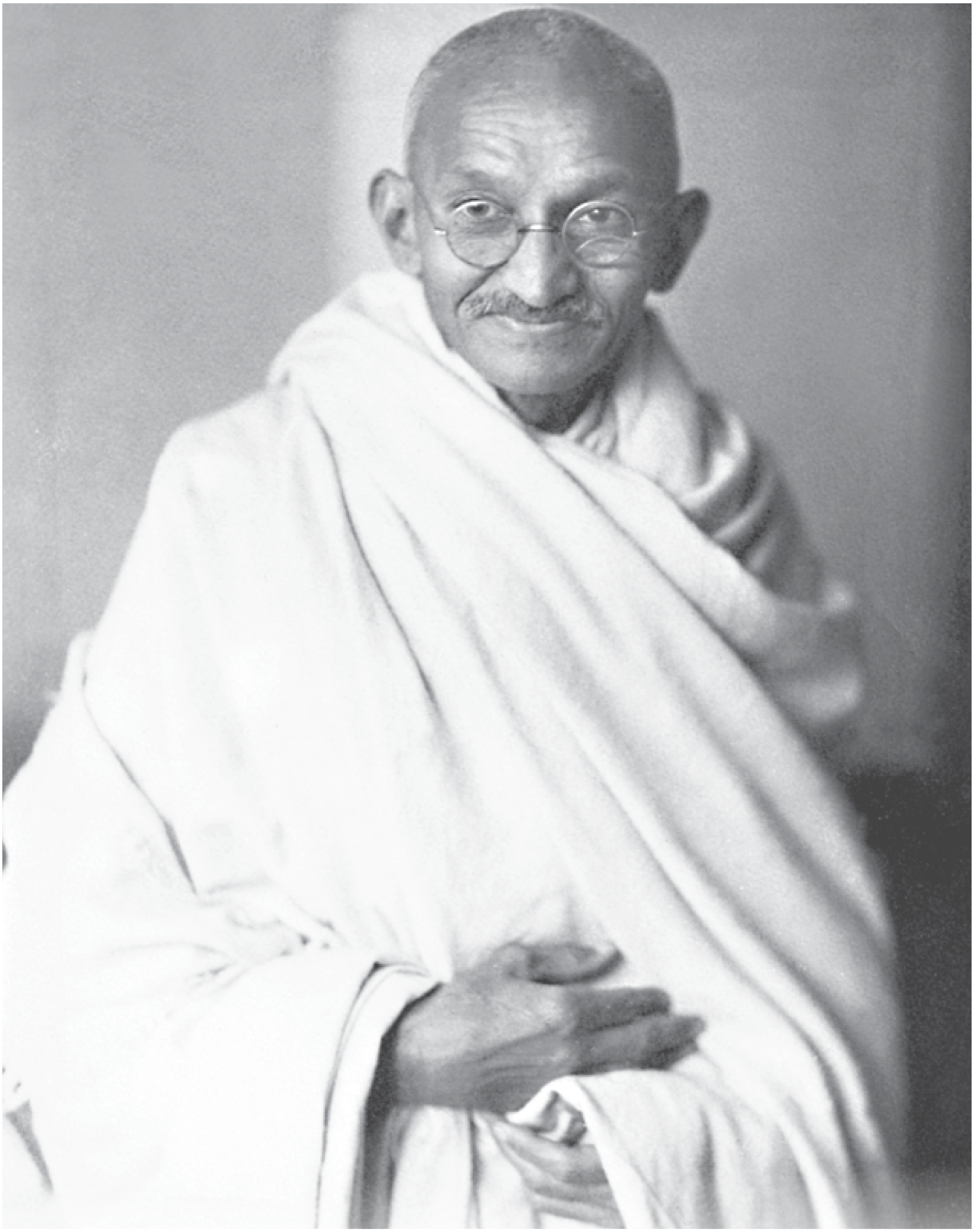

मैं उस रोशनी के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ जो हमारे चारों और व्याप्त अंधकार को मिटा दे। जिन्हें अहिंसा की जीवन्तता में आस्था है वे आएं और मेरे साथ इस प्रार्थना में शामिल हो।

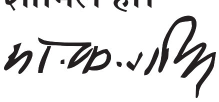

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

हमारे आकर्षण

गांधी स्मृति म्यूजियम (तीस जनवरी मार्ग)

* गांधी स्मृति म्यूजियम
* डॉल म्यूजियम
* शहीद स्तंभ
* मल्टीमीडिया प्रदर्शनी
* महात्मा गांधी के पदचिन्ह
* महात्मा गांधी का कक्ष
* महात्मा गांधी की प्रतिमा
* वर्ल्ड पीस गोंग
* डिजिटल सिग्नेचर (रोबोटिक)

गांधी दर्शन (राजघाट)

* गांधी दर्शन म्यूजियम
* क्ले मॉडल प्रदर्शनी
* गांधीजी को समर्पित रेल कोच प्रदर्शनी
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री (200 लोगों के लिये)
* सेमीनार हॉल (150 लोगों के लिये)
* कॉन्फ्रेंस हॉल (300 लोगों के लिये)
* प्रशिक्षण हॉलः (80 लोगों के लिये)
* ओपन थियेटर
* राष्ट्रीय स्वच्छता केन्द्र
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री
* गांधी दर्शन आर्ट गैलरी

प्रवेश निःशुल्क (प्रातः 10 बजे से सायंः 6.30 बजे तक), सोमवार अवकाश

हॉल, कमरों एवं आर्ट गैलरी की बुकिंग के लिये संपर्क करें– ईमेलः 2010gsds@gmail.com, 011-23392796

gsdsnewdelhi www.gandhismriti.gov.in

RNI NO. DELHIN/2018/76242

''आप मुझे जो सजा देना चाहते हैं, उसे कम कराने की भावना से मैं यह बयान नहीं दे रहा हूँ। मुझे तो यही जता देना है कि आज्ञा का अनादर करने में मेरा उद्देश्य कानून द्वारा स्थापित सरकार का अपमान करना नहीं है, बल्कि मेरा हृदय जिस अधिक बड़े कानून से-अर्थात अन्तरात्मा की आवाज को स्वीकार करता है, उसका अनुसरण करना ही मेरा उद्देश्य है।''

(मोहनदास करमचंद गांधी)

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली
(एक स्वायत्त निकाय, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रकाशक - मुद्रक : स्वामी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लिए पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092 से मुद्रित तथा गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110092 से प्रकाशित।